अनुपलब्धि निरूपण

40 पत्र

ले. प्रभाकर

विषय दर्शन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतियोगिसें विरोधस्पष्टहै जैसें प्रागभावादिकनका प्रतियोगिसें विरोधहै तैसें अत्यंताभावकाबी प्रतियोगिसें विरोधकह्याचाहिये यद्यपि
सकलअभावनका प्रतियोगिसें विरोधहोवे तौजिसकालमेंभूतलमें घटध्वस्थाहोवै तिसकालमें घटका अन्योन्याभाव भूतलमें नहीं हुयाचा 1489
हिये औघटवालेभूतलमें घटका अन्योन्याभावरहेहै काहेतें भेदकूं अन्योन्याभावकहैहैं जाकूं अपनेसें अतिरिक्तताकहैहै भिन्नताकहै
है जुदापनाकहैहै घटवालाभूतलबी घटस्वरूपनहीं किंतु घटसें अतिरिक्तकहियेहै घटसें भिन्नकहियेहै घटसेंजुदाकहियेहै इसरीतिसें घटवा
लेभूतलमें घट का अन्योन्याभावहै यातें घटके अन्योन्याभावका घटरूपप्रतियोगिसें विरोधनहीं तैसें पटादिकनके अन्योन्याभावका पटा
दिकनसें विरोधनहीं यातें सकलअभावनका प्रतियोगीसें विरोधकहनासंभवैनहीं किंतु किसीअभावका प्रतियोगिसें विरोधहै किसीकावि
रोधनहींहै प्रागभावादिकदृष्टांतसें अत्यंताभावका प्रतियोगिसें विरोधसाधेंतव अन्योन्याभावदृष्टांतसें अत्यंताभावका प्रतियोगिसें अवि
रोधबीसिद्धहोवैगा यातें घटके अन्योन्याभावकीनांई घट कात्यंताभावबी घटके अधिकरणमेंसंभवेहै तथापि घटके अधिकरणमें घट-
का अत्यंताभावसंभवैनहीं काहेतें अभावकेदोभेदहै एकअन्योन्याभावहै १ दूसरासंसर्गाभावहै २ संसर्गाभावच्यारिप्रकारकाहै इसरीति
सें पंचविधअभावहै तिनमें अभावत्वधर्मसर्वमें समानहै औनिषेधमुखप्रतीतिकी विषयताबीसर्वअभावनमें समानहै तथापि अन्योन्याभाव
सें चतुर्विधसंसर्गाभावमें विलक्षणताअनेकविधहै जिसवाक्यमें प्रतियोगिअनुयोगिबोधकभिन्नविभक्तिवालेपदहोवैं तिसवाक्यसें सं
सर्गाभावकीप्रतीतिहोवैहै जैसेंउत्पत्तिसेंपूर्वकपालेघटोनास्तिइसवाक्यमें अनुयोगिबोधककपालपदसप्तम्यंतहै औप्रतियोगिबोध
कघटपदप्रथमांतहै तहां प्रागभावकीप्रतीतिहोवैहै तैसेंमुद्गरादिकनतें घटका अदर्शनहोवै तब तिसीवाक्यतें घटध्वंसकीप्रतीतिहोवैहै
वायौरूपंनास्ति इसवाक्यतेंवायुमें रूपात्यंताभावकीप्रतीतिहोवैहै तहांबी अनुयोगिबोधकवायुपदसप्तम्यंतहै औप्रतियोगिबोधकरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पदप्रथमांतहै जैसैंभूतलेघटोनास्ति इसवाक्यजन्यप्रतीतिकाविषयसामयिकाभावहै तहांवीअनुयोगिबोधकभूतलपदसप्तम्यंतहै प्र
तियोगिबोधकघटपदप्रथमांतहै औभूतलंनघटः इसवाक्यसेंभूतलमेंघटकाअन्योन्याभावप्रतीतहोवैहै तहांअनुयोगिबोधकभूतलपदऔ
प्रतियोगिबोधकघटपददोनूंप्रथमांतहै इसरीतिसैंभिन्नविभक्त्यंतपदघटितवाक्यजन्यप्रतीतिकीविषयतासंसर्गाभावमेंहै अन्यो
न्याभावमेंनहीं औसमानविभक्त्यंतपदघटितवाक्यजन्यप्रतीतिकीविषयताअन्योन्याभावमेंहै संसर्गाभावमेंनहीं इसरीतिसें अन्यो
न्याभावतैंविलक्षणस्वभाववालेचतुर्विधसंसर्गाभावहैं यातैंप्रागभावप्रध्वंसाभावकेदृष्टांतसैंअत्यंताभावकाप्रतियोगितैंविरोधहीसि
द्धहोवैहै विलक्षणस्वभाववालेअन्योन्याभावकेदृष्टांतसैंप्रतियोगितैंअविरोधसिद्धहोवैनहीं संसर्गाभावकी अन्योन्याभावतैंऔरबीविल
क्षणताहैं चतुर्विधसंसर्गाभावकापरस्परविरोधहै अेकसंसर्गाभावकेअधिकरणमेंअपरसंसर्गाभावरहेनहीं जैसेंकपालमेंघटकीउत्पत्ति-
सैंपूर्वघटकाप्रागभावहै तहांघटकाध्वंसवाअत्यंताभाववासामयिकाभावरहेंनहीं तैसेंकपालमैंघटकाध्वंसहोवैतवप्रागभावादिक
तीनूंसंसर्गाभावरहेंनहीं औघटकाअन्योन्याभावकपालमेंसदारहेहै तैसेंभूतलमेंघटकासामयिकाभावरहै तहांवीघटकाप्रागभा
वप्रध्वंसाभावअत्यंताभावतीनूंरहेंनहीं औघटकाअन्योन्याभावतहांवीरहेहै तैसेंवायुमेंरूपकाअत्यंताभावरहेहै तामेंरूपकाप्रागभाव
प्रध्वंसाभावसामयिकाभावतीनूंरहेंनहीं औरूपकाअन्योन्याभाववायुमेंरहेहै इसरीतिसें चतुर्विधसंसर्गाभावकापरस्परविरोधहै अन्यो
न्याभावकातिनसेंअविरोधहैं जैसेंअन्योन्याभावकाअन्यअभावनतैंअविरोधहोतैंवीप्रागभावादिकनकेपरस्परअविरोधकीसिद्धि
होवैनहीं तैसेंअन्योन्याभावकाप्रतियोगितैंअविरोधिदेषिकेंकिसीसंसर्गाभावकाप्रतियोगिसेंअविरोधसिद्धहोवैनहीं अथअ
भावनकापरस्परऔप्रतियोगिसैंविरोधाविरोधकाविस्तारसैंप्रतिपादनकरैहैं यद्यपिप्रतियोगिकेउपादानकारणमेंप्रागभावप्रध्वंसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावदोनूं रहे हैं जैसें घटके उपादानकारण कपालमें घटका प्रागभाव घटकी उत्पत्तिसें प्रथम रहे है मुद्गरादिकनतें घटकूं तोडे तब घटका प्रध्वं
साभाव तिसी कपालमें रहे है यातें प्रागभाव प्रध्वंसाभावका परस्परविरोध कहना संभवे नहीं तथापि एककालमें दोनूं रहें नहीं किंतु भिन्नका
लमें रहे हैं यातें एकदा सहानवस्थानरूप विरोध प्रागभाव प्रध्वंसाभावका परस्पर है तैसें अत्यंताभावकावी तिनसें विरोध मान्या चाहिये य
द्यपि अन्योन्याभावका किसी अभावसें विरोध नहीं है काहेतें कपालमें घटका प्रागभाव है तहां घटका अन्योन्याभाववी हैं औ जब कपालमें
घटका प्रध्वंसाभाव होवे तबवी घटका अन्योन्याभाव है औ तंतुमें घटका अत्यंताभाव है तहांवी घटका अन्योन्याभाव है भूतलमें घट
का सामयिकाभाव है तहांवी घटका अन्योन्याभाव है इसरीतिसें अन्योन्याभावका किसी अभावसें विरोध नहीं है तथापि संसर्गाभा
वका यह स्वभाव है चतुर्विध संसर्गाभावमें एक संसर्गाभाव एककालमें रहे है दूसरा रहे नहीं जैसें कपालमें उत्पत्तिसें प्रथम घटका प्रागभा
व रहे है तिसकालमें घटका प्रध्वंसाभाव रहे नहीं प्रध्वंसाभाव घटका होवे तब प्रागभाव रहे नहीं औ सामयिकाभाव अत्यंताभाव कपाल
में घटके कदेवी रहें नहीं यद्यपि कपालमें घटके प्रागभाव प्रध्वंसाभाव होवें तब पटका अत्यंताभाववी रहे है तथापि एक प्रतियोगिके
दो संसर्गाभाव रहें नहीं यह नियम है अपर प्रतियोगिका दूजा संसर्गाभाव रहनेंका विरोध नहीं तैसें भूतलादिकनमें घटका साम
यिकाभाव रहे है तहां घटका अत्यंताभाव अथवा प्रागभाव तथा ध्वंसाभाव रहें नहीं औ वायुमें रूपात्यंताभाव है तहां रूपके प्रागभावादि
क रहें नहीं यद्यपि संयोगसंबंधतें कदाचित् भूतलादिकनमें घट रहे हैं समवायसंबंधतें कपाल विना अन्य पदार्थमें घट कदेवी रहे नहीं या
तें समवायसंबंधतें घटका अत्यंताभाव भूतलादिकनमें है औ संयोगसंबंधतें घटका सामयिकाभाव है यातें सामयिकाभाव औ अत्यं
ताभावका परस्पर विरोध संभवे नहीं तथापि घटके संयोगसंबंधावच्छिन्न सामयिकाभावका घटके संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1492

भावसैंविरोधहै समवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभावसैंविरोधनहीं यातैंयहनियमसिद्ध हुयाजिसअधिकरणमैंजाकालमैंजिसपदा
र्थकाजासंबंधसैं एकसंसर्गाभाव होवैतिस अधिकरणमैंताकालमैंतिसपदार्थकातासंबंधसैंअपरसंसर्गाभाव होवैनहीं अन्यसंबंध
सैंहोवैहै जासंबंधसैंजो पदार्थजहांन होवैतहांतिसपदार्थकातत्संबंधावछिन्नाभावकहियेहै भूतलमैंसंयोगसंबंधतैंकदाचित्घ
टहोवैहै यातैंसंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभाव घटकाभूतलमैंकदीवीनहीं किंतुभूतलत्वजातिमैं औभूतलकेरूपादिकगुणन
मैंसंयोगसंबंधतैं घटकदाचित्वीरहैनहीं काहेतैंदोद्रव्यकासंयोगहोवैहै द्रव्यकाऔजातिकातैसैंद्रव्यकाऔगुणकासंयोगहोवैन
हीं यातैंभूतलत्वमैंऔभूतलकेरूपादिकगुणनमैंघटकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै औभूतलत्वमैंतैसैंरूपादिकगुणनमैं
समवायसंबंधतैंवीघटकदाचित्वीरहैनहीं काहेतैंकार्यद्रव्यकाअपणेंउपादानकारणमैंसमवायसंबंधहोवैहै अन्यमैंनहींगुण
कासमवायगुणीमैंहोवैहै जातिकासमवायव्यक्तिमैंहोवैहै क्रियाकासमवायक्रियावालेमैंहोवैहै अन्यस्थानमैंकहूंसमवायसंबं
धहोवैनहीं यद्यपि परमाणुआदिकनित्यद्रव्यनमैंवीविशेषपदार्थकासमवायनैयायिकमानैंहै तथापिविशेषपदार्थअप्रसिद्ध हैता
कीकल्पनानिष्प्रयोजनहै यह अद्वैतग्रंथनमैंस्पष्टहै औदीधितिकारशिरोमणिभट्टाचार्यनैंवीविशेषपदार्थकाखंडनहीकह्याहै
यातैंउपादानकारणगुणीव्यक्तिक्रियावानमैंहीकार्यद्रव्यगुणजातिक्रियाकाक्रमतैंसमवायसंबंधहै औकिसीकाकिसीमैंसमवा
यसंबंधनहीं इसरीतिसैंभूतलत्वमैं औभूतलकेरूपादिकगुणनमैंघटकासमवायसंबंधकदीवीहोवैनहीं किंतुकपालमैंहीघटका
समवायहोवैहै यातैं घटकेउपादानकारणकपालकूंत्यागिकेऔरस्थानमैंसारेघटकासमवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै औघ
टकाअन्यसंसर्गाभावतिसअत्यंताभावकेसाथिरहैनहीं काहेतैंघटकाप्रागभावप्रध्वंसाभावतोकपालविनाअन्यस्थानमैंरहैनहीं-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1493

औसामयिकाभावतहांहोवैहै जहांकिसीकालमैंजासंबंधसैंप्रतियोगीहोवैतहांतिसीसंबंधसैंजाकालमैंप्रतियोगिनहोवैताकालमैंतत्सं
बंधावच्छिन्नसामयिकाभावहोवैहै जहांकिसीकालमैंजासंबंधसैंप्रतियोगिहोवैनहींतहांतत्संबंधावच्छिन्नअत्यंताभावहीहोवैहै कपा
लविनाअन्यपदार्थनमैंसमवायसंबंधतैंघटकदाचित्‌वीरहैनहीं यातैंघटकेसमवायसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावकेअधिकरणमैंघट
कासमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावरहैनहीं औविचारकरैतोद्रव्यकासमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावअप्रसिद्धहै संयोग
संबंधावच्छिन्नसामयिकाभावहीद्रव्यकाप्रसिद्धहै काहेतैंनित्यद्रव्यतोसमवायसंबंधतैंकिसीमैंरहैनहीं यातैंनित्यद्रव्यकातोसमवा
यसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावहीहै समवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावनित्यद्रव्यकाकहूंनहीं औकार्यद्रव्यकाअपनैंउपादानका
रणमैंतोप्रागभावअथवाप्रध्वंसाभावहोवैहै तहांसमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाव अथवासमवायसंबंधावच्छिन्नअत्यं
ताभावरहैनहीं औअपनैंउपादानकारणकूंत्यागिकेअन्यपदार्थमैंसमवायसंबंधतैंकार्यद्रव्यकदाचित्‌रहताहोवैकदाचित्‌नहींरहता
होवैतोसमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावहोवै औउपादानसैंभिन्नमैंकार्यद्रव्यकदाचित्‌वीरहैनहीं यातैंउपादानसैंभिन्नप
दार्थनमैंकार्यद्रव्यकासमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावसंभवैनहीं किंतुतहांवीसमवायसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावहीका
र्यद्रव्यकाहै इसरीतिसैंसमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावद्रव्यकाअप्रसिद्धहै औगुणक्रियावीसमवायसंबंधतैंजाद्रव्यमैंउप
जिकैनष्टहोयजावैं ताद्रव्यमैंसमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावनहीं किंतुप्रथमप्रागभावहै पश्चात्‌प्रध्वंसाभावहै औघटकेगु
णक्रियासमवायसंबंधसैंअन्यद्रव्यमैंकदेवीरहैंनहीं तहांवीतिनकासमवायसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावहै सामयिकाभावनहीं इ
सरीतिसैंगुणक्रियाकावीसमवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावअप्रसिद्धहै तैसैंसंयोगसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाववीगुणक्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याकाअप्रसिद्ध है काहेतें संयोगसंबंधतें गुणक्रियाकदाचित् रहते होवें कदाचित् नहीं रहते होवें तो संयोगसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावगु
णक्रियाका होवे औ संयोगसंबंधतें गुणक्रियाकिसीमें कदाचित् रहेनहीं यातें गुणक्रियाका संयोगसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभाव ही है सो अ
त्यंताभावसकलपदार्थनमें है काहेतें संयोगसंबंधतें गुणक्रियाकिसीपदार्थमें रहते होवे तो तिसपदार्थमें संयोग संबंधावच्छिन्न अत्यंता
भावगुणक्रियाका न होवे सो संयोगसंबंधतें गुणक्रियाका आधार कोई हैनहीं यातें गुणक्रियाका संयोगसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभाव के
वलान्वयि है जाका अभाव कहूं नहीं होवे सो केवलान्वयि कहिये है उक्तअत्यंताभाव सारे है तिस अत्यंताभावका अभाव कहूं नहीं यातें के
वलान्वयि कहिये है इसरीतिसें समवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाव औ संयोगसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाव गुणका औ क्रियाका
अप्रसिद्ध है तैसें जातिकाबी सामयिकाभाव अप्रसिद्ध है काहेतें संयोग संबंधसें तो जातिकिसी पदार्थमें कदाचित् बी रहेनहीं यातें सकल
पदार्थनमें जातिका संयोगसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभाव है सामयिकाभाव नहीं तैसें अपना आश्रय जो व्यक्ति तामें समवायसंबंधसें जाति
सदा रहे है तो व्यक्तिमें जातिका समवायसंबंधतें कोई अभाव रहे नहीं जैसें घटत्व जाति घट व्यक्तिमें समवायसंबंधतें रहे है तहां घटत्वका
अत्यंताभाव वा सामयिकाभाव अथवा प्रागभाव तथा प्रध्वंसाभाव रहेनहीं काहेतें प्रागभाव प्रध्वंसाभाव तो अनित्यके होवें हैं घटत्व नि
त्य है ताके प्रागभाव प्रध्वंसाभाव संभवे नहीं औ जहां प्रतियोगि कदाचित् बी होवे नहीं तहां अत्यंताभाव होवे है औ जहां प्रतियोगि कदाचि
त् होवे कदाचित् नहीं होवे तहां सामयिकाभाव होवे है घटमें घटत्व सदा समवायसंबंधतें रहे है यातें घटमें घटत्वका समवायसंबंधाव
छिन्नात्यंताभाव औ समवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाव संभवे नहीं तैसें घटसें भिन्न जो घटत्वके अनाधार सकलपदार्थ कहे हैं तिन १
में घटत्वजाति समवायसंबंधतें कदे बी रहे नहीं यातें तिनमें बी घटत्वजातिका समवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाव नहीं किंतु समवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1495

यसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै इसरितिसैंद्रव्यसैंभिन्नपदार्थकासामयिकाभावअप्रसिद्धहै औद्रव्यवीनित्यअनित्यभेदसैंदोप्रकारकेहैं पृथिवी
जलतेजोवायुद्व्यणुकादिरूपअनित्यहैं आकाशकालदिशाआत्मामनऔपरमाणुरूपपृथिवीजलतेजोवायुयेनित्यद्रव्यहैं सोनित्यद्रव्य
समवायसंबंधतैंकदाचित्किसीपदार्थमैंरहैंनहीं यातैंतिनकातोसमवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभावकहूंनहीं किंतुसमवायसंबं
धावछिन्नअत्यंताभावहीसारैहै तैसैंअनित्यद्व्यणुकादिद्रव्यसमवायसंबंधतैंअपनेंअवयवपरमाणुआदिकेमैंरहैहैं अवयवविना
अन्यपदार्थमैंअनित्यद्रव्यसमवायसंबंधसैंकदेवीरहैनहीं अवयवनमैंअवयवीकाप्रागभावप्रध्वंसाभावहोवैहै यातैंसमवायसं
बंधावछिन्नसामयिकाभावअवयवमैंकार्यद्रव्यकानहींहोवैहै अवयवसैंभिन्नपदार्थनमैंसमवायसंबंधतैंअवयवीकदेवीरहैनहीं यातैं
समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभावतहांनहीं किंतुसमवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै इसरीतिसैंद्रव्यकावीसमवायसंबंधाव
छिन्नसामयिकाभावअप्रसिद्धहै केवलसंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावद्रव्यकाप्रसिद्धहै सोवी कार्यद्रव्यकाहै नित्यद्रव्यकातोसंयो
गसंबंधावछिन्नअत्यंताभावही सारैहै सामयिकाभावकहूंवीनित्यद्रव्यकानहीं काहेतैंनित्यद्रव्यकाअवृत्तिस्वभावहै यातैंसंयोगसंबं
धतैंनित्यद्रव्यकिसीपदार्थमैंकदाचित्वीरहैंनहीं यद्यपिनित्यद्रव्यकावीअपरद्रव्यसैंसंयोगहोवैहै औजाकासंयोगजामैंहोवै सोतामैंसं
योगसंबंधसैंरहैहै तथापिनित्यद्रव्यकासंयोगवृत्तिनियामकनहीं जैसैंकुंडबदरकासंयोगबदरकीवृत्तिकानियामकहै कुंडकीवृत्तिका
नियामकनहीं तैसैंनित्यद्रव्यकाकार्यद्रव्यसैंसंयोगवीकार्यद्रव्यकीवृत्तिकानियामकहै नित्यद्रव्यकीवृत्तिकानियामकनहीं इसकारणतैं
संयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावनित्यद्रव्यकाअप्रसिद्धहै संयोगसंबंधतैंवासमवायसंबंधतैंजोपदार्थकिसीमैंरहैनहीं सोअवृत्ति
कहियेहै नित्यद्रव्यमैंतोसंयोगसंबंधतैंऔसमवायसंबंधतैंअन्यपदार्थरहैहै अन्यपदार्थनमैंसंयोगसंबंधतैंवासमवायसंबंधतैंनि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यद्रव्यरहै नहीं यातेंनित्यद्रव्यनकूं अवृत्तिकहेहैं इसरीतिसें संसर्गाभावअन्योन्याभावकेभेदतेंअभावदोप्रकारकाहैं तिनमेंसंसर्गाभाव
केच्यारिभेदहैं तिनच्यारूंकापरस्परविरोधहै औतिनच्यारिकाहीअपनेंप्रतियोगिसेंविरोधहै प्रतियोगिसेंविरोधइसभांतिहै जोप्रतियो
गीजासंबंधसेंजहांहोवेताकातत्संबंधावछिन्नाभावहोवेनहीं औएकसंबंधसेंप्रतियोगीहोवे अन्यसंबंधतें ताकाअभाववीहोवेहै जै
सेंसंयोगसंबंधतेंभूतलमेंघटहोवे तवसमवायसंबंधतेंघटहैनहीं यातेंसंयोगसंबंधतेंघटवालेभूतलमेंवीघटकासमवायसंबंधावछि
न्नअत्यंताभावहै यातेंजासंबंधसेंप्रतियोगीहोवेतत्संबंधावछिन्नसंसर्गाभावकाप्रतियोगिसेंविरोधहैं संसर्गाभावनकापरस्परविरोध
वीसमानसंबंधसेंहै औएकसंबंधावछिन्नएकसंसर्गाभावजहांहोवे तहांवीअन्यसंबंधावछिन्नअपरंसंसर्गाभावहोवेहै जैसेंघटश्
न्यभूतलमेंघट कासंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावहै औतिसीघटकासमवायसंबंधावछिन्न अत्यंताभावतिसीभूतलमेंरहैहै इ
सरीतिसें प्रतियोगितेंसंसर्गाभावकाएकसंबंधतेंविरोधहै औसमानसंबंधतेंहीपरस्परसंसर्गाभावनकाविरोधहै औअन्योन्याभाव-
कातोजैसेंप्रागभावादिकनतेंविरोधनहीं तैसेंस्वप्रतीयोगीसेंवीविरोधनहीं औविचारकरेंतोअन्योन्याभावकाअन्यभावनतें यद्यपिविरो
धनहींतथापिअपनेंप्रतियोगितेंअन्योन्याभावकावीविरोधहै औबहुतग्रंथनमेंयहलिख्याहै संसर्गाभावकाप्रतियोगिसेंविरोधहै औअन्योन्या
भावकाप्रतियोगिसेंविरोधनहीं किंतुप्रतियोगितावछेदकधर्मसेंविरोधहै जैसेंभूतलमेंघटहोवेतिसकालमें वीघटकाअन्योन्याभावहै का
हेतेंभेदकूंअन्योन्याभावकहैहैं घटवालाभूतलवीघटरूपनहीं किंतुघटसेंभिन्नहै घटसेंभिन्नकहिये घटकेभेदवालाभूतलहै भेदवा
लाऔअन्योन्याभाववालाकहनेमें एकहीअर्थहै घटविनाऔरसारेपदार्थघटभिन्नहै घटमेंघटत्वरहैहै तहांघटकाभेदरूपघटान्यो १०
न्याभावरहैनहीं घटविनाऔरकिसीपदार्थनमेंघटत्वरहैनहीं तहांसारेघटकाअन्योन्याभावहै इसरीतिसेंघटान्योन्याभावकाघटसें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1497

विरोधनहीं किंतुघटत्वसेंविरोधहै तहांघटान्योन्याभावकाप्रतियोगीघटहै औप्रतियोगितावछेदकघटत्वहै जाकाअभावहोवैसोप्रतियोगी
कहियेहै औप्रतियोगिमेंजोधर्मरहैसोप्रतियोगितावछेदककहियेहै यद्यपिप्रतियोगीमेंरहनेवाले धर्मबहुतहैं जैसेंघटमेंघटत्वहै औ
पृथ्वीत्वद्रव्यत्वपदार्थत्वादिकबीघटमेंरहैहै तिनमेंपृथ्वीत्वादिकबीघटान्योन्याभावकेप्रतियोगितावछेदकहुयेचाहियें औपृथि
वीत्वादिकघटान्योन्याभावकेप्रतियोगितावछेदकनहींहैं पृथिवीअन्योन्याभावकाप्रतियोगितावछेदकपृथ्वीत्वहै द्रव्यान्योन्या
भावकाप्रतियोगितावछेदकद्रव्यत्वहै घटान्योन्याभावकेप्रतियोगितावच्छेदकपृथिवीत्वद्रव्यत्वादिकनहींहैं औघटरूपप्रतियोगिमें
तौरहैहैं यातेंघटत्वकीनांई घटान्योन्याभावकेपृथिवीत्वद्रव्यत्वादिकप्रतियोगितावच्छेदककहेचाहियें तथापिअभावबोधकपदकेसा
थिप्रतियोगिबोधकपदकेउच्चारणकरेंजिसधर्मकीप्रतीतिहोवैसोप्रतियोगितावछेदककहियेहै घटान्योन्याभावकहनेमेंप्रतियोगि
बोधकघटपदहै तैसेंपटोघटोन इसरीतिसेंबीप्रतियोगिबोधकघटपदहै ताकेंउच्चारणकरेंघटत्वकीप्रतीतिहोवैहै पृथिवीत्वद्रव्यत्वा
दिकनकीप्रतीतिहोवैनहीं यातें घटान्योन्याभावकाप्रतियोगितावछेदकघटत्वहै पृथिवीत्वादिकनहीं औजलंपृथिवीन इसरीतिसें कहैं
औपृथिवीअन्योन्याभावकहैं तवप्रतियोगिबोधकपृथिवीपदहै ताकेंउच्चारणकरेंपृथिवीत्वकीप्रतीतिहोवैहै तहांप्रतियोगितावछेदक
पृथिवीत्वहै गुणोद्रव्यंन इसरीतिसेंकहैं औद्रव्यान्योन्याभावकहैं तवप्रतियोगिबोधकद्रव्यपदहै ताकेंउच्चारणकरेंद्रव्यत्वकीप्रतीतिहो
वैहै तहांप्रतियोगितावछेदकद्रव्यत्वहै घटपदकेउच्चारणकरेंघटत्वकीप्रतीतिहोवैहै पृथिवीत्वादिकनकीनहीं यामेंयहहेतुहै घट
पदकीघटत्वविशिष्टमेंशक्तिहै जिसधर्मविशिष्टमेंजापदकीशक्तिहोवैतिसधर्मकीतापदसेंप्रतीतिहोवैहै इसरीतिसें घटान्योन्याभा
वकाप्रतियोगितावछेदकघटत्वहै सोघटमेंरहैहै घटान्योन्याभावघटमेंरहैनहीं घटसेंभिन्नसकलपदार्थनमें घटकाअन्योन्याभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रेहैंहे तहांघटत्वरहेनहीं यातें घटत्वरूपप्रतियोगितावछेदकसेंघटान्योन्याभावकाविरोधहे औ घटरूपप्रतियोगिसेंविरोधनहीं औ
संसर्गाभावकाप्रतियोगिसेंविरोधहे इसरीतिसें बहुतग्रंथकारोंनेंलिष्याहे औ संसर्गाभावअन्योन्याभावकेलक्षणवीइसीअर्थकेअनु
सारीकरेहें प्रतियोगिविरोधीजोअभावसोसंसर्गाभावकहियेहे औप्रतियोगितावछेदकविरोधीअभावअन्योन्याभावकहियेहे इसरी
तिकेलक्षणकहनेंतेंवीअन्योन्याभावकाप्रतियोगिसें अविरोधहीसिद्धहोवेहे औचतुर्विधसंसर्गाभावकाप्रतियोगिसेंविरोधसिद्धहोवेहे
परंतुग्रंथकारनकायहसमग्रलेखस्थूलदृष्टिसेंहे विवेकदृष्टिसेंनहीं काहेतें अत्यंताभावकाजिसरीतिसेंप्रतियोगितेंविरोधहे तिसरी
तिसेंअन्योन्याभावकावीप्रतियोगितेंविरोधहे जाभूतलमेंसंयोगसंबंधतेंघट होवेतिसीभूतलमेंसमवायसंबंधावछिन्नघटका
अत्यंताभावकावीप्रतियोगिसेंसर्वथाविरोधनहीं किंतुजिससंबंधसेंप्रतियोगीहोवेतत्संबंधावछिन्नअत्यंताभावहोवेनहीं यातें
अभावकाप्रतियोगितावछेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिसेंविरोधहे प्रतियोगितावछेदकसंबंधतेंअन्यसंबंधविशिष्टप्रतियोगिसें-
किसीअभावकाविरोधनहींजिससंबंधसेंपदार्थकाअभावकहियेसोप्रतियोगितावछेदकसंबंधकहियेहे अत्यंताभावकेप्रतियो-
गितावछेदकसंबंधअनेकहें काहेतेंजिसअधिकरणमें एकसंबंधतेंजोपदार्थहोवेतिसीअधिकरणमेंअपरसंबंधावछिन्नअत्यं
ताभावतिसपदार्थकाहोवेहे जेसेंपृथिवीमेंसमवायसंबंधतेंगंधहोवेहे संयोगसंबंधतेंकदेवीहोवेनहीं यातेंपृथिवीमेंगंधकासं
योगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहे तहांप्रतियोगितावछेदकसंयोगसंबंधहे जलमेंसंयोगसंबंधतेंवासमवायसंबंधतेंगंधनहीं
किंतुकालिकसंबंधतेंजलमेंवीगंधहे यातेंजलमेंगंधकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहे औसमवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभाव
हे तहांप्रथमअभावकाप्रतियोगितावछेदकसंयोगसंबंधहे द्वितीयअभावकाप्रतियोगितावछेदकसमवायसंबंधहे औकालिक ११

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संबंधसें एकएकजन्यमें सारेपदार्थरहेहैं यातें द्व्यणुकादिरूपजलमें गंध होनेतें जलवृत्तिगंधाभावका प्रतियोगितावच्छेदक कालिकसंबंधनहीं
औ नित्यपदार्थमें कालिकसंबंधसें कोई पदार्थरहेनहीं यातें परमाणुरूपजलमें गंधका कालिकसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभाववी है यातें परमा-
णुवृत्तिगंधाभावका प्रतियोगितावच्छेदक कालिकसंबंध है इसरीतिसें अत्यंताभावके प्रतियोगितावच्छेदकसंबंध अनेक हैं अन्यअभाव
नका प्रतियोगितावच्छेदकसंबंध एकएक है जैसें कपालमें घटका प्रागभाव है अन्यमें कहूं घटका प्रागभाव नहीं सो कपालमें घटके प्राग
भावका प्रतियोगितावच्छेदक समवायसंबंध है प्रागभावका प्रतियोगितावच्छेदक अन्यसंबंध नहीं यत्संबंधावच्छिन्नप्रागभाव जाका
जामें होवे तासंबंधसें ताकी उत्पत्ति तिसमें होवैहै यह नियम है कपालमें घटकी उत्पत्ति समवायसंबंधतें होवैहै अन्यसंबंधसें न
हीं होवैहै यातें कपालमें घटका समवायसंबंधावच्छिन्नप्रागभाव है ताका प्रतियोगितावच्छेदक एकसमवायसंबंध है तैसें कपालेस
मवायेनघटोनष्टः ऐसी प्रतीति प्रध्वंसाभावकी होवैहै यातें ध्वंसका प्रतियोगितावच्छेदकवी एकसमवायसंबंध है तैसें सामयिकाभा
ववी जन्यद्रव्यका हीं होवैहै औ जन्यद्रव्यकावी संयोगसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभाव ही होवैहै समवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभा
वअप्रसिद्ध है यह पूर्व कहीहै यातें सामयिकाभावकावी प्रतियोगितावच्छेदक संयोगसंबंध है तैसें अन्योन्याभावका प्रतियोगिताव
च्छेदक एक अभेदसंबंध है तिस अभेदकूंही नैयायिक तादात्म्यसंबंध कहैहैं अभेदसंबंधावच्छिन्नाभावकूंही अन्योन्याभाव कहैहैं
अन्यसंबंधावच्छिन्नाभावकूं संसर्गाभाव कहैहैं अन्योन्याभाव कहैं नहीं इसरीतिसें अन्योन्याभावका प्रतियोगितावच्छेदकसंबंध एकता
दात्म्यनामा अभेद है औरकोई संबंध अन्योन्याभावका प्रतियोगितावच्छेदक नहीं औ प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिका
अभावसें विरोध है अन्यसंबंधविशिष्टप्रतियोगिका तो अत्यंताभावसें वी विरोध नहीं यह निर्णीत ही है अन्योन्याभावका जो प्रतियो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गितावच्छेदकअभेदसंबंधहै ताअभेदसंबंधसैंअपनेंआत्मामेंहीघटरहैहै भूतलकपालादिकनमैंअभेदसंबंधसैंघटकदांवीरहैंनहीं ज
हांअभेदसंबंधसैंघटनहींरहै तहांसारैघटकाअन्योन्याभावहै औअपनैंस्वरूपमैंअभेदसंबंधसैंघटरहैहै तहांघटकाअन्योन्याभाव
नहीं इसरीतिसैंप्रतियोगितावच्छेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिका जैसैंअत्यंताभावसैंविरोधहै तैसैंअन्योन्याभावसैंबीप्रतियोगिता
वच्छेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगीकाविरोधस्पष्टहै प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिसैंअत्यंताभावकीनांईअन्योन्याभा
वकाविरोधस्पष्टहोतैंप्रतियोगिसैंअविरोधकथनसकलग्रंथकारोंनैंविवेकनेत्रनिमीलनसैंकह्याहै यातैंसकलअभावनकाप्रतियो
गिसैंविरोधहै प्रथमप्रसंगयहहै जहांभूतलादिकनमैंकदाचित्घटहोवैकदाचित्नहींहोवै तहांघटकासामयिकाभावहै अत्यंताभा
वनहीं काहेतैं अभावकाप्रतियोगिसैंविरोधहोवैहै सोविरोधपूर्वउक्तरीतिसैंनिर्णीतहै यातैंभूतलमैंसंयोगसंबंधतैंघटहोवैतब
तोघटकासंयोगसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावनहीं औघटकूंउठायलेवैतबघटकासंयोगसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावहै ऐसामान
नाहोवैगा यातैंभूतलमैंघटकेअत्यंताभावकेउत्पत्तिनाशमाननेहोवैंगे उत्पत्तिनाशमानेविनाकदाचित्हैकदाचित्नहीं यहकहना
अत्यंताभावमैंसंभवैनहीं सोउत्पत्तिनाशघटात्यंताभावकेसंभवैनहीं काहेतैं जहांसंयोगसंबंधतैंघटनहीं तहांसारैघटकासंयोगसं
बंधावच्छिन्नअत्यंताभावहै सोघटकाअत्यंताभावसारेपदार्थनमैंएकहैनानानहीं काहेतैंप्रतियोगिभेदसैंअभावकाभेदहोवैहै अधि
करणभेदसैंअभावकाभेदहोवैनहीं यहतार्किकसिद्धांतहै जैसैंघटाभावपटाभावकेप्रतियोगिभिन्नहैं सोअभावभिन्नहैं औभूतलमैंसं
योगसंबंधतैंघटात्यंताभावहै तैसैंभूतलत्वमैंबीसंयोगसंबंधतैंघटनहीहै तैसैंघटत्वजातिमैंबीसंयोगसंबंधतैंघटनहीं यातैंसं
योगसंबंधावच्छिन्नघटात्यंताभावहै तैसैंपटत्वादिकनमैंबीसंयोगसंबंधावच्छिन्नघटात्यंताभावहै इसरीतिसैंअनंतअधिकरणमैंसं १२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योगसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावहै तिसकेअधिकरण यद्यपिअनंतहैं तथापिप्रतियोगि एकघटहै यातेंसंयोगसंबंधावछिन्नघटात्यं
ताभावएकहै परंतुभूतलत्वघटत्वादिकजातिसेंतो घटकासंयोगसंबंधकदीवीहोवैनहीं यातेंभूतलत्वघटत्वादिकजातिमें घटकासंयो
गसंबंधावछिन्नअत्यंताभावउत्पत्तिनाशरहितनित्यहै औभूतलादिकनमेंसंयोगसंबंधतेंकदाचित्घटहोवैहै कदाचित्नहींहोवैहै यातें
घटकालमेंभूतलवृत्तिघटात्यंताभावनष्टहोवैहै औघटकेअपसरणकालमेंघटात्यंताभावउपजेहै इसरीतिसें घटत्वादिजातिमें घटा
त्यंताभावनित्यकहनासोई घटात्यंताभावभूतलादिकनमेंउत्पत्तिनाशवालाअनित्यहैं यहकहनाअसंगतहै यातेंजहांसंयोगसंबंधतेंकदाचि
त्घटहोवै तहांघटशून्यकालमेंघटकासंयोगसंबंधावछिन्नाभावकोईअनित्यअभावमान्याचाहियेसोईसामयिकाभावकहियेहै औतिसी
भूतलमेंसमवायसंबंधतेंकदाचित्वीघटहोवैनहीं यातेंघटकासमवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै तैसेंघटत्वभूतलत्वादिकनमेंसं-
योगसंबंधतेंकदाचित्वीघटहोवैनहीं औसमवायसंबंधतेंवीकपालविनाअन्यपदार्थमेंघटहोवैनहीं यातेंघटत्वादिकनमेंसंयोगसंबंधा
वछिन्नघटात्यंताभावहै औसमवायसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावहै सोअत्यंताभावउत्पत्तिनाशरहितनित्यहै यातेंयहनिष्कर्षसिद्धहु
वाजहांकदाचित्संयोगसंबंधतेंप्रतियोगीहोवै कदाचित्नहींहोवै तहांसंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावकहियेहै घटकेसा
मयिकाभावउत्पत्तिनाशवालेहैं यातेंप्रतियोगिभेदविनावीएकघटकेसामयिकाभावअनंतहैं औजासंबंधसेंजहांघटरूपप्रतियो-
गिकदेवीरहेनहीं तहांघटकातत्संबंधावछिन्नअत्यंताभावकहियेहै सोअत्यंताभावउत्पत्तिनाशरहितहै यातेंनित्यहै औघटकासंयो
गसंबंधावछिन्नअत्यंताभावअनंतअधिकरणोंमेंएकहै तैसेंसमवायसंबंधावछिन्नघटात्यंताभाववीअनंतअधिकरणोंमेंएकहै किसी
अधिकरणकानाशवीहोयजावैतौवीसोईअत्यंताभावअन्यअधिकरणोंमेंरहेहै यातेंअत्यंताभावकानाशहोवैनहीं जैसेंघटकासमवायसंबं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धावछिन्नअत्यंताभावतंतुमेंहै तंतुत्वजातिमें है घटत्वमेंहै पटत्वमेंहै कपालत्वमेंहै एककपालकूं त्यागिकैसारे पदार्थनमेंहै तिनमेंसारे सम
वायसंबंधावछिन्नघटात्यंताभाव एकहै तंतुआदिक अनित्यपदार्थनकानाशहुयेंबीतंतुत्वादिकनित्यपदार्थनमेंसोई अत्यंताभावरहेहै
यातें अत्यंताभावनित्यहै औप्रतियोगिभेदसें अत्यंताभावकाभेद होवैहै जैसें घटात्यंताभावसें पटात्यंताभावभिन्नहै औप्रतियोगिता
वछेदकसंबधकेभेदतें प्रतियोगिभेदविनाबी अत्यंताभावकाभेदहोवैहै समवायसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावका औसंयोगसंबंधाव
छिन्नगंधात्यंताभावका प्रतियोगीतो एकगंधहै परंतुप्रतियोगितावछेदकसंबंधदोहोनेतें दो अभावहैं जोदोनहींहोवे एकहीमा
नें तो पृथिवीमें समवायसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावकेनहींहोनेतें संयोगसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावबीनहींहोवेगा जोऐसें
कहै पृथिवीमें संयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावबीनहींहै तो पृथिव्यांसंयोगेनगंधोनास्ति ऐसीप्रतीतिनहींहुईचाहिये यातें पृ
थिवीमें संयोगसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावहै औसमवायसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावनहींहै यातें प्रतियोगीभेदतें जैसें अत्यंता
भावकाभेदहोवैहै तैसें प्रतियोगितावछेदकसंबंधभेदतेंबी अत्यंताभावकाभेदहोवैहै औसामयिकाभावका प्रतियोगितावछेदकसं
बंधकेभेदविनाबीसमयभेदसें भेदहोवैहै जैसें भूतलमें घटकासंयोगजितनेंहोवेनहीं तबघटकासंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावहै
औभूतलमें घटकासंयोगहोवैतबघटके प्रथमसामयिकाभावकानाशहोयजावैहै जबभूतलसें घटकूं उठायलेवैंतबघटकासंयोगसंबं
धावछिन्नसामयिकाभावऔरउपजेहै तिसीघटकूं भूतलमें फेरिल्यावैं तबदूजासामयिकाभावनष्टहोवैहै फेरितिसघटकूं उठायलेवैं १३
तबतिसीघटका संयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावऔर तृतीयउपजैहै इसरीतिसें प्रतियोगिभेदविना औप्रतियोगितावछेदकसं
बंधभेदविनाबीकालभेदसें सामयिकाभावकाभेदहोवैहै यहसामयिकाभाव औअत्यंताभावकी विलक्षणतास्पष्टहै इसरीतिसेंन्या

1502

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यसंप्रदायमें पांचप्रकारका अभावहै औ नवीन तार्किक सामयिकाभावकूं नहीं मानैंहैं भूतलादिकनमें घटादिकनका जहां सामयिकाभा
वकह्याहै तहां वी सारे घटादिकनका अत्यंताभावहै और जो भूतलादिकनमें घटादिकनका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभावमाननैं
में दोष कह्याहै जातिगुणादिकनमें घटका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभावनित्यहै औ भूतलादिकनमें तिसी घटका संयोगसंबंधा
वच्छिन्न अभाव अनित्यहै सो नित्य अनित्य परस्पर भिन्नहैं एक नहीं जातिगुणादिकनमें औ भूतलादिकनमें संयोगसंबंधावच्छिन्न घ
टाभावका भेद नहीं मानैं तौ नित्यता औ अनित्यतारूप जो विरोधी धर्म तिनका संकर होवैगा ताका समाधान इसरीतिसें गंगेशोपाध्याया
दिकन वीन करैहैं भूतलादिकनमें वी घटका संयोगसंबंधावच्छिन्न अभाव अनित्य नहीं किंतु नित्यहै जब भूतलमें घटका संयोग होवै ति
सकालमें वी घटका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव रहैहै ताका नाश होवै नहीं यातें अत्यंताभाव केवलान्वयिहै जाका अभाव कहूं न
होवै किंतु सकल पदार्थनमें सर्वदा रहै सो केवलान्वयि कहियेहै और जो यह शंका होवै संयोगसंबंधतें घटके होतें संयोगसंबंधावच्छि
न्नघटात्यंताभाव मानैंगे तौ संयोगसंबंधतें घटवाले भूतलमें संयोगेन घटो नास्ति ऐसी प्रतीति हुई चाहिये ताका यह समाधान करैहैं य
द्यपि संयोगसंबंधतें घटवाले भूतलमें वी निर्घट भूतलकी नांई संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव घटकाहै तथापि निर्घट भूतलमें तो संयो
गेन भूतले घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवैहै औ सघट भूतलमें उक्त प्रतीति होवै नहीं काहेतें उक्त प्रतीतिका विषय केवल घटका अत्यंताभा
व नहीं है किंतु भूतलसंबंधी घटके आधारकालतें अतिरिक्त काल औ संयोगसंबंधावच्छिन्न घटात्यंताभाव ये दोनूं जहां होवै तहां संयोगे
न घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवैहै भूतलमें संयोगसंबंधतें घट नहीं होवै तब भूतलसंबंधी घटाधारकाल नहीं है किंतु भूतल असंबंधी
जो घट ताका आधारकाल है यातें भूतलसंबंधी घटके आधारकालसें अतिरिक्त काल है औ संयोगसंबंधावच्छिन्न घटात्यंताभाव है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यातें संयोगेनघटोनास्ति ऐसीप्रतीतिहोवेहै औजहांभूतलमेंसंयोगसंबंधतेंघटहै तहांबीअत्यंताभावकूंनित्यता होनेतेंसंयोगसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावतोहै परंतुभूतलसंबंधीजोघट ताकाआधारकालहै यातेंभूतलसंबंधीघटाधारकालसेंअतिरिक्तकालनहींहै यातेंसंयोगसंबंधतेंघटहोतेंसंयोगेनभूतलेघटोनास्ति ऐसीप्रतीतिहोवेनहीं इसरीतिसेंअत्यंताभावतोसारेदेशमेंप्रतियोगिकेहोतेंऔनहींहोतेंसर्वदारहेहै परंतुअभावकाघटादिकप्रतियोगिकासंबंधिजोभूतलादिकअनुयोगी ताकाआधारकालप्रतियोगीकेहोतेंहोवेहै प्रतियोगिसंबंधीअनुयोगीकेआधारकालसेंअतिरिक्तकालहोवेनहीं यातेंप्रतियोगीनास्तिऐसीप्रतीतिप्रतियोगीकेहोतेंहोवेनहीं औप्रतियोगीनहींहोवे तबप्रतियोगिसंबंधीअनुयोगीकेआधारकालसेंअतिरिक्तकालऔअत्यंताभावदोनूंहै यातेंभूतलेसंयोगेनघटोनास्तिऐसीप्रतीतिहोवेहै इसरीतिसेंजहांप्राचीनसामयिकाभावमानेहैं तहांबीसारेअत्यंताभावहै औअत्यंताभावकूंअनित्यताहोवेनहीं औउक्तकालकेअभावतेंप्रतियोगीकेहोतेंअत्यंताभावकीप्रतीतिहोवेनहीं यहनवग्रंथकारोंकामतहै सोसमीचीननहीं प्राचीनमतहीसमीचीनहै काहेतें प्रतियोगीकेहोतेंअत्यंताभावमानेतोप्रतियोगीअभावकापरस्परविरोधहै याकथाकाउछेदहुयाचाहिये औरजोनवीनऐसेंकहेंविरोधदोप्रकारकाहोवेहै एकतोसहानवस्थानरूपहोवेहै औदूजासहाप्रतीतिरूपविरोधहोवेहै एकअधिकरणमेंएककालमेंनहींरहें तिनकासहानवस्थानरूपविरोधकहियेहै जैसेंआतपशीतताकाहै ऐसाविरोधअभावप्रतियोगीकानहींहै काहेतेंप्रतियोगीकेहोतेंअत्यंताभावरहेहै किंतुअभावप्रतियोगीकासहाप्रतीतिरूपविरोधहै एककालमेंएकअधिकरणमेंजिनकीप्रतीतिनहोवे तिनकासहाप्रतीतिरूपविरोधकहियेहै प्रतियोगीकेहोतेंअत्यंताभावकीप्रतीतिहोवेनहीं यातेंप्रतियोगीअभावकासहाप्रतीतिरूपविरोधहै सहानवस्थानरूपविरोधनहीं इसरीतिसेंनवीनकासमाधानसर्वलोकशास्त्रसेंविरुद्धहै काहेतेंअभावकाअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावप्रतियोगिकहियेहै जहांअभावनहोवै तहांअभावकाअभावहोवैहै जैसें घटवालेदेशमें घटकाअभावनहींहै किंतु घटाभावकाअ
भावहै सोई घटहै औ घटाभावकाप्रतियोगीहै इसरीतिसें अभावकेअभावकूं सर्वशास्त्रनमें प्रतियोगी कहैहैं नवीनरीतिसें सोकथन
असंगतहोवैगा काहेतें नवीनमतमें घटवाले देशमें घटकाअभाववीहै यातें घटाभावकाअभावकहनावनेंनहीं यद्यपिवक्ष्यमाणरीति
सें घटतें भिन्नहीं घटाभावभावहै घटरूपनहीं तथापि घटकेसमनियत घटाभावाभावहै यहवार्तानिर्विवादहै औ नवीनरीतिसें घटवा
ले देशमें घटाभावहै यातें घटाभावकाअभावनहीं होनेतें दोनूंकीसमनियतता संभवैनहीं यातें नवीनमत शास्त्रविरुद्धहै औ प्रतियोगि
अभावसमानाधिकरणहोवै नहीं यह सर्वलोकमें प्रसिद्धहै तालोकप्रसिद्ध अर्थका नवीनकल्पनासें बाधहोवैगा औ घटके अधिकरणमें
घटकाअत्यंताभावमानना प्रमाणशून्यहै किसीप्रमाणसैं सिद्धहोवैनहीं जहांघटनहीहै तहां घटोनास्ति इसप्रतीतिसें अत्यंताभावसिद्ध
होवैहै घटवालेदेशमें घटोनास्ति ऐसी प्रतीतिहोवैनहीं और कोई प्रतीति घटवाले देसमें अत्यंताभावकी साधकहै नहीं यातें प्रतियोगिदेस
में अत्यंताभावका अंगीकार प्रमाणसिद्धनहीं उलटा घटवाले देसमें घटात्यंताभावो नास्ति ऐसी प्रतीतिहोवैहै ताप्रतीतिसें विरुद्ध अ
त्यंताभावका अंगीकारहै औ घटवाले देशमें जो घटात्यंताभावकूं मानैं ताकूं वृद्धिवांछाकरिके चलेपुरुषका मूलवीनष्ट होयगया इस
न्यायकी प्राप्तिहोवैगी काहेतें अत्यंताभावकूं केवलान्वयिसाधनें वास्ते औ नित्यतासाधनें वास्ते घटवाले देशमें घटात्यंताभावमा-
न्याहै परंतु घटवाले देशमें घटात्यंताभावमानें सो अत्यंताभावहीं निष्फल औ निष्प्रमाण होयजावैगा तथाहि सर्वपदार्थनकाफलव्य
वहारसिद्धहै घटोनास्ति इसव्यवहारकी सिद्धिबिना और तो घटात्यंताभावकाफल संभवैनहीं उक्तव्यवहारकी सिद्धिही फलहै औ
घटोनास्ति याप्रतीतिसेंही घटात्यंताभावसिद्ध होवैहै उक्तप्रतीतिबिना घटात्यंताभावके होनेमें कोई प्रमाण नहीं नवीनमतमें घटा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यंताभावसें घटोनास्तिइसव्यवहारकीसिद्धिहोवेनहीं किंतुघटसंबंधीभूतलाधिकरणकालतें अतिरिक्तकालसेंउक्तव्यवहारकीसिद्धि
होवेहै काहेतें घटसंबंधीभूतलाधिकरणकालतें अतिरिक्तकालहोवे तबघटोनास्तियहप्रतीतिहोवेहै घटसंबंधीभूतलाधिकरण-
कालहोवे तबघटोनास्ति ऐसीप्रतीतिहोवेनहीं इसरीतिसें घटोनास्तियाप्रतीतिसें घटसंबंधीभूतलाधिकरणकालतें अतिरिक्तका
लकीसिद्धिहोवेहै घटात्यंताभावकीसिद्धिहोवेनहीं प्रतीतिकीनाई घटोनास्तिइसव्यवहारकीसिद्धिनवीनमतमें घटात्यंताभावसें होवे
नहीं किंतुउक्तकालसें घटोनास्तियहव्यवहारहोवेहै यातें घटात्यंताभावनवीनमतमेंनिष्फल औ निष्प्रमाणहै शब्दप्रयोगकूंव्यव
हारकहैहैं ज्ञानकूंप्रतीतिकहैहैं इसरीतिसें नवीनमतसें अत्यंताभावकूंनित्यतामाननेंवास्ते प्रतियोगीवालेदेशमें अत्यंताभावमा
नेंमूलतें अत्यंताभावकीहानिहोवेगी यातें घटवालेदेशमें घटात्यंताभावसंभवेनहीं औजहांभूतलमेंकदाचित् घटहोवे तहां अ
त्यंताभावहोवे तो अत्यंताभावयहसंज्ञाबीनिरर्थकहोवेगी जहां अत्यंतअभावहोवे तीनिकालमें प्रतियोगीनहोवे सो अत्यंताभाव
संज्ञाकीरीतिसें सिद्धहोवेहै यातें जहांकदाचितप्रतियोगीहोवे कदाचित्नहोवे तहांकालनिमें प्रतियोगिकाअभावनहीं यातें अत्यंताभा
वनहीं तासें भिन्नकोई अभावहै ताकूंसामयिकाभावकहैहैं इसरीतिसें च्यारिप्रकारका संसर्गाभाव औ अन्योन्याभावमिलिकें पां
चप्रकारकाअभावहै सो अभावएकएकदोप्रकारकाहै एकभावप्रतियोगिकहोवेहै दूजा अभावप्रतियोगिकहोवेहै भावकाअभा
वभावप्रतियोगिकअभावकहियेहै अभावकाअभावअभावप्रतियोगिकअभावकहियेहै जैसें प्रागभावदोप्रकारकाहै घटादिकन
काकपालादिकनमें प्रागभावभावप्रतियोगिकहै जैसें भावपदार्थका प्रागभावहै तैसें अभावकाबी प्रागभावहोवेहै परंतुसादिपदार्थन
काप्रागभावहोवेहै अनादिकाप्रागभावहोवेनहीं अत्यंताभावअन्योन्याभावप्रागभावतो अनादिहैं यातें तिनकातो प्रागभावसं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1507

भवैनहीं प्रध्वंसाभावअनंततोहै परंतुसादिहै यातैंप्रध्वंसाभावकाप्रागभावहोवैहै सोप्रध्वंसाभावकाप्रागभावप्रतियोगिरूपऔप्रतियोगी
काप्रागभावरूपहोवैहै जैसेंमुद्गरादिकनतैं घटकानाशहोवैताकूं घटकाप्रध्वंसाभावकहैहैं सोप्रध्वंसाभावमुद्गरादिजन्यहै मुद्गरादिकनके
व्यापारतैंपूर्वघटकालमैंऔघटकेप्रागभावकालमैंनहींहोनैतैंसादिहै यातैंमुद्गरादिव्यापारतैंपूर्वघटध्वंसकाप्रागभावहै सोध्वंसका
प्रागभावघटकालमैंहै औघटकीउत्पत्तिसैंपूर्वघटकेप्रागभावकालमैंहै यातैंघटध्वंसकाप्रागभावघटकालमैंतोघटरूपहै औघटकी
उत्पत्तिसैंपूर्वघटकाप्रागभावरूपहै इसरीतिसैं घटध्वंसकाप्रागभावघट औघटकेप्रागभावकेअंतर्भूतहै तिनतैंन्यारानहीं यह सांप्रदा
यिकमतहै परंतुयहमतयुक्तिविरुद्धहै काहेतैं घटतोभावरूपहै औसादिहै घटकाप्रागभावअभावरूपहै औअनादिहै एकहीघटध्वं
सप्रागभावकूं कदाचित्भावरूपताकदाचित्अभावरूपताकहनाविरुद्धहै तैसैंकदाचित्सादिरूपता औकदाचित्अनादिरूपताकहना
बीविरुद्धहै औघटकालमैंकपालेसमवायेनघटोस्तिघटप्रध्वंसोनास्ति इसरीतिसैंविधिरूपऔनिषेधरूपदोप्रतीतिविलक्षणहोवै
हैं तिनकेविषयबीपरस्परविलक्षणदोपदार्थमानेचाहिये तैसैंघटकीउत्पत्तिसैंपूर्वबीकपालेघटोनास्तिघटप्रध्वंसोनास्ति इसरीतिसैंदोप्र
तीतिहोवैहै यद्यपिसोदोनूंप्रतीतिनिषेधमुखहैं तथापिविलक्षणहैं काहेतैंप्रथमप्रतीतिमैंतोनास्तिकहनेसैंप्रतीतिजोहोवैहै अभावता
काप्रतियोगीघटप्रतीतहोवैहै औदूसरेप्रतीतिमैंनास्तिकहनेसैंप्रतीतहुयेअभावकाघटप्रध्वंसप्रतियोगीप्रतीतहोवैहै यातैंप्रतियो-
गीकाभेदहोतैंघटप्रागभावकाघटप्रध्वंसप्रागभावकाअभेदसंभवैनहीं किंतुघट औताकेप्रागभावतैंघटप्रध्वंसकाप्रागभावन्यारा
माननायोग्यहै अनुभवसिद्धपदार्थकालाघवबलसैंलोपसंभवैनहीं यातैंसांप्रदायिकरीतिसैंघटप्रध्वंसप्रागभावकाघटऔताकेप्रा
गभावमैंअंतर्भावमानैंलाघवबीअकिंचित्करहै इसरीतिसैंप्रध्वंसाभावकाप्रागभावअभावप्रतियोगिकप्रागभावअभावहै तैसैंसाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यिकाभाववी सादिहोवैहै ताकाप्रागभाववी अभावप्रतियोगिक प्रागभावहोवैहै औ प्रध्वंसाभाववी अत्यंताभाव अन्योन्याभावकातौ होवैनहीं काहेतैं दोनूं अभाव अनादिअनंतहै तैसें प्रध्वंसाभाववी अनंतहै ताकावी प्रध्वंस संभवैनहीं परंतु प्रागभाव औ सामयिकाभावका प्रध्वंस होवैहै सांप्रदायिकरीतिसें प्रागभावध्वंसवी प्रतियोगिप्रतियोगि औ प्रतियोगिप्रतियोगीके ध्वंसके अंतर्भूतहै तिनतें पृथक् नहीं जैसें घटके प्रागभावका ध्वंस होवैहै सो घटकालमैंहै औ घटके ध्वंसकालमैंहै घटकालमैं तो घटप्रागभावका ध्वंस प्रतियोगिप्रतियोगी स्वरूपहै काहेतैं घटप्रागभावके ध्वंसका प्रतियोगी घटप्रागभावहै औ घटप्रागभावका प्रतियोगी घटहै यातैं घटकालमैं घटप्रागभावका ध्वंसप्रतियोगिका प्रतियोगीस्वरूपहै औ मुद्गरादिकनतैं घटका नाश होवै तिसकालमैंवी घटप्रागभावका ध्वंसहै औ घटहै नहीं यातैं तिस कालमैं घटप्रागभावका ध्वंस प्रतियोगिप्रतियोगिका ध्वंसरूपहै काहेतैं घटप्रागभावध्वंसका प्रतियोगि जो घटप्रागभाव ताका प्रतियोगि घटहै ताघटका ध्वंसही घटप्रागभावका ध्वंसहै घटध्वंसतें पृथक् घटप्रागभावध्वंस नहीं इसरीतिसें प्रागभावका ध्वंस कदाचित् अपने प्रतियोगीका प्रतियोगीरूपहै औ कदाचित् अपने प्रतियोगिके प्रतियोगीका ध्वंसरूपहै प्रागभावध्वंस पृथक् नहीं यह सांप्रदायिकरीति वी जुक्तिविरुद्धहै काहेतैं घटतो सांतहै औ भावरूपहै औ घटध्वंस अनंतहै अभावरूपहै एकही घटप्रागभावध्वंसकूं सांत औ अनंतसें अभेदकथन तैसें भाव औ अभावसें अभेदकथन विरुद्धहै औ घटकी उत्पत्ति होवै तब घटोजातः औ घटप्रागभावो नष्ट इसरीतिसें दो विलक्षणप्रतीति होवैहैं तिनमैं घटोजातः या प्रतीतिका विषय उत्पन्नघटहै औ घटप्रागभावो नष्टः या प्रतीतिका विषय घटप्रागभावका ध्वंसहै तिनका अभेदकथन संभवैनहीं तैसें मुद्गरादिकनसें घटका ध्वंस होतेंही ऐसी प्रतीति होवैहै इदानीं घटध्वंसो जातः घटप्रागभावध्वंसः पूर्वं घटोत्पत्तिकाले जातः तहां वर्तमानकालमैं घटध्वंस १६
की उत्पत्ति औ अतीतकालमैं घटप्रागभावध्वंसकी उत्पत्ति सिद्ध होवैहै वर्तमानकालमैं उत्पत्तिवालेसें अतीतकालकी उत्पत्तिवालेका अभे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दसंभवेनहीं यातें घटप्रागभावकाध्वंसघटऔघटकेध्वंसतें पृथक्हे यद्यपिवेदांतपरिभाषादिकअद्वैतग्रंथनमेंवीध्वंसप्रागभावऔप्राग
भावकाध्वंसपृथक्नहींलिखे किंतुपूर्वउक्तन्यायसंप्रदायकीरीतिसें अंतर्भाववहीलिख्याहै तथापिश्रुतिसूत्रभाष्यतोइसनिरूपणमेंउदा-
सीनहैं यातेंजैसाअर्थयुक्तिअनुभवकेअनुसारहोवैसोमान्याचाहिये युक्तिअनुभवसेंविरुद्धआधुनिकग्रंथकारकालेखप्रमाणनहीं या
तें पूर्वउक्तअर्थप्रमाणविरुद्धनहीं उलटापृथक्मानननाहीयुक्तिअनुभवकेअनुसारहै इसरीतिसें प्रागभावकाध्वंसअभावप्रतियोगिकप्र
ध्वंसाभावहै सामयिकाभावकेवलद्रव्यकाहीहोवैहै यहपूर्वप्रतिपादनकरीहै यातेंअभावप्रतियोगिकसामयिकाभावअप्रसिद्धहै अभाव
प्रतियोगिकअत्यंताभावकेतोअनेकउदाहरणहैं कपालमेंघटकाप्रागभावऔप्रध्वंसाभावहै तंतुमेंनहीं यातेंतंतुमेंघटप्रागभावकाअत्यं
ताभावहै औघटप्रध्वंसाभावकाअत्यंताभावहै तैसेंकपालमेंघटकासामयिकाभावऔघटकाअत्यंताभावनहीं यातेंकपालमेंघटकेसा
मयिकाभावकाअत्यंताभावहै औघटात्यंताभावकाअत्यंताभावहै तैसेंकपालमेंकपालकाअन्योन्याभावनहीं तहांकपालान्योन्याभाव
काअत्यंताभावहै तैसेंघटमेंघटकाअन्योन्याभावनहीं तहांघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहै परंतुअन्योन्याभावकाअत्यंताभाव
पृथक्नहीं किंतुअन्योन्याभावकाप्रतियोगितावच्छेदकधर्मरूपहै जैसेंघटान्योन्याभावकाप्रतियोगितावच्छेदकधर्मघटत्वहै सोकेवल
घटमेंहीरहैहै औघटान्योन्याभावकाअत्यंताभाववीघटमेंहीरहैहै घटसेंभिन्नसकलपदार्थनमेंघटान्योन्याभावरहैहै यातेंघटान्यो
न्याभावकाअत्यंताभावघटसेंभिन्नपदार्थनमेंरहैनहीं इसरीतिसें घटत्वकेसमनियतघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहोनेतेंघट
त्वरूपहीघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहै इसरीतिकाप्राचीनलेखवीश्रद्धायोग्यनहीं काहेतेंघटेसमवायेनघटत्वंयाप्रतीतिकाविष
यघटत्वहै औघटेघटान्योन्याभावोनास्तियाप्रतीतिकाविषयघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहै यातेंअन्योन्याभावकाअत्यंताभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वअन्योन्याभावकाप्रतियोगीतावछेदकधर्मरूपनहीं तासेंपृथक्हीअभावरूपहे तैसेंअत्यंताभावकेअत्यंताभावकूंबीप्रथमअभाव
काप्रतियोगिरूपप्राचीनमानेंहें ताकाखंडनतोनवीनन्यायग्रंथनमेंस्पष्टहे तथाहिजहांघटकदीबीनहोंवे तहांघटकाअत्यंताभावहे ज
हांघटहोंवे तहांघटात्यंताभावनहींहे यातेंताकाअत्यंताभावहे इसरीतिसें घटात्यंताभावकाअत्यंताभावप्रथमात्यंताभावकाप्रतियोगिजो
घटताकेसमनियतहोंनेंतें घटस्वरूपहे तासेंपृथक्नहीं औघटात्यंताभावकाअत्यंताभावघटरूपनहींमानें पृथक्मानेंतोअत्यंताभाव
नकीअनवस्थाहोवेंगी जैसेंघटात्यंताभावकाअत्यंताभावपृथक्हे तैसेंद्वितीयअत्यंताभावकातृतीयअत्यंताभावतृतीयकाचतुर्थअ
त्यंताभावताकापंचम इसरीतिसेंअत्यंताभावनकीकहूंसमाप्तिनहोंवे ऐसीअनंतधाराहोवेगीऔद्वितीयअत्यंताभावकूंप्रथमअत्यं
ताभावकाप्रतियोगिस्वरूपमानेंतबअनवस्थादोषनहीं काहेतें घटात्यंताभावकाअत्यंताभावघटरूपमानेंद्वितीयात्यंताभावकाअत्यंता
भावबीघटात्यंताभावहीहे काहेतेंद्वितीयअत्यंताभावघटरूपहे यातेंताकाअत्यंताभावघटकाहीअत्यंताभावहे तैसेंतृतीयअत्यंताभा
वकाचतुर्थअत्यंताभावफेरिघटरूपहे चतुर्थअत्यंताभावकापंचमअत्यंताभावघटात्यंताभावरूपहे इसरीतिसेंप्रतियोगीऔएकअ
त्यंताभावकेअंतर्भूतसारेअत्यंताभावहोवेंहें अनवस्थादोषहोवेंनहीं यातेंअत्यंताभावकाअत्यंताभावप्रथमात्यंताभावकाप्रतियो-
गिस्वरूपप्राचीनोनेंमान्याहे तहांनवीनग्रंथकारोंनेंयहदोषलिख्याहे जहांभूतलमेंघटहोंवे तहांभूतले घटोस्तिभूतलेघटात्यंताभा
वोनास्ति इसरीतिसेंविलक्षणप्रतीतिदोहोवेंहे विधिमुखप्रतीतिऔनिषेधमुखप्रतीतिकाएकविषयसंभवेनहीं यातेंविधिमुखप्रती
तिकाविषयघटहे औनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयघटात्यंताभावकाअत्यंताभावहे सोघटरूपनहीं किंतुअभावरूपहे यातेंघटसेंपृ १७
थक्हे औद्वितीयअत्यंताभावकूंपृथक्मानेंअनवस्थादोषकह्याहे ताकायहसमाधानहे द्वितीयअत्यंताभावप्रथमअत्यंताभावके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतियोगीकेसमनियतहै औरतृतीयाभावप्रथमाभावकेसमनियतहै औरप्रतियोगिकेसमानदेशमेंजोद्वितीयाभावताके
समनियतचतुर्थाभावहै प्रथमतृतीयकेसमनियतपंचमअभावहै इसरीतिसें युग्मसंख्याकेसारेअभावद्वितीया
भावकेसमनियतहै औरविषमसंख्याकेसारेअभावप्रथमाभावकेसमनियतहैं तहांद्वितीयाभाव यद्यपिप्रथमाभावके
प्रतियोगिकेसमनियतहैं तथापिभावअभावकीएकतावनैनही यातैंघटकेसमनियतवीघटात्यंताभावाभावघटसेंपृथक्है
औरप्रथमाभावकेसमनियततृतीयाभावतोप्रथमाभावस्वरूपहैपृथक्नहीं काहेतेंघटोनास्तिऐसीनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयप्र
थमाभावहै औरघटात्यंताभावाभावोनास्तिऐसीनिषेधमुखप्रतीतिकाहीविषयतृतीयाभावहै यातैंतृतीयाभावप्रथमाभावरूपहै तैसें
घटात्यंताभावोनास्तिऐसीनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयद्वितीयाभावहै औरतृतीयाभावोनास्तिइसरीतिसेंचतुर्थाभाववीनिषेधमु
खप्रतीतिकाविषयहै यातैंद्वितीयाभावकेसमनियतचतुर्थाभावद्वितीयाभावरूपहै परंतुघटकेसमनियतवीद्वितीयाभावभावरूप
घटसेंपृथक्अभावरूपहै इसरीतिसेंप्रथमाभावऔद्वितीयाभावकेअंतर्भूतसारीअभावमालाहोवैहै अनवस्थादोषनहीं यद्यपिप्राचीन
रीतिसेंप्रतियोगीऔअभावकेअंतर्भूतसारेअभावहोवैहैं यातैंएकहीअभावमाननाहोवैहै नवीनरीतिसेंदोअभावमाननेहोवैहैं या
तैंनवीनमतमेंगौरवहै तथापिभावाभावकीएकतावनैनहीं यातैंप्राचीनमतप्रमाणविरुद्धहै औरनवीनमतअनुभवानुसारीहै यातैंप्र
माणसिद्धगौरवदोषकरनहीं इसरीतिसेंघटात्यंताभावकाअत्यंताभाववीअभावप्रतियोगिकअभावहै इसरीतिसेंअभावप्रतियोगि
कसंसर्गाभावकेउदाहरणकहेहैं औअभावप्रतियोगिकअन्योन्याभावकेउदाहरणअतिस्पष्टहैं जैसेंप्रागभावकाअन्योन्याभावप्रागभा
वमेंनहीं औरसकलपदार्थनमेंहै काहेतेंभेदकूंअन्योन्याभावकहेहैं स्वरूपमेंभेदरहेनहीं स्वरूपातिरिक्तसर्वमेंसर्वकाभेदरहेहै या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैंप्रागभावभिन्नपदार्थनमैंप्रागभावकाअन्योन्याभावहै प्रध्वंसाभावतैंभिन्नमैंप्रध्वंसाभावकाअन्योन्याभावहै अत्यंताभावसैंभिन्नमैंअत्यंताभावकाअन्योन्याभावहै अन्योन्याभावसैंभिन्नमैंअन्योन्याभावकाअन्योन्याभावहै अन्योन्याभावसैंभिन्नच्यारिप्रकारकासंसर्गाभावऔरसारेभावपदार्थहै काहेतैंसंसर्गाभावऔभावपदार्थअन्योन्याभावरूपनहीं यातैंअन्योन्याभावसैंभिन्नहै जोजासैंभिन्नहोवै तामैंतिसकाअन्योन्याभावहोवैहै यातैंसंसर्गाभावमैंऔरसकलभावपदार्थनमैंअन्योन्याभावकाअन्योन्याभावहै इसरीतिसैंपंचविधअभावमैंसामयिकाभावतोकेवलद्रव्यकाहीहोवैहै यातैंअभावप्रतियोगिकहैनहीं च्यारिअभावनकेअभावप्रतियोगिककेउदाहरणकहै अभावप्रतियोगिकअभावकूंकितनीजग्यामैंप्राचीनभावरूपमानैंहैं जैसैंघटप्रागभावकेध्वंसकूं घटरूपमानैंहैं घटध्वंसकेप्रागभावकूं घटमानैंहैं घटान्योन्याभावकेअत्यंताभावकूं घटत्वमानैंहैं घटात्यंताभावकेअत्यंताभावकूं घटमानैंहैं ताकाखंडनकन्यायातैंअभावप्रतियोगिकवीअभावहै औभावप्रतियोगिकअभावतोअतिप्रसिद्धहै इसरीतिसैंअभावकानिरूपणन्यायशास्त्रकीरीतिसैंकियाऔकहूंप्राचीनमतमैंवानवीनमतमैंदोषकहै सोवीन्यायकीमर्यादालेकेदोषकहेहैं औउक्तप्रकारसैंअभावकानिरूपणवेदांतशास्त्रसैंवीविरुद्धनहीं औजितनाअंशवेदांतविरुद्धहै सोदिखावैहै कपालमैंघटकेप्रागभावकूंअनादिकहैहै सोप्रमाणविरुद्धहै यातैंवेदांतकेअनुसारीनहीं काहेतैंघटप्रागभावकाअधिकरणकपालसादिऔप्रतियोगिघटवीसादिप्रागभावकूंअनादितकिसरीतिसैंहोवै औमायामैंसकलकार्यकेप्रागभावकूंअनादिताकहैतोसंभवैहै काहेतैंमायाअनादिहै परंतुमायामैंकार्यकाप्रागभावमाननाव्यर्थहै औसिद्धांतमैंइष्टवीनहीं काहेतैंघटकीउत्पत्तिकपालमैंहोवैहै अन्यमैंनहीं तैसैंपटकीउत्पत्तितंतुमैंहोवैहै क १८
पालमैंनहीं यातैंघटकाप्रागभावकपालमैंहै तंतुमैंनहीं पटकाप्रागभावतंतुमैंहै कपालमैंनहीं जाकाजिसमैंप्रागभावहै ताकीतिसमैंउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्पत्तिहोवैहै अन्यमें होवैनहीं सर्वसें सर्वकार्यकीउत्पत्तिप्रतिहोवै इसवासेतें प्रागभावका अंगीकारहै औ मुख्यप्रयोजन प्रागभावकानैयायि
कयहकहैहै कपालतंतुआदिकनके घटपटादिकपरिणामतोहैनहीं किंतुकपालमें घटका आरंभहोवैहै तंतुमें पटका आरंभहोवैहै औघ
टपटादिकहोवैंतबपूर्वकीन्याई कपालतंतुबीविद्यमानरहैहै जोपरिणामवादहोवैतोघटाकारकूंप्राप्तहुयांपाछैस्वरूपसेंकपालरहैनहीं
तैसेंपटाकारकूंप्राप्तहुयांपाछैतंतुरहैनहीं सोपरिणामवादतोहैनहीं आरंभवादहै कपालज्यूंकात्यूंरहैहै औअपनेंमेंघटकीउत्पत्तिक
रैहै जब घटउत्पन्नहोयलैवैतबबीघटकीसामग्रीपूर्वकीनांईबनीरहैहै परिणामवादमेंतोकार्यकीउत्पत्तिहुयांउपादानकारणरहैनहीं काहेतेंपरि
णामवादमेंउपादानकारणहीकार्यरूपकूंप्राप्तहोवैहै यातेंघटरूपकूंप्राप्तहुयांकपालघटकीसामग्रीनहीं औआरंभवादमेंउपादानका
रणअपनेंस्वरूपकूंत्यागैनहीं उपादानसेंभिन्नकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै अपनेंस्वरूपसेंउपादानकारणबन्यारहैहै यातेंघटकीउत्पत्तिहुयां
बीज्यूंकीत्यूंसामग्रीहोनेंतें फेरिघटकीउत्पत्तिचाहिये यद्यपिएकघटकीउत्पत्तिहुयांअन्यघटकीउत्पत्तिमेंतोप्रथमघटप्रतिबंधकहै
घटसेंनिरुद्धकपालमें अन्यघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं तथापिप्रथमउत्पन्नघटकीफेरिउत्पत्तिहुईचाहिये जोप्रथमउत्पन्नकीफेरिउत्पत्तिमा
नैंतौजैसेंउत्पत्तिकालमेंघटउत्पद्यतेयहव्यवहारहोवैहै तैसेंउत्पत्तिकालसेंउत्तरकालमेंबीघटउत्पद्यतेयहव्यवहारहुयाचाहियेसिद्ध
घटकाजोआधारकालसोघटकीउत्पत्तिकालसेंउत्तरकालहै सिद्धघटकेआधारकालमेंउत्पन्नोघटः यहव्यवहारहोवैहै औउत्पद्यतेघटः ऐसा
व्यवहारएकउत्पत्तिक्षणमेंहोवैहै घटकेआधारीभूततीयादिक्षणमेंउत्पद्यतेऐसाव्यवहारहोवैनहीं काहेतें वर्त्तमानउत्पत्तिवालाघटहै य
हअर्थघटःउत्पद्यतेयाकहनेंसेंप्रतीतहोवैहै उत्पन्नोघटःयाकहनेंतेंअतीतउत्पत्तिवालाघटहैयहअर्थप्रतीतहोवैहै उत्पन्नकीउत्पत्तिमा
नेंतौघटकीसिद्धदशामेंबीकोईउत्पत्तिवर्त्तमानरहैगी यातेंउत्पन्नघटमेंबीउत्पद्यतेघटःऐसाव्यवहारचाहिये यातेंउत्पन्नघटकीफेरिउत्पत्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं दूषनैतैं घटकीउत्पत्तिकीसामग्रीनहीं रहैहै औसामान्यांचाहिये तहांश्रोरसामग्रीकपालादिकतोहैं तिसघटकाप्रागभावनहीं रहैहै घटके
 प्रागभावकायटउत्पत्तिक्षणमें ध्वंसहोवैहै सोघटकाप्रागभावघटकीउत्पत्तिमेंकारणहै ताकेअभावतैंउत्पन्नघटकीफेरिउत्पत्तिहोवैनहीं यह
प्रागभावकामुख्यप्रयोजनहै सोमायामेंघटादिकनकेप्रागभावकाप्रथमप्रयोजनतोसंभवैनहीं काहेतैंघटादिकनकासाक्षात्उपादान
मायानहीं किंतुकपालादिकहै औमायाकूंसर्वपदार्थनकासाक्षात्उपादानतासिद्धांतपक्षमेंमानीहै तौवीकार्यकीउत्पत्तिमें दूसरेकारण
कीअपेक्षाकरैनहीं अद्भुतशक्तिमायामेंहै यातैंप्रागभावादिरूपअन्यकारणकीअपेक्षानहीं यातैंमायामेंकिसीकाप्रागभावनहीं औकपा
लमेंघटकीउत्पत्तिहोवैहै पटकीनहीं यामेंप्रागभावहेतुकह्यासोबीबनैनहीं कपालमेंघटकीकारणताहैपटकीनहीं काहेतैंअन्वयव्य
तिरेकसैंकारणताकाज्ञानहोवैहै औकपालकेअन्वयकहियेसत्ताहोवैतोघटकाअन्वयहोवैहै कपालकेव्यतिरेककहियेअभावतैंघटकाव्य
तिरेकहोवैहै इसरीतिसैंकपालकेअन्वयव्यतिरेकतैं घटकाअन्वयव्यतिरेकदेखियेहै पटकानहीं यातैंकपालमेंघटकीकारणताहै पटकीनहीं
इसवासतैंकपालसैंघटहीहोवैहै पटादिकहोवैनहीं पटादिकनकीव्यावृत्तिवासतैंघटकाप्रागभावकपालमेंसंभवैनहीं औजोमुख्यप्रयोजन
प्रागभावकाकह्याकपालमेंघटकीउत्पत्तिसैंअनंतरउत्पत्तिहुईचाहियेसोबीपरिणामवादमेंदोषनहीं काहेतैंस्वरूपसैंस्थितकपालघट
कीउत्पत्तिकरैहै कार्यरूपकूंप्राप्तहुयेकपालसैंघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं यातैंपरिणामवादमेंप्रागभावनिष्फलहै औविचारकरैंतोआरंभ
वादमैंबीप्रागभावनिष्फलहै काहेतैंघटकीउत्पत्तिहुयाफेरिउत्पत्तिहुईचाहियेजोऐसैंकहैंताकूंयहपूछ्याचाहिये घटांतरकीउत्पत्तिहुईचा
हिये अथवाजोघटजिसकपालमेंउपज्याहैतिसकीउत्पत्तिहुईचाहिये जोऐसैंकहै अन्यघटकीउत्पत्तिहुईचाहियेसोतोसंभवैन
हीं काहेतैंजिसकपालसैंजोघटहोवैहैतिसकपालमेंतिसीघटकीकारणताहै घटांतरकीकारणताकपालांतरमेंहै यातैंअन्यघटकीउत्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तिकी प्राप्ति नहीं औ जो ऐसें कहे जो घट पूर्व उपज्या है तिसकी उत्पत्ति होवैगी सो बी संभवै नहीं काहेतें जहां कपालसें घटकी उत्पत्ति होवै तहां प्रथम उत्पत्ति अन्य उत्पत्तिकी प्रतिबंधक है यातें फेरि उत्पत्तिकी प्रतीति नहीं प्रागभाव निष्फल है औ उत्पत्तिके स्वरूपका सूक्ष्म विचार करै तौ फेरि उत्पत्ति हुई चाहिये यह कथन हीं विरुद्ध है काहेतें आद्यक्षणसें संबंधकूं उत्पत्ति कहे हैं घटका आद्यक्षणसें संबंध घटकी उत्पत्ति कहिये है घटाधिकरणक्षणके ध्वंसका अनधिकरण जो क्षण सो घटका आद्यक्षण कहिये है घटके अधिकरण अनंतक्षण हैं तिनमें घटके अधिकरण जो द्वितीयादिक्षण तिनमें घटाधिकरण प्रथमक्षणका ध्वंस रहे है औ प्रथमक्षणमें घटाधिकरणक्षणका ध्वंस रहै नहीं यातें घटाधिकरणक्षणके ध्वंसका अनधिकरण घटका प्रथमक्षण है ताक्षणसें संबंध ही घटकी उत्पत्ति कहिये है द्वितीयादिक्षणसें प्रथमक्षणसें संबंध होवै नहीं यातें प्रथमक्षणमें हीं उत्पद्यते ऐसा व्यवहार होवै है द्वितीयादिक्षणमें नहीं इसरीतिसें प्रथमक्षणसंबंधरूप उत्पत्ति फेरि हुई चाहिये औ ऐसा कहना मम जननी वंध्या इस वाक्यतुल्य है काहेतें घटकी उत्पत्तिसें उत्तरक्षण घटाधिकरणके ध्वंसका अधिकरण ही होवैगा यातें घटाधिकरणक्षणके ध्वंसका अनधिकरणक्षण फेरि संभवै नहीं यातें उत्पन्नकी उत्पत्ति हुई चाहिये यह कहना विरुद्ध है इसरीतिसें प्रागभाव निष्फल है कपाले समवायेन घटो नास्ति या प्रतीतिका विषय सामयिकाभाव ही संभवै है औ कपाले घटो भविष्यति या प्रतीतिका विषय बी घटका भविष्यत् काल है प्रागभाव असिद्ध है औ अपनें शास्त्रके संस्कारसें नैयायिक प्रागभावकूं मानें तौ बी सादि मान्या चाहिये अनादि संभवै नहीं काहेतें अन्यमतमें तौ सारे अभावनका अधिकरणभेदसें भेद होवै है औ नैयायिकमतमें अधिकरणभेदसें अभावका भेद नहीं किंतु प्रतियोगिभेदसें अभावका भेद होवै है यातें एक प्रतियोगिक अभाव नाना अधिकरणमें एक ही होवै है परंतु प्रागभाव तौ नैयायिकमतमें बी अधिकरणभेदसें भिन्न ही होवै है काहेतें घटका प्रागभाव घटके उपादान कारण कपालमें

1515

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीरहैहै तिनमेंबीजोघटजिसकपालमेंहोवै ताघटकाप्रागभावतिसकपालमेंहै अन्यघटकाप्रागभावअन्यकपालमेंहै इसरीतिसें
एकप्रागभावएकहीअधिकरणमेंरहैहै सोकपालादिकप्रागभावकेअधिकरणसादिहैं तिनमेंरहनेवाला प्रागभावकिसीरीतिसेंअ
नादिसंभवैनहीं जोअनादिअधिकरणमेंऔसादिमें एकप्रागभावरहै ताहोवैतोअनादिकहनाबीसंभवैसो नानाअधिकरणमेंप्रा
गभावसंभवैनहीं यातेंकपालमात्रवृत्तिघटप्रागभावकूंअनादितासंभवैनहीं औजोऐसेंकहैहै कपालकीउत्पत्तिसेंपूर्वकपालकेअ
वयवनमेंघटकाप्रागभावरहैहै तिसतेंपूर्वअवयवकेअवयवनमेंरहैहै इसरीतिसेंअनादिपरमाणुमेंघटकाप्रागभावअनादिहैसो
संभवैनहीं काहेतेंअपनेंप्रतियोगिकेउपादानकारणमेंप्रागभावरहैहै अन्यमेंनहीं यहनैयायिकनकानियमहै कपालकेअवयवक
पालकेउपादानकारणहैं घटकेनहीं यातेंकपालावयवमेंकपालकाहीं प्रागभावसंभवैहै घटकाप्रागभावकपालमेंहीहै कपालावय
वमेंसंभवैनहीं इसरीतिसें परमाणुकेवलद्व्यणुककाउपादानकारणहै यातेंद्व्यणुककाप्रागभावहीपरमाणुमेंहीरहैहै द्व्यणुक
सेंआगेत्र्यणुकादिकघटपर्यंतकेप्रागभावपरमाणुमेंसंभवैनहीं औपरमाणुमेंद्व्यणुकभिन्नपदार्थनकाबीप्रागभावमानेंतोपर
माणुसेंबीघटकीउत्पत्तिहुईचाहिये औपरिणामवादमेंतोकार्यकारणकाअभेदहै यातेंद्व्यणुकसेंलेकेअंत्यावयवीघटपर्यंतका
र्यकारणधाराकाभेदनहीं तिसमतमेंतोपरमाणुमें द्व्यणुककाप्रागभावहीघटपर्यंतकार्यधाराकाप्रागभावहै यातेंपरमाणुमेंघटा
दिकनकेप्रागभावकहनासंभवैसो आरंभवादमेंकार्यकारणकाअभेदतोहैनहीं किंतुकार्यकारणकापरस्परअत्यंतभेदहै यातेंकपा
लावयवमेंघटकाप्रागभावनहीं तैसें परमाणुमेंद्व्यणुकके कार्यकाप्रागभावसंभवैनहीं इसरीतिसेंसादिकपालादिकनमेंघटादिक
नकेप्रागभावकूंअनादिताकथनअसंगतहै तैसेंनैयायिकमतमेंप्रध्वंसाभावबीअपनेंप्रतियोगिकेउपादानमेंहीरहैहै यातेंघ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

टकाध्वंसकपालमात्रवृत्तिहैसोअनंतहै यहकथनअसंगतहै घटध्वंसकाअधिकरणजोकपालताकेनाशतैंघटध्वंसकानाशहोवैहै औघटध्वंसकानाशमानेंनैयायिकयहदोषकहेहैं घटध्वंसकाध्वंसहोवैतौघटकाउज्जीवनहुयाचाहिये काहेतैंप्रागभावप्रध्वंसाभाव काअनाधारकालप्रतियोगिकाआधारहोवैहै यहनियमहै जाकालमैंघटध्वंसकाध्वंसहोवैसोकालघटध्वंसकाअनाधारहोवैगा औ प्रागभावकाअनाधारहोवैगा यातैंघटकाआधारहोवैगा इसरीतिसैंध्वंसकाध्वंसमानेघटादिकप्रतियोगीकाउज्जीवनहोवैगा यहदोषचीनहीं काहेतैंप्रागभावकूंअनादिताऔध्वंसकूंअनंततामानैतोउक्तनियमकीसिद्धिहोवै औउक्तनियममानैतोप्राग भावकूंअनादिताकीऔध्वंसकूंअनंतताकीसिद्धिहोवै औसिद्धांतपक्षमैंप्रागभावसादिहै यातैंप्रागभावकीउत्पत्तिसैंपूर्वकाल घटकेप्रागभावकाऔघटकेध्वंसकाअनाधारहै घटकाआधारनहीं अथवासुखसिद्धांतमैंसर्वथाप्रागभावकाअंगीकारनहीं यातैंघटकीउत्पत्तिसैंपूर्वकालघटकेप्रागभावकाअनाधारहै औघटकेध्वंसकाअनाधारहै घटरूपप्रतियोगीकाअनाधारहै घट रूपप्रतियोगीकाआधारनहीं यातैंप्रागभावध्वंसकाअनाधारकालप्रतियोगीकाआधारहोवैहै यहनियमसंभवैनहीं यातैंघटध्वंस काबीध्वंसहोवैहै औउक्तनियमकीअसिद्धिसैंघटकाउज्जीवनहोवैनहीं तैसैंअन्योन्याभावबीसादिसांतअधिकरणमैंसादिसां तहै जैसैंघटमैंपटकाअन्योन्याभावहै ताकाअधिकरणघटहैसोसादिहै औसांतहै यातैंघटवृत्तिपटान्योन्याभावबीसादिसांतहै अनादिअधिकरणमैंअन्योन्याभावअनादिहै परंतुअनादिबीसांतहैअनंतनहीं जैसैंब्रह्ममैंजीवकाभेदहै सोजीवकाअन्योन्याभावहै ताकाअधिकरणब्रह्महैसोअनादिहै यातैंब्रह्ममैंजीवकाभेदरूपअन्योन्याभावअनादिहै औब्रह्मज्ञानसैंअज्ञाननिवृत्तिद्वाराभेद काअंतहोवैहै यातैंसांतहै अनादिपदार्थकीबीज्ञानसैंनिवृत्तिअद्वैतवादमैंइष्टहै इसीवास्तेसुद्धचेतन१जीव२ ईश्वर३ अविद्या४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अविद्याचेतनकासंबंध ५ अनादिकापरस्परभेद ६ येषट्पदार्थअद्वैतमतमेंस्वरूपसें अनादिकहेहैं औरकछुचेतनविनापांचकोज्ञान
सेंनिवृत्तिमानेहै यामेंयहशंकाहोवैहै जीवईश्वरकूं अद्वैतवादमेंमायिककहेहैं मायाकाकार्यमायिककह्यैयेहैं जीवईशमायाकेकार्य
हैं औअनादिहैंयहकहनाविरुद्धहै ताशंकाकायहसमाधानहै जीवईशमायाकेकार्यहैं यहमायिकपदकाअर्थनहींहै किंतुमाया
कीस्थितिकेअधीनजीवईशकीस्थितिहै मायाकीस्थितिविनाजीवईशकीस्थितिहोवैनहीं यातेंमायिकहैंऔमायाकीनांईअनादिहैं
इसरीतिसें अनादिअन्योन्याभाववीसांतहै अन्योन्याभावअनंतनहीं तैसेंअत्यंताभाववीआकाशादिकनकीनांईअविद्याकाका
र्यहै औविनाशीहै इसरीतिसें अद्वैतवादमेंसारेअभावविनाशीहैं कोईअभावनित्यनहीं औअद्वैतवादमेंअनात्मपदार्थसारेमाया
काकार्यहैं यातेंआत्मभिन्नकूंनित्यतासंभवैनहीं जैसेंघटादिकभावपदार्थमायाकेकार्यहै तैसेंअभाववीमायाकेकार्यहैं यद्यपि
अद्वैतवादमेंमायाकूंभावरूपकहेहैं यातेंअभावपदार्थकोउपादानतामायाकूंसंभवैनहींकार्यके सजातीयउपादानहोवैहै अभा
वकेसजातीयमायानहीं किंतुमायाऔअभावभावत्वअभावत्वसेंविजातीयहैंमायामेंभावत्वहैं औअभावमेंअभावत्वहै तथापिसकलअ-
भावनकाउपादानमायाहीहै काहेतेंअनिर्वचनीयत्वमिथ्यात्वज्ञाननिवर्त्यत्वअनात्मत्वादिकधर्मनतेंमायाऔअभावसजातीयहैं
औसकलधर्मनसेंउपादानऔकार्यकीसजातीयताकहैतौघटकपालमेंवीघटत्वकपालत्वविजातीयधर्महोनेतेंघटकाउपादा
नकपालनहींहोवैगा जैसेंमृन्मयत्वादिकधर्मनसेंघटकपालसजातीयहै तैसेंअनिर्वचनीयत्वादिकधर्मनसेंअभावमायावीस
जातीयहैं यातेंसकलअभावमायाकेकार्यहैं यातेंमिथ्याहै औकोईग्रंथकारअद्वैतवादीएकअत्यंताभावकूंमानेहै औरअभावनकूंअलीककहेहैं जे
सेंघटकाप्रागभावकपालमेंकहेहैं सोअलीकहै काहेतेंघटकीउत्पत्तिसेंपूर्वकालसंबंधीकपालहीघटोभविष्यतियाप्रतीतिकाविषयहै घ-

1518

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

टकाप्रागभावअप्रसिद्धहै जैसें मुद्गरादिकनसैंचूर्णीकृतकपाल अथवाविभक्तकपालनसैंपृथक् घटध्वंसवीअप्रसिद्धहै जैसें घटासंबंधीभू
तलहीघटकासामयिकाभावहै घटहोवैतवघटकासंबंधीभूतलहै यातें घटासंबंधीभूतलनहीं इसरीतिसें सामयिकाभावअधिकरणसें पृथ
क्नहीं जैसें घटसेंपटकेभेदकूं घटवृत्तिपटान्योन्याभावकहैहैं सोदोनूंकेअभेदकाअत्यंताभावरूपहै दोपदार्थनकेअभेदात्यंताभावसें पृ
थक्अन्योन्याभावअप्रसिद्धहै इसरीतिसें एकअत्यंताभावहीहै और कोईअभावनहीं इसरीतिसें अभावकेनिरूपणमें बहुतविचारहै ग्रंथवृद्धिके
भयतें रीतिमात्रजनाईहै अभावकास्वरूपनिरूपणकियातामें प्रमाणनिरूपणकरियेहै अभावकाज्ञानदोप्रकारकाहै एकभ्रमरूपहै दूजा
प्रमारूपहै भ्रमज्ञानवीप्रमाकीनाईप्रत्यक्षपरोक्षभेदसेंदोप्रकारकाहै घटवालेभूतलमें इंद्रियकासंयोगहुयेवी किसीप्रकारतें घटकीउ
पलब्धिनहोवै तहांघटाभावकाप्रत्यक्षभ्रमहोवैहै परंतुविषयविनाप्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं अन्यथाख्यातिवादीकेमतमेंतोभ्रमप्र-
त्यक्षमेंविषयकीअपेक्षानहीं किंतुअन्यपदार्थकाअन्यरूपतेंज्ञानकूंअन्यथाख्यातिकहेंहैं यातेंजापदार्थकाअन्यरूपतेंज्ञानहोवै
तिसकीतोअपेक्षाहै जैसें रज्जुकासर्पत्वरूपतेंज्ञानहोवैहै तामेंरज्जुकीअपेक्षाहै तथापिजिसविषयकाज्ञानमेंआकारप्रतीतहोवै
तिसकीअपेक्षाअन्यथाख्यातिवादीकेमतमेंनहीं जैसें सर्पकाआकारभ्रममेंभासैहै ताकीअपेक्षानहीं तथापिसिद्धांतमेंअनि
र्वचनीयख्यातिहै जहांप्रत्यक्षभ्रमहोवै तहांभ्रमज्ञानकीनांईअनिर्वचनीयविषयकी वीउत्पत्तिहोवैहै यातें व्यावहारिकघटवा
लेभूतलमेंप्रातिभासिकघटाभावअनिर्वचनीयउपजैहै व्यावहारिकघटका व्यावहारिकघटाभावतें विरोधहै प्रातिभासिकघ
टाभावतें व्यावहारिकघटकाविरोधनहीं यातें व्यावहारिकघटवालेभूतलमें अनिर्वचनीयघटाभावऔरताकाअनिर्वचनीय
ज्ञानदोनूंउपजैहैं तहांघटाभावकाप्रत्यक्षभ्रमकहियेहै जहांअंधकूंविप्रलंभकवचनतें घटवालेभूतलमें घटाभावकाज्ञानहो

वैसो अभावका परोक्षभ्रमहै परोक्षज्ञानमें विषयकी अपेक्षा नहीं काहेतें अतीत औ अनागतका वी परोक्षज्ञान होवैहै यातें अभाव काजहां परोक्षभ्रम होवै तहां प्रातिभासिक अभावकी उत्पत्ति होवै नहीं केवल अभावाकार वृत्तिरूप ज्ञानकी ही उत्पत्ति होवैहै अथवा परोक्षभ्रमकी नांई जहां अभावका प्रत्यक्षभ्रम होवै तहां वी प्रातिभासिक अभावकी उत्पत्ति होवै नहीं किंतु अभावका भ्रम अन्यथाख्याति रूपहै काहेतें रज्जु आदिकनमें सर्पादिभ्रमकूं अन्यथाख्याति रूप मानैं तौ यह दोषहै रज्जुमें सर्पत्व धर्मकी प्रतीतिकूं अन्यथाख्याति कहैहैं सो संभवै नहीं काहेतें इंद्रियका संबंध रज्जुसें औ रज्जुत्वसें है सर्पत्वसें इंद्रियका संबंध नहीं औ विषयतें संबंध विना इंद्रिय जन्यज्ञान होवै नहीं यातें रज्जुका सर्पत्वधर्मसें प्रतीतिरूप अन्यथाख्याति संभवै नहीं इस रीतिसें प्रत्यक्षभ्रमस्थलमें अन्यथाख्याति का निषेध करिके अनिर्वचनीयख्याति मानीहै ताकी रीति पूर्व कही है परंतु जहां अधिष्ठान औ आरोप्य दोनूं इंद्रियसंबंधी होवैं तहां उक्त दोष संभवै नहीं यातें सिद्धांतग्रंथनमें वी तहां अन्यथाख्याति ही लिखीहै जैसें पुष्पके उपरि धरे स्फटिकमें रक्तताका प्रत्यक्षभ्रम होवैहै तहां पुष्पकी रक्ततासें वी नेत्रका संयुक्तसमवाय अथवा संयुक्ततादात्म्य संबंधहै औ स्फटिकसें नेत्रका संयोगसंबंधहै तहां रक्तता आरोप्यहै औ स्फटिक अधिष्ठानहै तहां पुष्पकी व्यावहारिक रक्तता स्फटिकमें प्रतीत होवैहै स्फटिकमें अनिर्वचनीय रक्तताकी उत्पत्ति होवै नहीं काहेतें जो रक्ततासें सर्पत्वकी नांई नेत्रका संबंध नहीं होता तौ विषयतें संबंध विना इंद्रियजन्य ज्ञान होवै नहीं यह दोष होता नेत्रसें रक्तताका संबंध होनेतें उक्त दोष संभवै नहीं यातें आरोप्यके सन्निधानस्थलमें अन्यथाख्याति ही संभवैहै तैसें घटवाले भूतलमें घटाभावभ्रम होवै तहां आरोप्य अधिष्ठानका सन्निधान होनेतें आरोप्यसें वी अधिष्ठानकी नांई इंद्रियका संबंधहै काहेतें अधिष्ठान भूतल है औ आरोप्य घटाभाव भूतलमें तौ नहीं है परंतु भूतलवृत्ति भूतल-

त्वमें घटाभावहै औभूतलवृत्तिजोरूपरसस्पर्शादिगुणहैं तिनमें घटाभावहै भूतलत्वमें औभूतलकेरूपादिकगुणनमें घटकासंयोगक
दीवीहोवैनहीं काहेतें दोद्रव्यनकासंयोगहोवैहै घटतोद्रव्यहै भूतलत्वद्रव्यनहीं किंतुजातिहै तासें घटकासंयोगसंभवैनहीं भूतल
केरूपरसस्पर्शादिकवीद्रव्यनहीं किंतुगुणहैं तिनमेंवी घटकासंयोगसंभवैनहीं औजामेंजाकासंयोगसंबंधनहींहोवैतातिसमेंतिस
पदार्थकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहोवैहै इसरीतिसैंभूतलमेंसंयोगसंबंधतेंघटहोतेंवीभूतलत्वमें औभूतलकेगुणन
मेंसंयोगसंबंधतेंघटनहींहोनेतें संयोगसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावहै तहांअधिष्ठानभूतलहै औआरोप्यघटात्यंताभावहै ता
काभूतलसैंस्वाधिकरणसमवायसंबंधहै स्वकहियेघटात्यंताभावताकाअधिकरणभूतलत्वऔभूतलकेरूपादिगुणतिनकास
मवायभूतलमेंहै औभूतलकाघटात्यंताभावसैंस्वसमवेतवृत्तित्वसंबंधहै स्वकहियेभूतलतामेंसमवेतकहियेसमवायसंबंधसैंर
हनेवालेभूतलत्वऔगुणतिनमेंवृत्तित्वकहिये आधेयताअत्यंताभावकीहै इसरीतिसें आरोप्यअधिष्ठानकेपरस्परसंबंधहोनेतेंसं
न्निधानहै यातेंभूतलत्ववृत्तिऔरूपस्पर्शादिवृत्तिजोव्यावहारिकघटात्यंताभावताकीभूतलमेंप्रतीतिहोनेतेंअभावकाभ्रमअन्य-
थाख्यातिरूपहै प्रातिभासिकअभावकीउत्पत्तिनिष्प्रयोजनहै इसरीतिसें प्रत्यक्षपरोक्षभेदसें अभावभ्रमदोप्रकारकाहै तैसें
अभावकीप्रमावीप्रत्यक्षपरोक्षभेदसेंदोप्रकारकीहै नैयायिकमतमेंतोइंद्रियजन्यज्ञानकूंअपरोक्षज्ञानकहैहै तासेंभिन्नज्ञान
कूंपरोक्षज्ञानकहैहै औअभावसैंवीइंद्रीयकाविशेषणता अथवा स्वसंबद्धविशेषणता संबंधजहांहोवै तहांअभावकीप्रत्यक्षप्र
माऔपरोक्षप्रमाकहियेहैं जैसेंश्रोत्रसैंशब्दाभावकाविशेषणतासंबंधहै तहांशब्दाभावकीश्रोत्रजन्यप्रत्यक्षप्रमाहै तैसेंभू
तलमेंघटाभावहोवै तहांनेत्रसंबंधभूतलमेंविशेषणतासंबंधअभावकाहोनेतें नेत्रजन्यप्रत्यक्षप्रमाघटाभावकीहोवैहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परंतुपुरुषशून्यभूतलमेंजहांस्थाणुमेंपुरुषभ्रमहोवेहै तहांपुरुषाभावहै औपुरुषाभावतेंनेत्रकास्वसंबद्धविशेषणतासंबं
धवीहै तथापिपुरुषाभावकाप्रत्यक्षहोवेनहीं यातेंअभावकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकरणहै प्रतियोगीकाअनुपलंभसहकारीहै जहांस्था
णुमेंपुरुषभ्रमहोवेतहांप्रतियोगीकाअनुपलंभनहींहै किंतुपुरुषरूपप्रतियोगीकाउपलंभकहियेज्ञानहै जैसें घटादिकद्रव्य
केचाक्षुषप्रत्यक्षमेंनेत्रकरणहै औअंधकारमेंघटकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवेनहीं यातेंनेत्रजन्यचाक्षुषप्रत्यक्षमेंआलोकसंयोगस
हकारीहै यातेंअंधकारस्थघटहोवे तहांनेत्रइंद्रियहै औनेत्रइंद्रियकाघटसेंसंयोगवीहै तथापिघटकाआलोकसेंसंयोग
रूपसहकारीनहीं यातेंअंधकारस्थघटकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवेनहीं चाक्षुषप्रत्यक्षमें आलोकसंयोगसहकारीहै तहांइंद्रि
यसेंआलोककासंयोगहेतुनहीं किंतुविषयसेंआलोकसंयोगहेतुहै यातेंप्रकाशमेंस्थितपुरुषकूंअंधकारस्थघटकाप्रत्यक्षहो
वेनहीं तहां इंद्रियसेंतोआलोकसंयोगहैविषयजोघटतासेंआलोकसंयोगनहीं औअंधकारस्थपुरषकूंप्रकाशस्थघटकाप्र
त्यक्षहोवेहै तहांइंद्रियसेंतोआलोककासंयोगनहींहै विषयनेंआलोककासंयोगहै यातेंविषयऔआलोकसंयोगनेत्रजन्य
ज्ञानमेंसहकारीहै तथापिघटकेपूर्वदेशमेंआलोककासंयोगहोवे पश्चिमदेशमेंनेत्रकासंयोगहोवे तहांघटकाचाक्षुषप्रत्य
क्षहोवेनहींहुयाचाहिये काहेतेंविषयनेंआलोककासंयोगरूपसहकारीहै औसंयोगरूपव्यापारवालानेत्रइंद्रियकरणवीहै
यातेंजिसघटकेदेशमेंनेत्रकासंयोगहोवेतिसीदेशमेंआलोकसंयोगसहकारीहै यहमान्याचाहिये दीपसूर्यादिकनकीप्र
भाकूंआलोककहैहैं जैसेंद्रव्यकेचाक्षुषप्रत्यक्षमेंआलोकसंयोगसहकारीहै तैसेंअभावकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकरणहै औप्र २३
तियोगीकाअनुपलंभसहकारीहै यातेंस्थाणुमेंपुरुषभ्रमहोवे तहांपुरुषाभावकाप्रत्यक्षहोवेनहीं तैसेंजहांभूतलमेंघ

1522

टनहीं होवै औ घटकेसदृश अन्यपदार्थधऱ्याहोवै तामें घटभ्रमहोयजावै ताभूतलमें घटाभावहै औ घटाभाववैसें इंद्रियकास्वसंबद्ध विशेषणता संबंधवीहै काहेतें घटकालोभ्रमहुयाहै औ घटहैनहीं किंतु घटाभावहै ताकाभूतलमेंविशेषणतासंबंधहै तिसभूतलसें इंद्रियकासंयोगहै यातें इंद्रियसंबद्ध कहिये इंद्रिसें संबंद्धवाले भूतलमें अभावकाविशेषणतासंबंधहै यातें संबंधरूपव्यापारवाला इंद्रियकरणतोहै प्रतियोगीकाअनुपलंभसहकारीनहीं काहेतेंज्ञानकूंउपलंभकहैहैं सोज्ञानभ्रमहोवै अथवाप्रमाहोवै यामेंविशेषनहीं जहां घटकाभ्रमहोवैतहां घटाभावकाप्रतियोगीजोघटताकाअनुपलंभनहीं किंतुभ्रमरूपउपलंभकहियेज्ञानहै इसरीतिसें अभावके प्रत्यक्षमें इंद्रियकरणहै औ प्रतियोगीका अनुपलंभसहकारीहै केवलप्रतियोगीके अनुपलंभकूं सहकारी कहैं तौ वीनिर्वाहहोवैनहीं काहेतें स्तंभमें पिशाचकाभेदतोप्रत्यक्षहै औ स्तंभमें पिशाचका अत्यंताभावप्रत्यक्षनहीं यह स्तंभपिशाचनहीं ऐसा अनुभव सर्वलोकनकूं होवैहै औ स्तंभमें पिशाचनहींहै ऐसानिश्चयहोवैनहीं तहां प्रथम अनुभवकाविषयस्तंभवृत्तिपिशाचान्योन्याभावहै औ द्वितीय अनुभवकाविषयपिशाचात्यंताभावहै दोनूं अभावनकाप्रतियोगीपिशाचहै ताका अनुपलंभहै औ इंद्रियसंबद्ध स्तंभहै तामें पिशाचान्योन्याभाव औ पिशाचात्यंताभाव दोनूं विशेषणतासंबंधसें रहैहैं यातें पिशाचान्योन्याभावकी नांई पिशाचात्यंताभावका-प्रत्यक्षहुयाचाहिये तैसें आत्मामें सुखाभावदुःखाभावकाप्रत्यक्षहोवैहै औ धर्माभावअधर्माभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं यह वार्ता सर्वकें अनुभवसिद्धहै इदानीं मयि सुखं नास्ति इदानीं मयि दुःखं नास्ति इसरीतिका अनुभवसर्वकूं होवैहै सो अनुभवन्यायमतमें मानसप्रत्यक्षरूपहै मनका सुखाभावतें औ दुःखाभावतें स्वसंयुक्तविशेषणतासंबंधहै काहेतें स्वकहिये मन तासें संयुक्त कहिये संयोगवाला आत्मा तामें विशेषणतासंबंधसें सुखाभावदुःखाभावरहैहै तैसें धर्माभावअधर्माभावसेंवीमनकास्वसंयुक्तविशेषणता

1523

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति· संबंध है तथापि प्रत्यक्ष होवै नहीं मयि धर्मो नास्ति मयि अधर्मो नास्ति ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव किसीकूं होवै नहीं औ सुखाभाव दुःखाभावके प्रतियोगी सुखदुः प्र·
२५ खहैं तिनका जैसें अनुपलंभ अभावकालमें होवै है तैसें धर्माभाव अधर्माभावके प्रतियोगी जो धर्म अधर्म तिनकावी अनुपलंभ होवै है यातें प्रतियोगिका अनुप ६
लंभरूप सहकारीसहित मनसें सुखाभाव दुःखाभावका प्रत्यक्ष होवै है तैसें धर्माधर्मरूप प्रतियोगीका अनुपलंभरूप सहकारीसहित मनसें धर्माधर्मके अभावका
वी प्रत्यक्ष हुया चाहिये तैसें वायुमें रूपाभाव प्रत्यक्ष है औ गुरुत्वाभाव प्रत्यक्ष नहीं है रूपाभावका प्रतियोगी रूप है गुरुत्वाभावका प्रतियोगी गुरुत्व है तिन दोनूंका
वायुमें अनुपलंभ है औ नेत्रका वायुसें संयोगसंबंध होवै है नेत्रसंयुक्त वायुमें रूपाभाव गुरुत्वाभाव विशेषणतासंबंधसें रहे है यातें स्व
संबद्ध विशेषणतासंबंधसें जैसें वायुमें रूपाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष होवै है तैसें स्वसंबद्ध विशेषणतासंबंध गुरुत्वाभावसेंवी नेत्रका है या
तें वायौ रूपं नास्ति इस चाक्षुषप्रतीतिकी नांई वायौ गुरुत्वं नास्ति ऐसी चाक्षुषप्रतीतिवी हुई चाहिये यातें इंद्रियजन्य अभावके प्रत्यक्ष
में केवल अनुपलंभ सहकारी नहीं है किंतु योग्यानुपलंभ सहकारी है वायुमें अनुपलंभ जैसें रूपका है तैसें गुरुत्वकावी अनुपलंभ है प
रंतु योग्यानुपलंभ रूपका है गुरुत्वका योग्यानुपलंभ नहीं काहेतें प्रत्यक्षयोग्यकी अप्रतीतिकूं योग्यानुपलंभ कहै हैं रूप तो प्रत्यक्षयोग्य है
औ गुरुत्व प्रत्यक्षयोग्य नहीं काहेतें तराजूके ऊर्ध्वादिभावसें गुरुत्वकी अनुमिति होवै है किसी इंद्रियसें गुरुत्वका ज्ञान होवै नहीं यातें प्रत्यक्ष
योग्य गुरुत्व नहीं होनेतें ताका अनुपलंभ योग्यानुपलंभ नहीं तैसें आत्मामें सुखाभाव दुःखाभावका मानसप्रत्यक्ष होवै है तहांवी प्रत्यक्ष
योग्य सुखका अनुपलंभ औ प्रत्यक्षयोग्य दुःखका अनुपलंभ होनेतें योग्यानुपलंभ सहकारीका संभव है औ धर्माभाव अधर्माभावका
आत्मामें मानसप्रत्यक्ष होवै नहीं तहांवी धर्माधर्मरूप प्रतियोगीका अनुपलंभ तौ है परंतु धर्माधर्म केवल शास्त्रवेद्य हैं प्रत्यक्षयोग्य नहीं २५
यातें धर्माधर्मका योग्यानुपलंभ नहीं ताके अभावतें धर्माभाव अधर्माभावका मानसप्रत्यक्ष होवै नहीं तैसें स्तंभमें पिशाचात्यंताभावका

1524

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्यक्षहोवैनहीं तहांबीपिशाच रूपप्रतियोगीकाअनुपलंभतोहै परंतुप्रत्यक्षयोग्यपिशाचनहीं यातैंयोग्यानुपलंभनहीं प्रत्यक्षयोग्यप्र
तियोगीकेअनुपलंभकूंयोग्यानुपलंभकहैहैं पिशाचात्यंताभावकाप्रतियोगीजोपिशाचसोप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातैंपिशाचकाअनुपलंभ
योग्यानुपलंभनहीं यामैंयहशंकारहैहै स्तंभमैंपिशाचकाभेदबीप्रत्यक्षनहींचाहिये काहेतैंपिशाचान्योन्याभावकूंपिशाचभेदकहैहै
ताकाप्रतियोगीबीपिशाचहैसोप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातैंयोग्यानुपलंभकेअभावतैंपिशाचात्यंताभावकीनांईपिशाचान्योन्याभावबीअ
प्रत्यक्षहुयाचाहिये जोसिद्धांतीऐसेंकहैउक्तरूपयोग्यानुपलंभनहींहै किंतुप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमैंप्रतियोगीकेअनुपलंभकूंयो
ग्यानुपलंभकहैहैं प्रतियोगीचाहैप्रत्यक्षयोग्यहोवै अथवाअप्रत्यक्षहोवै अभावकाअधिकरणप्रत्यक्षयोग्यचाहिये तामैंप्रतियो
गीकाअनुपलंभचाहियेस्तंभसैंजोपिशाचान्योन्याभावताकाप्रतियोगीपिशाचहै सोतौप्रत्यक्षयोग्यनहींहै औतामैंप्रत्यक्षयोग्यता
कीअपेक्षाबीनहीं तथापिपिशाचान्योन्याभावकाअधिकरणस्तंभहै सोप्रत्यक्षयोग्यहोनेतैंयोग्यानुपलंभकासद्भावहै यातैंपिशाचकाअ-
न्योन्याभावस्तंभमैंप्रत्यक्षसंभवैहै सिद्धांतिकायहसमाधानसंभवैनहीं काहेतैंउक्तरीतिसैंयहसिद्धहोवैहै अभावकाप्रतियोगि प्रत्यक्ष
योग्यहोवै अथवाप्रत्यक्षकेअयोग्यहोवै जहांअभावकाअधिकरणप्रत्यक्षयोग्यहोवैतामैंप्रतियोगीकाअनुपलंभहोवै औसोयोग्या
नुपलंभअभावकेप्रत्यक्षमैंसहकारीहै ऐसाअर्थमानेंस्तंभमैंपिशाचात्यंताभावबीप्रत्यक्षहुयाचाहिये तैसेंआत्मामैंधर्माभा
वअधर्माभावबीप्रत्यक्षहुयाचाहिये काहेतैंस्तंभवृत्तिपिशाचात्यंताभावकाअधिकरणस्तंभहैसोप्रत्यक्षयोग्यहै आत्मवृत्ति
धर्माभावअधर्माभावकाअधिकरणआत्माप्रत्यक्षयोग्यहै परंतुइतनाभेदहैस्तंभतोबाह्यइंद्रियजन्यप्रत्यक्षयोग्यहै यातैंस्तंभमैंपिशा
चात्यंताभावकाबाह्यइंद्रियजन्यप्रत्यक्षहुयाचाहियेऔआत्मामानसप्रत्यक्षयोग्यहै यातैंआत्मामैंधर्माभावअधर्माभावकामानस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति· प्रत्यक्षहुयाचाहिये औवायुकूंप्रत्यक्षयोग्यतामानैंतौ वायुवृत्तिगुरुत्वाभावकाप्रत्यक्षहुयाचाहिये औवायुकूंप्रत्यक्षयोग्यतानहींमानैंतौ प्र·
२५ वायुवृत्तिरूपाभावकाबीप्रत्यक्षनहींहुयाचाहिये औवायुमेंरूपाभावप्रत्यक्षहै यहसिद्धांतहै औअनुभवसिद्धहै यहअर्थआगेंस्पष्ट ६
होवैगा औजौसिद्धांतीइसरीतिसेंसमाधानकरै योग्यानुपलंभदोप्रकारकाहै एकतौप्रत्यक्षयोग्यप्रतियोगीकाअनुपलंभयोग्यानुपलंभ
है औदूसराप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमेंप्रतियोगीकाअनुपलंभयोग्यानुपलंभहै अत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंप्रथमयोग्यानुपलंभसहकारी
है यातेंअधिकरणतौप्रत्यक्षयोग्यहोवै अथवाअयोग्यहोवै जिसअत्यंताभावकाप्रतियोगीप्रत्यक्षयोग्यहोवैताकाअनुपलंभअत्यं
ताभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहै औअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंद्वितीयायोग्यानुपलंभसहकारीहै यातेंअन्योन्याभावकाप्रतियोगीप्रत्यक्षयोग्य
होवै अथवाअयोग्यहोवैप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमेंप्रतियोगीकाअनुपलंभअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहै यातेंकहूंबीदोषन
हीं स्तंभमेंपिशाचात्यंताभावकाप्रतियोगीपिशाचप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातेंस्तंभवृत्तिपिशाचात्यंताभावअप्रत्यक्षहै औस्तंभवृत्तिपिशा
चान्योन्याभावकाअधिकरणस्तंभहैसोप्रत्यक्षहै यातेंस्तंभमेंपिशाचान्योन्याभावप्रत्यक्षहै आत्मवृत्तिसुखात्यंताभावदुःखात्यंताभाव
केप्रतियोगीसुखदुःखमानसप्रत्यक्षयोग्यहैं तिनकेअत्यंताभावनकामानसप्रत्यक्षहोवैहै धर्मअधर्मप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातेंतिनकेअ
त्यंताभावनकाप्रत्यक्षहोवैनहीं रूपगुणतौप्रत्यक्षयोग्यहै यातैंवायुमेंरूपात्यंताभावकाप्रत्यक्षहोवैहै गुरुत्वगुणप्रत्यक्षयोग्यनहीं
यातेंवायुमेंगुरुत्वात्यंताभावप्रत्यक्षनहीं इसरीतिसेंयहअर्थसिद्धहुयाअधिकरणमेंप्रत्यक्षयोग्यताऔप्रतियोगीकाअनुपलंभअन्यो
न्याभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहैं औप्रतियोगीमेंप्रत्यक्षयोग्यताऔप्रतियोगीकाअनुपलंभअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहैं ऐसानिय २५
मसिद्धांतीकहैंसोबीसंभवैनहीं काहेतें अन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंअधिकरणकीयोग्यताहेतु होवैतौवायुमेंरूपवद्भेदकाप्रत्यक्षहोवैहै सो

1526

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहींहुयाचाहियेवायुरूपवान्नऐसाप्रत्यक्षसर्वकूंहोवेहै औवक्ष्यमाणरीतिसेंऐसाप्रत्यक्षसंभवेहै तहांअन्योन्याभावकाअधिकरण
वायुहैसोप्रत्यक्षयोग्यनहीं औवायुकूंआग्रहसेंप्रत्यक्षयोग्यतामानेतौवायुमेंगुरुत्ववच्छेदकावीप्रत्यक्षहुयाचाहिये औवायुर्गुरुत्व
वान्नऐसाप्रत्यक्षकिसीकूंहोवेनहीं वक्ष्यमाणरीतिसेंसंभवेवीनहीं औस्तंभमेंपिशाचवच्छेदअप्रत्यक्षहै अन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमें अधिकर
णकीयोग्यताहेतुहोवेतौपिशाचवच्छेदकाअधिकरणस्तंभहैताकूंप्रत्यक्षयोग्यताहोनेतेंपिशाचवदन्योन्याभावरूपपिशाचवच्छेदप्रत्यक्ष
हुयाचाहिये औस्तंभःपिशाचवान्नऐसाप्रत्यक्षहोवेनहीं यातेंप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमेंप्रतियोगीकाअनुपलंभरूपयोग्यानुपलंभअन्यो
न्याभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहैं यहनियमसंभवेनहीं तैसेंअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंप्रतियोगीकीयोग्यताकूंसहकारीमानेंतोजलपरमा
णुमेंपृथिवीत्वात्यंताभावकाप्रत्यक्षहुयाचाहिये काहेतेंजलपरमाणुवृत्तिपृथिवीत्वकेअत्यंताभावकाप्रतियोगीपृथिवीत्वहैताकाघटादि
कनमेंचाक्षुषप्रत्यक्षहोवेहै यातेंप्रत्यक्षयोग्यप्रतियोगीहै औताकाजलपरमाणुमेंउपलंभकहियेप्रतीतिहोवेनहीं यातेंअनुपलंभहै
औजलपरमाणुसेंनेत्रकासंयोगहोवेहै यातेंजलपरमाणुवृत्तिपृथिवीत्वात्यंताभावसेंनेत्रकास्वसंयुक्तविशेषणतासंबंधवीहै औजो
ऐसेंकहैहैपरमाणुनिरवयवहै तासेंनेत्रकासंयोगसंभवेनहीं काहेतेंपदार्थकेएकदेशमेंसंयोगहोवेहै अवयवकूंदेशकहैहैं परमाणुके
अवयवरूपदेशसंभवेनहीं सकलपरमाणुमेंसंयोगकहैंतौअव्याप्यवृत्तिसंयोगकास्वभावनहींहोवेगा एकदेशमेंहोवे एकदेशमेंन-
हींहोवे सोअव्याप्यवृत्तिकहियेहै यातेंपरमाणुसेंनेत्रकासंयोगहोवेनहीं सोसंभवेनहीं काहेतेंपरमाणुकासंयोगनहींहोवेतौद्व्यणुकन
हींहोवेगा औपरमाणुमेंमहत्त्वात्यंताभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवेहै सोनहींहोवेगा परमाणुमेंमहत्त्वाभावकाप्रत्यक्षहोवेहै यहआगे
स्पष्टहोवेगा यातेंनेत्रसंयुक्तविशेषणतासंबंधसेंजैसेंपरमाणुमेंमहत्त्वाभावकाप्रत्यक्षहोवेहै तैसेंनेत्रसंयुक्तविशेषणतासंबंधसेंपृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थ्वीत्वाभावकाभीप्रत्यक्षहुयाचाहियेनेत्रसंयुक्तपरमाणुमेंमहत्त्वाभावकीनांईपृथिवीत्वाभावकाविशेषणतासंबंधहै परमाणुकासंयो
गव्याप्यवृत्तिहोवैहै यहमंजूषाकीटीकामेंलिख्याहै यातेंजलपरमाणुमेंपृथिवीत्वात्यंताभावकेप्रत्यक्षकीसामग्रीहोनेतैंताकाभीप्रत्य
क्षहुयाचाहिये औवक्ष्यमाणरीतिसेंजलपरमाणुमेंपृथिवीत्वात्यंताभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं इसरीतिसेंसकलअभावनकेप्रत्यक्षमें
एकरूपयोग्यानुपलंभसंभवैनहीं औअन्योन्याभावअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंभिन्नभिन्नरूपवालायोग्यानुपलंभसहकारीकहनाभी
संभवैनहींयासंकाकायहसमाधानहै योग्येअनुपलंभःयोग्यानुपलंभः ऐसासप्तमीसमासकरैंतौअधिकरणमेंप्रत्यक्षयोग्यताहोवेतहांयोग्यानुपलंभसिद्ध
होवैहै औयोग्यस्यअनुपलंभः योग्यानुपलंभः ऐसाषष्ठीसमासकरेंतौप्रतियोगीमेंप्रत्यक्षयोग्यताहोवैतहांयोग्यानुपलंभसिद्धहोवै
है तहांएकएकप्रकारकेयोग्यानुपलंभमाननेमेंदोषकह्या तैसेंअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंअधिकरणयोग्यताकासाधकसप्तमीसमास
वालायोग्यानुपलंभमानें औअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंप्रतियोगीकीयोग्यतासाधकषष्ठीसमासवालायोग्यानुपलंभसहकारीमानेंतौअ
भावभेदसेंदोनूंकाअंगीकारहोवैतामेंभीदोषकह्या यातेंअन्यप्रकारकायोग्यानुपलंभसहकारीहै औयोग्यानुपलंभशब्दमेंसप्तमीस
मासऔषष्ठीसमासनहीं किंतुनीलघटः याशब्दकीनांईप्रथमासमासहै सोइसरीतिसेंहै जैसेंनीलश्चासौघटोनीलघटः याशब्दमें
प्रथमासमासहै ताकूंव्याकरणमेंकर्मधारयकहैहैं जहांकर्मधारयसमासहोवैतहांपूर्वपदार्थकाउत्तरपदार्थसेंअभेदप्रतीतहोवैहै
जैसेंनीलघटः याशब्दमेंकर्मधारयसमासकरेंनीलपदार्थकाघटपदार्थसेंअभेदप्रतीतहोवैहै तैसेंयोग्यश्चासौअनुपलंभःयो
ग्यानुपलंभः इसरीतिसेंकर्मधारयसमासकरें योग्यानुपलंभशब्दसेंयोग्यपदार्थकाअनुपलंभपदार्थसेंअभेदप्रतीतहोवैहै यातें २६
अभावकेप्रतियोगीऔअधिकरणचाहे जैसेंहोवैतिनकीयोग्यतासेंप्रयोजननहीं अनुपलंभमेंयोग्यताचाहिये जहांप्रतियोगी

1528

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1529

काअनुपलंभयोग्यहोवै तहांअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै जहांप्रतियोगीकाअनुपलंभअयोग्यहोवै तहांअभावकाप्रत्यक्षहोवै नहीं अनु
पलंभमें योग्यताअयोग्यताइसप्रकारकीहै उपलंभाभावकूं अनुपलंभकहैहै प्रतीतिज्ञानउपलंभयेपर्यायशब्दहैं प्रतियोगीकीप्रतीतिका
अभावअनुपलंभशब्दकाअर्थहै यातें इंद्रियसैं घटाभावकेप्रत्यक्षमें घटकीप्रतीतिकाअभावसहकारीहैं तहां घटाभावकाज्ञानप्रमा
रूपफलहै औ घटज्ञानकाअभाव घटाभावप्रमाकासहकारीकारणहै सो घटज्ञानकाअभावयोग्यचाहियेघटज्ञानाभावकूं ही घटा
नुपलंभकहैहैं तिसअभावरूपअनुपलंभमें अन्यप्रकारकीतो योग्यतासंभवैनहीं किंतुजाअनुपलंभकाउपलंभरूपप्रतियोगी
योग्यहोवैसोअनुपलंभयोग्यकहियेहै जाअनुपलंभकाप्रतियोगीउपलंभअयोग्यहोवै सोअनुपलंभअयोग्यकहियेहै यातें
यहसिद्धहुया योग्यउपलंभकाअभावरूपयोग्यानुपलंभसहकारीहैं इसरीतिसें अनुपलंभकीयोग्यताकहनेंकाउपलंभकीयोग्यतासें
पर्यवसानहोयैहै यातेंउपलंभमेंयोग्यताचाहिये योग्यउपलंभकाअभावयोग्यानुपलंभकहियेहै उपलंभकीयोग्यताकाअनुपलंभमें
व्यवहारहोवैहै यद्यपिप्रथमेंही योग्यउपलंभकेअभावकूं योग्यानुपलंभकहेंला घवहै उपलंभरूपप्रतियोगीद्वाराअनुपलंभकूं यो
ग्यकहनानिष्फलहै तथापिव्याकरणकीमर्यादासें योग्यानुपलंभशब्दकाअर्थकरैंतबअनुपलंभमें योग्यताप्रतीतहोवैहै यातें
उपलंभवृत्तिमुख्ययोग्यताकाअनुपलंभसें आरोपकह्याहै यातें यहसिद्धअर्थहै जहांप्रतियोगिके योग्यउपलंभकाअभावहोवै
तहांअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै जहांप्रतियोगीकी सत्तासें नियमकरिकेप्रतियोगीकेउपलंभकीसत्ताहोवै सो उपलंभयोग्यहैताका
अभावअनुपलंभभीयोग्यकहियेहै जहांप्रतियोगीहुयेंभीनियमकरिकेप्रतियोगीकाउपलंभनहोवै सोउपलंभअयोग्यहैताकाअ
भावअनुपलंभभीअयोग्यकहियेहैं जैसें आलोकमें घटकीसत्ताहोवै तबनियमकरिकेघटकाउपलंभहोवैहै तहां घटकाउपलंभयो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्यहै ताका अनुपलंभवी योग्य कहियेहै तैसें संयोगसंबंधसें जहां पिशाच होवै तहां पिशाचसत्तासें नियमकरिकै पिशाचका उप
लंभ होवै नहीं यातें पिशाचका उपलंभ अयोग्य है ताका अभाव पिशाचानुपलंभवी अयोग्य कहियेहै इसरीतिसें घटानुपलंभ यो-
ग्य है सो घटाभावके प्रत्यक्षमें हेतु है औ पिशाचानुपलंभ योग्य नहीं यातें पिशाचानुपलंभतें पिशाचात्यंताभावका प्रत्यक्ष होवै
नहीं यद्यपि घटाभावाधिकरणमें घटकी सत्ता औ घटोपलंभकी सत्ता संभवै नहीं तथापि घटका औ घटोपलंभका ऐसा आरोप हो
वैहै यदि भूतले घटः स्यात्तदा घटोपलंभः स्यात् यातें घटाभावाधिकरणमें वी आरोपित घटकी सत्ता औ घटानुपलंभ होतें वी आ
रोपित घटोपलंभकी सत्ता संभवैहै यातें यह निष्कृष्ट अर्थ है जिस अभावके अधिकरणमें प्रतियोगिका आरोप करें प्रतियोगीके उ
पलंभका नियमतें आरोप होवै सो उपलंभ योग्य है तिसका अनुपलंभवी योग्य कहियेहै औ तिस अधिकरणमें सो अभाव प्रत्यक्ष
है जिस अभावकै अधिकरणमें जिस अभावके प्रतियोगीका आरोप करें प्रतियोगीके उपलंभका आरोप होवै नहीं सो अभाव अप्र
त्यक्ष है जैसें अंधकारमें घटाभाव प्रत्यक्ष नहीं काहेतें अंधकारमें यदि अत्र घटः स्यात् तदा तस्योपलंभः स्यात् इसरीतिसें घटके
आरोपतें घटके उपलंभका नियमतें आरोप संभवै नहीं यातें अंधकारमें घटका प्रत्यक्ष होवै नहीं स्तंभमें पिशाचका भेद प्रत्यक्ष है काहेतें यदि ता
दात्म्येन पिशाचः स्तंभे स्यात्तदा उपलभ्येत इसरीतिसें स्तंभवृत्ति तादात्म्य संबंधसें पिशाचके आरोपतें पिशाचके उपलंभका आ
रोप नियमसें होवैहै काहेतें स्तंभमें तादात्म्य संबंधसें स्तंभ है ताका नियमतें उपलंभ होवैहै तैसें पिशाचवी तादात्म्य संबंधसें स्तंभ
में होवै तौ स्तंभकी नांई ताकावी नियमतें उपलंभ होवै ता उपलंभके अभावतें स्तंभमें तादात्म्य संबंधसें पिशाच नहीं यातें पिशाचका २७
स्तंभमें तादात्म्य संबंधावछिन्नाभाव है तादात्म्य संबंधावछिन्नाभावकूं ही अन्योन्याभाव कहैहैं औ स्तंभमें संयोगसंबंधावछिन्ना

1530

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिशाचात्यंताभाव तथा समवायसंबंधावछिन्नपिशाचात्यंताभाव प्रत्यक्ष नहीं काहेतें स्तंभे यदि संयोगेन पिशाचः स्यात् समवायेन वा पिशाचः स्यात् तदा तस्योपलंभः स्यात् इसरीतिसें संयोगसंबंधतें अथवा समवायसंबंधतें पिशाचका स्तंभमें आरोप करें पिशाचका उपलंभका आरोप होवे नहीं काहेतें जहां स्मशानके वृक्षादिकनमें संयोगसंबंधसें पिशाच रहेहैं औ अपने अवयवनमें समवायसंबंधसें पिशाच रहेहै तहांवी पिशाचका उपलंभ होवे नहीं औ जो स्तंभमें संयोगसंबंधसें अथवा समवायसंबंधसें होवे तिनसर्वका उपलंभ होवे तो स्तंभमें संयोगसंबंधतें वा समवायसंबंधतें पिशाचके आरोपतें पिशाचके उपलंभका आरोप होवे औ स्तंभमें ही द्व्यणुकादिकनका संयोग है औ वायुका संयोग है यातें द्व्यणुक वायुसंयोगसंबंधसें स्तंभवृत्ति हैं तिनका उपलंभ होवे नहीं औ समवायसंबंधसें गुरुत्वादिक अप्रत्यक्ष गुण रहेहैं तिनका स्तंभमें उपलंभ होवे नहीं यातें स्तंभमें संयोगसंबंधतें वा समवायसंबंधतें पिशाचके आरोपतें ताके उपलंभका आरोप होवे नहीं यातें स्तंभमें संयोगसंबंधावछिन्नपिशाचात्यंताभाव औ समवायसंबंधावछिन्नपिशाचात्यंताभाव अप्रत्यक्ष है यद्यपि जहां तादात्म्यसंबंधसें पिशाच होवे तहां पिशाचका नियमतें उपलंभ होवे नहीं काहेतें तादात्म्यसंबंधसें पिशाचमें पिशाच है औ उपलंभ होवे नहीं यातें तादात्म्यसंबंधसें पिशाचके आरोपतें वी नियमतें पिशाचोपलंभका आरोप संभवे नहीं अत्यंताभावकी रीति ही अन्योन्याभावमें है तथापि अन्यप्रकारसें भेद है स्तंभमें जो तादात्म्यसंबंधसें होवे ताका नियमतें उपलंभ होवे है स्तंभमें तादात्म्यसंबंधसें स्तंभ है अन्य नहीं औ स्तंभका नियमतें उपलंभ होवेहै जो और कोई पदार्थ स्तंभमें तादात्म्यसंबंधसें रहै तो स्तंभकी नांई ताका वी उपलंभ चाहिये यातें तादात्म्यसंबंधसें स्तंभमें पिशाचके आरोपतें ताके उपलंभका नियमतें आरोप होवैहै यदि तादात्म्येन पिशाचः स्तंभः स्यात्तदा तस्यं स्तंभस्येव उपलंभः स्यात् इसरीतिसें स्तंभमें तादात्म्यसें पिशाचके आरोपतें पिशाचो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1532

पलंभकाआरोपहोवैहै यातैंस्तंभमैंपिशाचभेदप्रत्यक्षहै तिसीस्तंभमैंपिशाचवत्काभेदअप्रत्यक्षहै काहेतैं यदितादात्म्येनस्तं
भःपिशाचवान्स्यात्तदापिशाचवत्वेनस्तंभस्योपलंभःस्यात् इसरीतिसैंस्तंभमैंतादात्म्यसैंपिशाचवत्केआरोपतैंपिशाचवत्के
उपलंभकाआरोपसंभवैनहीं काहेतैंपिशाचवत्वृक्षादिकनमैंपिशाचवत्ताकाउपलंभहोवैनहीं यातैंस्तंभमैंपिशाचवत्ताकाभे
दअप्रत्यक्षहै पिशाचकेभेदकीनांईप्रत्यक्षनहीं इसप्रकारसैंबुद्धिमानअनुभवसैंदेखिलेवैप्रतियोगीकेउपलंभकाआरोपज
हांसंभवै सोअभावप्रत्यक्षहोवैहै जैसैंआत्मनियदिसुखंदुःखंवास्यात्तदासुखस्यदुःखस्यचउपलंभःस्यात् इसरीतिसैं-
आत्मामैंसुखदुःखकेआरोपतैंतिनकेउपलंभकानियमतैंआरोपहोवैहै काहेतैं कदीवीअज्ञातसुखदुःखहोवैनहींज्ञातही
होवैहैं यातैंसुखदुःखकाआरोपहुयेतिनकाउपलंभकानियमतैंआरोपहोवैहै यातैंआत्मवृत्तिसुखाभावदुःखाभावप्रत्यक्षहै औआ
त्मनिधर्मोयदिस्यात्अधर्मोवास्यात्तदानस्यउपलंभःस्यात् इसरीतिसैंधर्माधर्मकेआरोपतैंतिनकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं
काहेतैंप्रत्यक्षज्ञानकूंउपलंभकहैहैं यद्यपिज्ञानप्रतीतिउपलंभयेशब्दपर्यायहैं यातैंज्ञानमात्रकानामउपलंभहै तथापिइस
प्रसंगमैंजाइंद्रियतैंअभावकाप्रत्यक्षहोवै ताइंद्रियजन्यज्ञानकाउपलंभशब्दसैंग्रहणजानना जैसैंसुखाभावकामनसैंप्रत्य
क्षहोवैहै तहांसुखकेआरोपतैंसुखके उपलंभकाआरोपकहियेमानसप्रत्यक्षकाआरोपहोवैहै तैसैंवायुमैंरूपाभावका-
चाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै तहांरूपकेआरोपतैंताकेउपलंभकाआरोपकहियेचाक्षुषप्रत्यक्षकाआरोपहोवैहै इसरीतिसैंअन्य
इंद्रियतैंजहांअभावकाप्रत्यक्षहोवै तहांअन्यइंद्रियजन्यप्रत्यक्षहीउपलंभशब्दकाअर्थजाणना औधर्मअधर्मकेवलशास्त्र
वेद्यहैं तिनकाउपलंभइंद्रियजन्यज्ञानकदीवीहोवैनहीं यातैंधर्मअधर्मकेआरोपतैंतिनकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं या-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1533

तैंधर्माभावअधर्माभावप्रत्यक्षनहीं तैसेंवायुमेंगुरुत्वात्यंताभावप्रत्यक्षनहीं औवायुमेंरूपात्यंताभावप्रत्यक्षहै काहेतें वायुमें जोगुरुत्वहोतातौताकाउपलंभहोता इसरीतिसें गुरुत्वकेआरोपतें गुरुत्वकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं काहेतें जहांपृथिवीज लमेंगुरुत्वहै तहांवीगुरुत्वकाप्रत्यक्षरूपउपलंभहोवैनहीं किंतुअनुमितिज्ञानगुरुत्वकाहोवैहै यातें गुरुत्वकेआरोपतेंउप लंभकाआरोपहोवैनहीं इसकारणतेंवायुमेंगुरुत्वाभावप्रत्यक्षनहीं औजोवायुमेंरूपहोतातो घटरूपकीनांईवायुरूपकाउप लंभ होताकेवलरूपकाहीउपलंभनहींहोतावायुकावीउपलंभहोता काहेतेंजाद्रव्यमेंमहत्वगुणहोवै औउद्भूतरूपहोवै सोद्र- व्यप्रत्यक्षहोवैहै औजाद्रव्यमेंमहत्वहोवैताकारूपप्रत्यक्षहोवैहै परमाणुद्व्यणुकमेंमहत्वनहींतिनकारूपप्रत्यक्षनहीं यातें त्र्यणुकादिरूपवायुमेंमहत्वहै तामेंरूपहोतातोत्र्यणुकादिरूपवायुकाप्रत्यक्षहोता औताकेरूपकावीप्रत्यक्षहोता इसरीति सें परमाणुद्व्यणुकरूपवायुकूंत्यागिकेत्र्यणुकादिरूपवायुमेंरूपकेआरोपतें रूपकेउपलंभकाआरोपहोवैहै यातेंत्र्यणुका- दिरूपवायुमेंरूपाभावप्रत्यक्षहै परमाणुद्व्यणुकरूपवायुमेंरूपकाआरोपहुयेवीमहत्वकेनहींहोनेतें रूपकेउपलंभकेआरोप केनहींहोनेतें परमाणुद्व्यणुकवायुमेंरूपाभावप्रत्यक्षनहीं तैसेंजलपरमाणुमेंपृथिवीत्वाभावप्रत्यक्षनहीं काहेतेंजलपरमाणु मेंपृथिवीत्वहोवैतौताकाउपलंभहोवै इसरीतिसेंपृथिवीत्वकेआरोपतेंपृथिवीत्वकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं काहेतेंआश्रय प्रत्यक्षहोवैतौजातिकाप्रत्यक्षहोवै यातेंजलपरमाणुमेंजलत्वहै जैसेंजलत्वकाप्रत्यक्षनहीं तैसेंआरोपितपृथिवीत्वकेउपलंभ काआरोपसंभवैनहीं यातेंजलपरमाणुमेंपृथिवीत्वकाअभावप्रत्यक्षनहीं औपरमाणुमेंमहत्वकाअभावप्रत्यक्षहै काहेतेंप रमाणुमेंचाक्षुषप्रत्यक्षकीसामग्रीउद्भूतरूपहै औत्वाचप्रत्यक्षकीसामग्रीउद्भूतस्पर्शवी है परंतुमहत्वनहींहै यातेंपरमाणुका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्यक्षहोवैनहीं औपरमाणुकेप्रत्यक्षयोग्यरूपादिकगुणनकावीमहत्त्वाभावतैंप्रत्यक्षहोवैनहीं महत्त्ववालेद्रव्यकेरूपादिकगुणप्रत्य प्र.
क्षहोवैहैं जोपरमाणुमैंमहत्त्वहोतातौपरमाणुकाप्रत्यक्षहोताऔपरमाणुकेप्रत्यक्षयोग्यगुणनकावीप्रत्यक्षहोता घटादिकनकाम ६
हत्त्वप्रत्यक्षहै यातैंरूपादिकनकीनांईमहत्त्वगुणवीप्रत्यक्षयोग्यहै आकाशादिकनमैंमहत्त्वतौहै परंतुउद्भूतरूपसमानाधिकर
णमहत्त्वकाप्रत्यक्षहोवैहै आकाशादिकनमैंउद्भूतरूपहैनहीं यातैंतिनकेमहत्त्वकाप्रत्यक्षहोवैनहीं तथापिमहत्त्वगुणप्रत्य 1534
क्षयोग्यहै इसरीतिसैंपरमाणुमैंमहत्त्वविनाअन्यसामग्रीप्रत्यक्षकीहै जोमहत्त्वहोतातौपरमाणुऔताकेगुणनकाप्रत्यक्षहो
ता यातैंपरमाणुमैंमहत्त्वकेआरोपतैंताकेउपलंभकाआरोपसंभवैहै महत्त्वकेआरोपतैंकेवलमहत्त्वकेउपलंभकाआरोपन
हींहोवैहै किंतुपरमाणुकेउपलंभकाऔपरमाणुमैंसमवेतप्रत्यक्षयोग्यगुणादिकनकेउपलंभकाआरोपहोवैहै जोपरमाणु
मैंमहत्त्वहोवैतौपरमाणुकाउपलंभहोवैऔपरमाणुमैंसमवेतप्रत्यक्षयोग्यगुणनकावीउपलंभहोवैऔप्रत्यक्षयोग्यजाति
कातथाक्रियाकावीउपलंभहोवैसोपरमाणुआदिकनकाउपलंभनहीं यातैंपरमाणुमैंमहत्त्वनहीं इसरीतिसैंपरमाणुमैंमहत्त्वाभा
वप्रत्यक्षहै इसरीतिसैंजिसअधिकरणमैंजाअभावकेप्रतियोगीकेआरोपतैंउपलंभकाआरोपहोवैतिसअधिकरणमैंसोअ
भावप्रत्यक्षहै परंतुजिसइंद्रियजन्यउपलंभकाआरोपहोवैतिसइंद्रियतैंअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै जैसैंभूतलमैंघटहोवैतौनेत्र
सैंघटकाउपलंभहुयाचाहिये उपलंभहोवैनहीं यातैंघटनहीं इसरीतिसैंजहांनेत्रजन्यउपलंभकाआरोपहोवै तहांघटाभा
वकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै औभूतलमैंघटहोवैतौत्वक्इंद्रियतैंघटकाउपलंभहुयाचाहियेइसरीतिसैं अंधकूंअथवाअंधकार २९
मैंत्वक्इंद्रियजन्यउपलंभकाआरोपहोवैतहांघटाभावकात्वाचप्रत्यक्षहोवैहै इसरीतिसैंजिसइंद्रियकेउपलंभकाआरोपहोवैति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्यक्ष होवै नहीं औ परमाणुमें महत्व होता तो परमाणुकमहत्वकी नांई नेत्रसैं ताका उपलंभ होता इसरीतिसैं चाक्षुषउपलंभका आरोप होवै है त्वाचउपलंभका नहीं आत्मामें सुखाभावादिकनका मानसप्रत्यक्षही होवै है काहेतें आत्मामें सुख होता तो मनसैं सुखका उपलंभ होता इसकालमें सुखका उपलंभ होवै नहीं यातें इसकालमें मेरेविषै सुख नहीं इसरीतिसैं आत्मामें सुखके आरोपतें ताके मानसउपलंभका आरोप होवै है यातें सुखाभावका मानसप्रत्यक्ष होवै है तैसैं दुःखाभाव इच्छाभाव द्वेषाभावकाबी मानसप्रत्यक्ष होवै है परंतु अपने सुखादिकनके अभाव प्रत्यक्ष है परसुखादिकनके अभाव प्रत्यक्ष नहीं किंतु शब्दादिकनसैं तिनका परोक्ष ज्ञान होवै है काहेतें अन्यकूं सुखादिक हुयेंबी तिनका उपलंभ दूजेकूं होवै नहीं यातें अन्यमें सुख होता तो मेरेकूं उपलंभ होता इसरीतिसैं अन्यवृत्तिसुखादिकनका व्यापकूं उपलंभका आरोप होवै नहीं यातें अन्यवृत्तिसुखादिकनका अभाव प्रत्यक्ष नहीं इसरीतिसैं प्रतियोगीके आरोपतें जहां उपलंभका आरोप होवै सो अभाव प्रत्यक्ष है ऐसे उपलंभका अभावरूप अनुपलंभकूं योग्यानुपलंभ कहै हैं यातें प्रतियोगीके आरोपतें जिस उपलंभका आरोप होवै सो उपलंभ जाका प्रतियोगी होवै ताकूं योग्यानुपलंभ कहै है या अर्थमें कोई दोष नहीं इसरीतिसैं जा अधिकरणमें जिस पदार्थका इंद्रियजन्य आरोपित उपलंभ संभवै तिस अधिकरणमें ताका अभाव प्रत्यक्ष है एकही पिशाचका भेद स्तंभमें प्रत्यक्ष है औ परमाणुमें अप्रत्यक्ष है यातें जिस अधिकरणमें कह्या जिस पदार्थका इंद्रियजन्य आरोपित उपलंभ संभवै तिसके अभावकूं प्रत्यक्ष कहनेतें तो पिशाचका इंद्रियजन्य आरोपित उपलंभ बी स्तंभमें होवै है परमाणुमेंबी पिशाचका भेद प्रत्यक्ष होवैगा यातें अधिकरणका नाम लेके कह्या है स्तंभ अधिकरणमें उपलंभका आरोप तो होवै है ३० स्तंभमें ही पिशाचभेद प्रत्यक्ष है औ परमाणुमें तादात्म्यसंबंधसैं पिशाच हुयांबी परमाणुकी नांई ताका उपलंभ संभवै नहीं यातें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1535

सीइंद्रियतैं अभावका प्रत्यक्ष होवैहै वायुमैं रूपाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष होवैहै त्वाचप्रत्यक्ष होवै नहीं काहेतैं वायुमैं रूप होता तौ रूपका नेत्रइंद्रियजन्य उपलंभ होता औ उपलंभ होवै नहीं यातैं वायुमैं रूप नहीं इसरीतिसैं नेत्रइंद्रियजन्य रूपोपलंभका आरोप होवैहै औ वायुमैं रूप होता तौ त्वक्सैं ताका उपलंभ होता इसरीतिसैं त्वक्इंद्रियजन्य रूपोपलंभका आरोप होवै नहीं काहेतैं रूपसाक्षात्कारका हेतु केवल नेत्र है त्वक् नहीं तैसैं रसनादिइंद्रियजन्य रूपोपलंभका आरोप बी होवै नहीं यातैं रूपाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष ही होवैहै तैसैं मधुरद्रव्यमैं तिक्तरसाभावका रासनप्रत्यक्ष ही होवैहै काहेतैं सितामैं तिक्तरस होता तौ ताका रसनइंद्रियतैं उपलंभ होता औ उपलंभ होवै नहीं यातैं सितामैं तिक्तरस नहीं इसरीतिसैं सितामैं तिक्तरसके आरोपतैं रसनजन्य तिक्तरसोपलंभका आरोप होवैहै अन्यइंद्रियजन्य उपलंभका आरोप होवै नहीं यातैं रसनेंद्रियजन्य ही रसाभावका प्रत्यक्ष होवैहै तैसैं स्पर्शाभावका प्रत्यक्ष त्वक्जन्य ही होवैहै काहेतैं अग्निमैं शीतस्पर्श होता तौ ताका त्वक्इंद्रियतैं उपलंभ होता औ अग्निमैं शीतस्पर्शका त्वक्सैं उपलंभ होवै नहीं इसरीतिसैं अग्निमैं शीतस्पर्शके आरोपतैं त्वक्जन्य उपलंभका आरोप होवैहै यातैं स्पर्शाभावका प्रत्यक्ष केवल त्वक्जन्य होवैहै तैसैं परमाणुमैं महत्वाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष ही होवैहै काहेतैं परमाणका भेद महत्व है औ परिमाणगुणका ज्ञान चक्षु औ त्वचा दोनूंसैं होवैहै यह अनुभवसिद्ध है घटका छोटापना बडापना नेत्रसैं औ त्वचासैं जानियेहै यातैं दोनूं इंद्रियका विषय महत्व है तथापि अपकृष्टतम महत्वका त्वचासैं ज्ञान होवै तौ त्र्यणुकके महत्वका त्वचासैं ज्ञान हुया चाहिये यातैं अपकृष्टतम महत्वका केवल नेत्रसैं ज्ञान होवैहै औ परमाणुमैं बी अपकृष्टतम महत्वका ही आरोप होवैगा ता अपकृष्टतम महत्वका त्वाचप्रत्यक्ष तौ होवै नहीं चाक्षुषप्रत्यक्ष होवैहै यातैं परमाणुमैं महत्वके आरोपतैं नेत्रजन्य उपलंभका ही आरोप होतैं परमाणुमैं महत्वाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष होवैहै जैसैं

1536

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1537

परमाणुमेंपि शाचभेद प्रत्यक्षनहीं औजिसपदार्थका औसाकहनेतें वायुमें रूपात्यंताभाववकीनांई गुरुत्वात्यंताभाव प्रत्यक्ष होवेनहीं जोजिस
अधिकरणमें इंद्रियजन्यआरोपितउपलंभसंभवेतिसअधिकरणमें अभाव प्रत्यक्ष हे इतनाहीं कहें तो वायुअधिकरणमें रूपका इंद्रिय
जन्यआरोपितउपलंभसंभवेहे गुरुत्वाभाववी प्रत्यक्ष होवेगा यातें जिसपदार्थका उपलंभसंभवेताका अभावप्रत्यक्ष कह्या यातें रू
पके आरोपितउपलंभसें वायुमें गुरुत्वका अभावप्रत्यक्ष होवेनहीं इसरीतिसें जहां प्रतियोगीकाजा इंद्रियजन्यआरोपितउपलंभहो
वे तिस इंद्रियतें अभावकाप्रत्यक्ष होवेहे औजहां उक्तरीतिसें उपलंभनहीं संभवे तहां अभावका परोक्षज्ञान होवेहे यहनैयायिकमत
हे उक्तरीतिसें न्यायमतमें अभावके प्रत्यक्षमें इंद्रियकरणहे इंद्रियमें विशेषणता औ इंद्रियसंबद्धमें विशेषणता अभावमें इंद्रियका
संबंधहे सो व्यापारहे अभावकी प्रत्यक्षप्रमाफलहे औ योग्यानुपलंभ इंद्रियका सहकारीकारणहे करणनहीं जैसें घटादिकनके
चाक्षुषप्रत्यक्षमें आलोकसंयोगसहकारीकारणहे औनेत्रइंद्रियकरणहे तैसें अभावके प्रत्यक्षमें वी योग्यानुपलंभसहकारीहे औ
अभावके चाक्षुषप्रत्यक्षमें वी आलोकसंयोगसहकारीनहीं यद्यपि अंधकारमें घटाभावका त्वाच प्रत्यक्ष होवेहे चाक्षुषप्रत्यक्षहो
वेनहीं आलोकमें घटाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष होवेहे यातें अभावके चाक्षुषप्रत्यक्षमें अन्वयव्यतिरेकतें आलोकसंयोगवी सह
कारी कह्या चाहिये तथापि घटमें कुलालपिताकीनांई अभावके चाक्षुषप्रत्यक्षमें आलोकसंयोग अन्यथासिद्धहे जैसें घटके कार
णकुलालकी सिद्धिकरिके कुलालका पिता कारणसामग्रीतें बाह्यरहेहे घटका कारणनहीं कहियेहे किंतु घटके कारणका कारणहे तै
सें अभावके प्रत्यक्षका सहकारीकारण योग्यानुपलंभहे ताकी सिद्धिकरिके अभावप्रत्यक्षकी कारणसामग्रीतें आलोकसंयोग बाह्यरहेहे
काहेतें अनुपलंभका प्रतियोगी जो उपलंभताका जहां आरोपसंभवे सो अनुपलंभ योग्य कहियेहे घटके चाक्षुषउपलंभका आरोप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति· आलोकमेंहोवेहै अंधकारमेंचाक्षुषउपलंभकाआरोपहोवेनहीं यातेंघटाभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षकासहकारीकारणजोयोग्यानुपलं प्र·
३१ भताकासाधकआलोकहै घटाभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षकासाक्षात्कारणनहींहोनेतेंकारणसामग्रीतेंबाह्यहै यातेंकुलालपिताकीनांईअ ६
न्यथासिद्धहै जैसेंकुलालपिताघटकाकारणनहीं तैसेंआलोकसंयोगवीअभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षकाकारणनहीं किंतुचाक्षुषप्रत्यक्ष-
काकारणजोयोग्यानुपलंभताकाउक्तरीतिसेंसाधकहै औप्राचीनग्रंथनमेंतो योग्यानुपलंभ इसरीतिसेंकह्याहै जहांप्रतियोगी
विनाप्रतियोगीकेउपलंभकीसकलसामग्रीहोवे औउपलंभहोवेनहीं तहांयोग्यानुपलंभहै जैसेंआलोकमेंघटनहीं तहांयोग्या
नुपलंभहै काहेतेंघटाभावकाप्रतियोगीघटनहींहै ताविनाआलोकसंयोगद्रष्टाकेनेत्ररूपघटकेचाक्षुषउपलंभकीसामग्रीहोने
तेंयोग्यानुपलंभहै औअंधकारमेंजहांघटनहीं तहांयोग्यानुपलंभनहीं काहेतेंप्रतियोगीकेचाक्षुषउपलंभकीसामग्रीमेंआ
लोकसंयोगहै ताकाअभावहै तैसेंस्तंभमेंतादात्म्यसंबंधसेंजोरहै ताकेउपलंभकीसामग्रीस्तंभवृत्तिउद्भूतरूपमहत्त्वहै या
तेंस्तंभमेंतादात्म्यसंबंधसेंपिशाचकाअनुपलंभयोग्यहै औसंयोगसंबंधसेंजोस्तंभवृत्तिहोवे ताकेउपलंभकीसामग्रीस्तंभ
केउद्भूतरूपऔमहत्त्वनहींहै किंतुसंयोगसंबंधसेंरहनेवालेमेंउद्भूतरूपमहत्त्वचाहिये सोपिशाचमेंहैनहीं यातेंसंयोगसं
बंधावच्छिन्नपिशाचात्यंताभावकाप्रतियोगीजोपिशाच ताकेउपलंभकीसामग्रीपिशाचवृत्तिउद्भूतरूपकेअभावतेंसंयोगसं
बंधसेंपिशाचकाअनुपलंभयोग्यनहीं इसरीतिसें प्रतियोगीविनाप्रतियोगीकेउपलंभकीसकलसामग्रीहुयांउपलंभनहीं
होवे सोयोग्यानुपलंभअभावकेप्रत्यक्षकासहकारीकारणहै इसरीतिसेंजहांयोग्यानुपलंभहोवे औइंद्रियकाअभावतेंसं ३१
बंधहोवे तहांइंद्रियजन्यप्रत्यक्षप्रमाअभावकीहोवेहै जहांयोग्यानुपलंभनहींहोवे तहांअभावकाप्रत्यक्षज्ञानहोवेनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1539

किंतुअनुमानादिकनतें परोक्षज्ञान होवेहै नैयायिकरीतिसें अभावमत्यक्षमें योग्यानुपलंभसहकारीहै इंद्रियकरणहैं औभ
ट्टमतमें तथाअद्वैतमतमें योग्यानुपलंभही करणहै अभावज्ञानमें इंद्रियकूं करणता नहीं इसीवासतें अनुपलब्धिनामभिन्नप्र
माणभट्टनेंमान्याहै तिसकेअनुसारीही अद्वैतग्रंथनमें वीअभावप्रत्यक्षकाहेतुअनुपलब्धिनामभिन्नप्रमाणहीलिख्याहै अनु
पलंभकूंही अनुपलब्धिकहेंहें जैसा योग्यानुपलंभनैयायिकनेंसहकारीमान्याहै तैसाही योग्यानुपलंभभट्टमतअद्वैतमतमें
प्रमाणहै नैयायिकमतमें अभावप्रत्यक्षकेकारणइंद्रियऔ योग्यानुपलंभदोनूंहैं तिनमें इंद्रियतोकरणहैं यातेंअभावप्र
मामें प्रमाणहै औअनुपलंभकूं अभावप्रमाकीसहकारीकारणतामानेंहैं करणतानहींमानेंहै यातेंअनुपलंभप्रमाणनहीं
औभट्टादिमतमें अनुपलब्धिहीप्रमाणहै यद्यपिअभावप्रमाकीउत्पत्तिमें अनुपलब्धिकाव्यापारकोईसंभवेनहीं औव्यापारवाला-
जोप्रमाकाकारणसोप्रमाणकहियेहै यातेंअनुपलब्धिकूंप्रमाणतासंभवेनहीं तथापिव्यापारवालेप्रमाकेकारणकूंही प्रमाणताहोवे
है यहनियमवीनैयायिकमतमेंहै औभट्टादिकनकेमतमेंतोसकलप्रमाणोंकेभिन्नभिन्नलक्षणहैं किसीकेलक्षणमेंव्यापारका
प्रवेशहै किसीप्रमाणकेलक्षणमेंव्यापारकाप्रवेशनहींहै जैसेंप्रत्यक्षप्रमाकाव्यापारवालाअसाधारणकारणप्रत्यक्षप्रमाणक
हियेहै अनुमितिप्रमाकाव्यापारवालाअसाधारणकारणअनुमानकहियेहै शाब्दीप्रमाकाव्यापारवालाअसाधारणकारणशब्दप्रमा
णकहियेहै इसरीतिसें तीनिप्रमाणोंकेलक्षणमेंतोव्यापारकाप्रवेशहै औतिन्हप्रमाणोंकेनिरूपणमेंतीन्योंस्थानमेंव्यापारकासंभव
कहिआये औउपमानअर्थापत्तिउपलब्धिइनकेलक्षणमेंव्यापारकाप्रवेशनहीं उपमितिकेअसाधारणकारणकूंउपमानप्रमाणकहेंहैं उ
पपादककल्पनाकाअसाधारणहेतु उपपाद्यकीअनुपपत्तिकाज्ञानअर्थापत्तिप्रमाणकहियेहै अभावकीप्रमाकाअसाधारणकारणअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुपलब्धिप्रमाणकहियेहै यद्यपिअभावकापरोक्षज्ञानवीअनुमानादिकनतें होवेहै यहपूर्वकहीहै यातेंअनुपलब्धिकेलक्षणकीअभा
वज्ञानकेजनकअनुमानादिकनमेंअतिव्याप्तिहोवेहै तथापिअनुमानादिकप्रमाणभावकीप्रमाकेऔअभावकीप्रमाकेसाधारणकारणहैं
अभावकीप्रमाकेअसाधारणकारणनहीं औअनुपलब्धिसेंकेवलअभावकाहीज्ञानहोवेहै यातेंअभावप्रमाकाअसाधारणअनुपलब्धि
प्रमाणहै अन्यनहीं इसरीतिसेंतीनीप्रमाणोंकेलक्षणमेंव्यापारकाप्रवेशनहीं यातेंव्यापारकीअपेक्षातीनिप्रमाणोंमेंनहीं अनुप
लब्धिप्रमाणसेंअभावकाज्ञानहोवेसोतोप्रत्यक्षहोवेहै औअनुमानसेंतथाशब्दसेंजोअभावकाज्ञानसोपरोक्षहोवेहै जितनेस्था
नोंमेंनैयायिकइंद्रियजन्यअभावकाज्ञानकहेहैं उतनेंज्ञानहीअनुपलब्धिप्रमाणजन्यहैं काहेतेंनैयायिकमतमेंवीअभाव-
ज्ञानकासहकारीकारणअनुपलब्धिहै जैसीयोग्यानुपलब्धिकूंनैयायिकइंद्रियकासहकारीमानेहैं सोईयोग्यानुपलब्धिप्रद्वा
दिमतमेंस्वतंत्रप्रमाणतेंविनाहीभेदहै नैयायिकमतमेंतोअभावप्रमाकाप्रमाणइंद्रियहै वेदांतमतमेंप्रमाणअनुपलब्धिहै औवेदांत
मतमेंअनुपब्धीप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानवीनैयायिकमतकीनांईप्रत्यक्षहैपरोक्षनहीं इहांऐसीशंकाहोवेहै इंद्रियजन्यज्ञानहीप्रत्यक्ष
होवेहै अभावज्ञानकूंइंद्रियजन्यताकानिषेधकरिकेप्रत्यक्षताकहनावनेनहीं ताकायहसमाधानहै इंद्रियजन्यज्ञानहीप्रत्यक्षहोवे
तोईश्वरकाज्ञानप्रत्यक्षनहींचाहिये काहेतेंन्यायमतमेंतोईश्वरकाज्ञाननित्यहै यातेंइंद्रियजन्यनहीं औवेदांतमतमेंईश्वरकाज्ञानमा
याकीवृत्तिरूपहै इंद्रियजन्यनहीं औरग्रंथनमेंइंद्रियजन्यज्ञानकूंप्रत्यक्षताकहनेमेंअनेकदूषणलिखेहैं यातेंइंद्रियजन्यज्ञानहीप्र
त्यक्षहोवे यहनियमनहींहै किंतुप्रमाणचेतनसेंविषयचेतनकाअभेदहोवेसोज्ञानप्रत्यक्षहोवेहै जहांविषयसन्मुखहोवे तहांकहूंतो ३२
इंद्रियविषयकेसंबंधतें इंद्रियद्वाराअंतःकरणकीवृत्तिघटदेशमेंजावेहै जायकेघटकेसमानाकारहोयकेघटसेंवृत्तिमिलेहै तहांवृत्ति-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अवछिन्नचेतनप्रमाणचेतनकहियेहै विषयमें आयाचेतनविषयचेतनकहियेहै प्रमाणचेतनऔविषयचेतनस्वरूपसेंतोसदाएक
हीहैं उपाधिभेदसेंचेतनकाभेदहोवेहै उपाधिवीभिन्नदेशमेंहोवेतोउपहितकाभेदहोवेहै एकदेशमेंहोवेतोउपहितकाभेदहोवेनहीं
जैसेंघटकारूपऔघटएकदेशमेंहोवेहै तहांघटरूपोपहितआकाशऔघटोपहितआकाशएकहीहै औमठकेअंतरघट होवे तहां
घटोपहितआकाशमठाकाशतेंभिन्ननहीं यद्यपिमठाकाशतोघटाकाशतेंभिन्नवीहै काहेतें घटशून्यदेशमेंवीमठहै तथापिमठशू-
न्यदेशमेंघटनहीं यातेंमठाकाशतेंघटाकाशभिन्ननहीं इसरीतिसेंवृत्तिऔविषयभिन्नदेशमेंरहें इतनेतोवृत्तिउपहितचेतनऔविष
यउपहितचेतनभिन्नहोवेहै औवृत्तिविषयदेशमेंहोवेतवविषयचेतनवीवृत्तिचेतनहोवेहै यातेंविषयचेतनकावृत्तिचेतनसेंभेदरहै
नहीं किंतुअभेदहोवेहै यद्यपिविषयदेशमेंवृत्तिजावेतवद्रष्टाकेशरीरकेअंतरअंतःकरणसेंलेकेविषयपर्यंतवृत्तिकाआकारहोवेहै
यातेंविषयदेशतेंबाह्यवीवृत्तिकास्वरूपहोनेतेंविषयचेतनसेंभिन्नवीवृत्तिचेतनहै तथापितिसकालमेंवृत्तिसेंभिन्नदेशमेंविषय
नहीं यातेंविषयचेतनकावृत्तिचेतनसेंअभेदकहेहैं औजोदोनूंकापरस्परअभेदकहूंलिख्याहोवेतोताकाअभिप्राययहहै जितनावृत्ति
भागघटदेशमेंहै उतनावृत्तिभागसेंउपहितचेतनघटचेतनसेंपृथकनहीं इसरीतिसेंजहांविषयचेतनकावृत्तिचेतनसेंअभेदहो
वेसोज्ञानप्रत्यक्षकहियेहै जहांविषयचेतनकावृत्तिचेतनसेंअभेदनहींहोवे सोज्ञानपरोक्षकहियेहै संस्कारजन्यस्मरणरूपअंतःक
रणकीवृत्तिशरीरकेअंतरहीहोवेहै ताकाविषयदेशांतरमेंहोवेहै अथवानष्टहोयजावेहै यातेंविषयचेतनकावृत्तिचेतनसेंअभेदन
हींहोनेतेंस्मृतिज्ञानपरोक्षहै औजिसपदार्थकेपूर्वअनुभवकेसंस्कारहोवे औइंद्रियकासंयोगहोवेतहांसोयंऐसाज्ञानहोवे
हैं ताकूंप्रत्यभिज्ञाकहेहैं तहांवीइंद्रियजन्यवृत्तिविषयदेशमेंजावेहै यातेंविषयचेतनकावृत्तिचेतनसेंअभेदहोनेतेंप्रत्यभिज्ञा

1541

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानवीप्रत्यक्षही होवैहे केवलइंद्रियजन्यवृत्तिहोवै तहांत्र्ययंत्र्प्रैसाप्रत्यक्षहोवैहे ताकूंत्र्प्रभिज्ञाप्रत्यक्षकहेहें त्र्प्रौसुरव्यसिद्धांतमेंतो पूर्वत्र्प्रनुभूतकासोयंयहज्ञानवीतत्तात्र्प्रंशमेंस्मृतिरूपहोनेतेंपरोक्षहे त्र्प्रयंत्र्प्रंशमेंप्रत्यक्षहे यातेंसोयंइसज्ञानमेंकेवलप्रत्यक्षत्वनहीं किंतुत्र्प्रंसभेदसेंपरोक्षत्वप्रत्यक्षत्वदोधर्महें केवलसंस्कारजन्यवृत्तिहोवै ताकासः त्र्प्रैसात्र्प्राकारहोवैहे ताकूंस्मृतिकहेहें जापदार्थकापूर्वइंद्रियतें त्र्प्रथवात्र्प्रनुमानादिकनतेंज्ञानहुयाहोवै ताकीस्मृतिहोवैहे यातेंस्मृतिज्ञानमेंपूर्वत्र्प्रनुभवकरणहे त्र्प्रौत्र्प्रनुभवजन्यसंस्कारव्यापारहे काहेतें जिसपदार्थकापूर्वज्ञानहोवै ताकीवर्षकेत्र्प्रंतरायसेंवीस्मृतिहोवैहे तहांस्मृतिकेत्र्प्रव्यवहितपूर्वकालमेंत्र्प्रनुभवतोहेनहीं त्र्प्रौत्र्प्रव्यवहितपूर्वकालमेंहोवैसोहेतुहोवैहे यातेंपूर्वत्र्प्रनुभवस्मृतिकासाक्षात्कारणसंभवैनहीं किसीद्वाराकारणकह्याचाहिये यातेंत्र्प्रैसामाननायोग्यहे जापदार्थकापूर्वत्र्प्रनुभवनहींहुयाताकीतोस्मृतिहोवैनहीं जोपूर्वत्र्प्रनुभवस्मृतिकाकारणनहींहोवैतोजाकात्र्प्रनुभवनहींहुयाताकीवीस्मृतिहुईचाहिये त्र्प्रौहोवैनहीं इसरीतिसेंपूर्वत्र्प्रनुभवसेंस्मृतिकात्र्प्रन्वयव्यतिरेकहे पूर्वत्र्प्रनुभवहुयेस्मृतिहोवैहै यहत्र्प्रन्वयहे पूर्वत्र्प्रनुभवनहींहोवैतोस्मृतिहोवैनहींयहव्यतिरेकहे एककेहोनेसेंत्र्प्रपरकाहोनात्र्प्रन्वयकहियेहे एककेनहींहोनेतेंत्र्प्रपरकानहींहोनाव्यतिरेककहियेहे त्र्प्रन्वयव्यतिरेकसेंकारणकार्यभावजानियेहे पूर्वत्र्प्रनुभवस्मृतिकेत्र्प्रन्वयव्यतिरेकदेषनेतेंतिनकाकारणकार्यभावतोत्र्प्रवश्यहे परंतुत्र्प्रव्यवहितपूर्वकालमेंपूर्वत्र्प्रनुभवमिलैनहीं यातेंस्मृतिकीउत्पत्तिमेंपूर्वत्र्प्रनुभवकाकोईव्यापारमान्याचाहिये जहांप्रमाणवलतेंकारणताकानिश्चयहोवै त्र्प्रौत्र्प्रव्यवहितपूर्वकालमेंकारणकीसत्तासंभवैनहीं तहांव्यापारकीकल्पनाहोवैहे जैसेंशास्त्ररूपीप्रमाणतेंस्वर्गकीसाधनताकायाग मेंनिश्चयहोवैहे त्र्प्रौत्र्प्रंसत्र्प्राहुतिकूंयागकहेहें तिसयागकेनाशहुयेंबहुतकालकेत्र्प्रंतरायतेंस्वर्गहोवैहे सुखविशेषकूंस्वर्ग

1542

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहेहैं स्वर्गकेअव्यवहितपूर्वकालमेंयागकेअभावतेंकारणतायागकूंसंभवेनहीं यातेंशास्त्रसेंनिर्णीतकारणताकेनिर्वाहवासतेंयागका व्यापारअपूर्वमानेंहे जबअपूर्वअंगीकारकियातबदोषनहीं काहेतेंकार्यकेअव्यवहितपूर्वकालमेंकारण अथवाव्यापारएकचाहियेकहूंदोनूंवाहोवेहैं परंतुएकअवश्यचाहियेजिसकूंधर्मकहेहैं सोयागजन्यअपूर्वहे यागसेंअपूर्वउत्पन्नहोवेहे औयागजन्यजोस्वर्गताकाजनकहे यातेंव्यापारहे जैसेंयागकूंस्वर्गसाधनताकेनिर्वाहवासतेंअपूर्वव्यापारमानियेहे सोअपूर्वसदापरोक्षहे तैसेंअन्वयव्यतिरेकबलतेंसिद्धजोपूर्वअनुभवकूंस्मृतिकीकारणताताकेनिर्वाहवासतेंसंस्कारमानियेहैं सोसंस्कारसदापरोक्षहे जाअंतःकरणमेंपूर्वअनुभवहोवेहे औस्मृतिहोवेगीताअंतःकरणकाधर्मसंस्कारहे नैयायिकमतमेंअनुभवसंस्कारस्मृतिआत्माकेधर्म्महैं अनुभवजन्यसंस्कारकूंनैयायिकभावनाकहेहैं सोसंस्कारपूर्वअनुभवजन्यहै औपूर्वअनुभवजन्यजोस्मृतिताकाजनकहे यातें व्यापारकहियेहे इसरीतिसेंपूर्वअनुभवस्मृतिकाकारणहैसंस्कारव्यापारहे स्मृतिकीउत्पत्तिसेंअव्यवहितपूर्वकालमेंपूर्वअनुभवकातोनाशहोनेतेंअभावहे तथापिताकाव्यापारसंस्कारहे यातेंपूर्वअनुभवकेनाशहुयांबीस्मृतिउपजेहे सोसंस्कारप्रत्यक्षतोहैनहीं अनुमानअथवाअर्थापत्तिसेंसंस्कारकीसिद्धिहोवेहे यातेंजितनेपूर्वअनुभूतकीस्मृतिहोवेउतनेंकालसंस्काररहेहे जास्मृतिसें उत्तरस्मृतिनहोवे सोचरमस्मृतिकहियेहे चरमस्मृतिसेंसंस्कारकानाशहोवेहे यातेंफेरितिसपदार्थकीस्मृतिहोवेनहीं इसरीतिसें पूर्वअनुभवजन्यसंस्कारसेंअनेकस्मृतिहोवेहैं जितनेंचरमस्मृतिहोवे इतनेंएकहीसंस्काररहेहे स्मृतिमेंचरमताकार्यसेंजानीजावेहे जास्मृतिकेहुयांफेरिसजातीयस्मृतिनहोवेतास्मृतिमेंचरमताकाअनुमानसेंज्ञानहोवेहे अंत्यकूंचरमकहेहैं औकोईअैसेंकहेहैं पूर्वअनुभवजन्यसंस्कारसेंप्रथमस्मृतिहोवेहे औप्रथमस्मृतिकीउत्पत्तिसें पहलेसंस्कारकानाशहोवेहे स्मृतिसेंऔरसंस्कार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपजेहै तासें फेरि सजातीयस्मृतिउपजेहै तास्मृतिसें स्वजनकसंस्कारकानाशहोवैहै अन्यसंस्कारउपजेहै तासें तृतीयस्मृति
होवैहै इसरीतिसें स्मृतिसेंबी संस्कारकीउत्पत्तिहोवैहै जास्मृतिसें उत्तरसजातीयस्मृतिनहोवैसो स्मृतिसंस्कारकी हेतुनहींहै याम
तमें संस्कारद्वारा स्मृतिज्ञान बी उत्तरस्मृतिकाकरणहै औ प्रथमस्मृतिकाकरणअनुभवहै दोनूंस्थानमें संस्कारव्यापारहै औ प
हलेमतमें स्मृतिज्ञानकाकरणस्मृतिनहीं किंतुपूर्वानुभवसें हीसंस्कारहोवैहै सोएकहीसंस्कारचरमस्मृतिपर्यंतरहैहै यातें पूर्वानुभ
वहीस्मृतिकाकरणहै औपूर्वानुभवजन्यसंस्कारहीसकलसजातीयस्मृतिमें व्यापारहै दोनूंपक्षनमें स्मृतिज्ञानप्रमानहीं काहेतें प्र
थमपक्षमें तोस्मृतिज्ञानकाकरणपूर्वानुभवहै सोषट्प्रमाणसें न्याराहै प्रमाणजन्यज्ञानकूंप्रमाकहैहैं पूर्वानुभवप्रमाणनहीं
द्वितीयपक्षमें प्रथमस्मृतिकाकरणतोपूर्वानुभवहै औद्वितीयादिस्मृतिकाकरणस्मृतिहै सोस्मृतिबीषट्प्रमाणमें नहीं यातें-
स्मृतिकूं प्रमानहीं कहैहैं तथापियथार्थअयथार्थभेदसें स्मृतिदोप्रकारकीहै भ्रमरूपअनुभवकेसंस्कारनसें उपजैसोअय-
थार्थहै प्रमारूपअनुभवकेसंस्कारनसें उपजैसोयथार्थहै इसरीतिसें दोपक्षग्रंथनमें लिखेहैं तिनमें दूषणभूषणअनेकहैं
ग्रंथविस्तारभयतें उपरामहोयके प्रसंगलिखेहैं जैसें पूर्वअनुभवजन्यस्मृतिज्ञानपरोक्षहै तैसें अनुमानादिप्रमाणजन्यज्ञा
नबीपरोक्षहै काहेतें जैसें स्मृतिकाविषयवृत्तिसें व्यवहितहोवैहै तैसें अनुमानादिजन्यज्ञानकाविषयबीवृत्तिदेशमें होवैन
हीं किंतुव्यवहितपर्वतादिदेशमें होवैहै औअतीतअनागतपदार्थकाबीअनुमानादिकनतें अनुमितिसें आदिलेकेवर्तमान
ज्ञानहोवैहै यातें अनुमानादिजन्यज्ञानकेदेशमें औकालमें विषयहोवैनहीं किंतु अनुमितिआदिकज्ञाननकेदेशऔकाल ३४
तें भिन्नदेशऔभिन्नकालमें तिनकेविषयहोवैहै इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयज्ञानकेदेशकालतें भिन्नदेशभिन्नकालमें होवैनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंतुज्ञानकेदेशकालमेंहीहोवेहैं यातेंइंद्रियजन्यज्ञानसारेप्रत्यक्षहीहोवेहैं अद्वैतमतमेंअंतःकरणकापरिणामजोवृत्तिताकूं
ज्ञानकहैहैं यातेंज्ञानविषयएकदेशमेंहोवें अथवावृत्तिविषयएकदेशमेंहोवें याकहनेमेंएकहीअर्थहै इंद्रियजन्यज्ञानहीं
प्रत्यक्षहोवेयहनियमनहीं जहांअन्यप्रमाणजन्यवृत्तिदेशमेंबीविषयहोवे तहांप्रत्यक्षज्ञानहीहोवेहै जैसेंदशमस्त्वमसि
याशब्दसेंउत्पन्नहुईवृत्तिकेदेशमेंविषयहै यातेंशब्दप्रमाणजन्यज्ञानबीकहूंप्रत्यक्षहोवेहै महावाक्यजन्यब्रह्माकारवृत्तिऔ
ब्रह्मात्मादोनूंएकदेशमेंहोवेहैं यातेंमहावाक्यजन्यब्रह्मात्माज्ञान प्रत्यक्षहै तैसेंईश्वरज्ञानकाउपादानकारणमायाकेदेशमें
सर्वपदार्थहैं यातेंइंद्रियजन्यनहीं तौबीईश्वरकाज्ञानप्रत्यक्षहै तैसेंअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानबीप्रत्यक्षहै काहे
तें जहांभूतलमें घटाभावकाज्ञानहोवे तहांभूतलसेंनेत्रकासंबंधहोयकेभूतलदेशमेंअंतःकरणकीवृत्तिजावेहै भूतलेघटोना
स्तिऐसावृत्तिकाआकारहै तहांभूतलअंशमें तौवृत्तिनेत्रजन्यहैऔघटाभावअंशमेंअनुपलब्धिजन्यहै जैसेंपर्वतोवन्हिमा-
न् यहवृत्तिपर्वतअंशमेंनेत्रजन्यहै वन्हिअंशमेंअनुमानजन्यहै तैसेंएकहीवृत्तिअंशभेदसेंइंद्रियऔअनुपलब्धिदोप्रमाण
सेंउपजेहै तहांभूतलावछिन्नचेतनकावृत्तिअवछिन्नचेतनसेंअभेदहोवेहै औभूतलावछिन्नचेतनहीघटाभावावछिन्न
चेतनहै यातेंघटाभावावछिन्नचेतनकाबीवृत्तिअवछिन्नचेतनसेंअभेदहोवेहै यातेंअनुपलब्धिप्रमाणजन्यबीघटाभाव-
काज्ञानप्रत्यक्षहै परंतुजहांअभावकाअधिकरणप्रत्यक्षयोग्यहै अधिकरणकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकाव्यापारहोवेहै तहांउक्तरी
तिकासंभवहै औजहांअधिकरणकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकाव्यापारनहींहोवे तहांअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानप्रत्य
क्षनहीं किंतुपरोक्षहैं जैसेंवायुमेंरूपाभावकायोग्यानुपलब्धिसेंनिमीलितनयनकूंबीज्ञानहोवेहै औपरमाणुमेंयोग्यानुपल

1545

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्धिसैं नेत्रकाउन्मीलनव्यापारविनाहीमहत्त्वाभावकाज्ञान होवैहै तहांविषयदेशमैंवृत्तिजावैनहीं यातैंअनुपलब्धिप्रमाणजन्य वायुमैंरूपाभावकाज्ञान तैसैंपरमाणुमैंमहत्त्वाभावकाज्ञानप्रत्यक्षनहीं परोक्षहै इसरीतिसैं अनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभाव काज्ञानकहूंप्रत्यक्षहै कहूंपरोक्षहै औवेदांतपरिभाषादिकग्रंथनमैंअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाप्रत्यक्षलिख्याहै अनुपलब्धिजन्यपरोक्षज्ञानकाउदाहरणनहींलिख्या सोतिनमैंन्यूनताहै लिख्याचाहियेजोपरोक्षकाउदाहरणलिखेविनाअनुपलब्धिजन्यज्ञानपरोक्षहोवैनहीं ऐसाभ्रमहोवैहै औसूक्ष्मदृष्टिसैंविचारकरैतौअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानसर्वत्रपरोक्ष है कहूंबीप्रत्यक्षनहीं काहेतैंप्रमाणचेतनसैंविषयचेतनकाअभेदहुयेबीजोप्रत्यक्षयोग्यविषयनहींताकापरोक्षहीज्ञानहोवैहै जैसैं शब्दादिकप्रमाणतैंधर्माधर्मकाज्ञानहोवैतवप्रमाणचेतनसैंविषयचेतनकाभेदनहीं काहेतैंअंतःकरणदेशमैंधर्माधर्मरहैहैं यातैं अंतःकरणऔधर्माधर्मरूपउपाधिभिन्नदेशमैंनहींहोनेतैंधर्माधर्मावछिन्नचेतनप्रमाणचेतनसैंभिन्ननहीं तथापिधर्माधर्मप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातैंशब्दादिजन्यधर्माधर्मकाज्ञानकदेबीप्रत्यक्षनहीं अनुभवकेअनुसारविषयमैंयोग्यताअयोग्यताजाणनीजैसैंधर्माधर्मप्रत्यक्षयोग्यनहीं तैसैंअभावपदार्थबीप्रत्यक्षयोग्यनहीं जोअभावपदार्थप्रत्यक्षहोवै तौवादियोंकाविवादनहींहुयाचाहिये मीमांसकअभावकूंअधिकरणरूपमानैहैं नैयायिकादिकअधिकरणसैंभिन्नमानैहैं तैसैंनास्तिकअभावकूंतुछऔअलीकमानैहैं आस्तिकअभावकूंपदार्थमानैहैं इसरीतिसैंअभावकेस्वरूपमैंविवादहै औप्रत्यक्षयोग्यजो घटादिकतिनकेस्वरूपमैं अधिकरणसैंभिन्नवानहीं इत्यादिकविवादहोवैनहीं यातैंअभावपदार्थप्रत्यक्षयोग्यनहीं इसकारणतैं जहांभूतलमैं घटाभावकाज्ञानहोवै तहांप्रमाणचेतनसैंघटाभावावछिन्नचेतनकाअभेदहै तौबीअभावांशमैं वहज्ञानपरोक्षहै

1546

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1547

भूतलांशमेंअपरोक्षहै जैसेंपर्वतोवन्हिमान् यहज्ञानपर्वतअंशमेंअपरोक्षहै औवन्हिअंशमेंपरोक्षहै इसरीतिसेंअनुपलब्धि
प्रमाणजन्यअभावकेज्ञानकूं सर्वत्रपरोक्षमानेंतो भट्टसें बी विरोधनहीं भट्टमतमेंअनुपलब्धिजन्यअभावकाज्ञानपरोक्षहीहै औ
अभावकेज्ञानकूं जोनैयायिकइंद्रियजन्यमानिकेप्रत्यक्षकहेंहैं सोसर्वथाअसंगतहै काहेतेंवायुमेंरूपाभावकाचाक्षुषप्रत्य
क्षहोवैहै औपरमाणुमें महत्वाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै यहनैयायिकनकासिद्धांतहैसोबनेंनहीं काहेतेंवायुमेंरूपाभावके
ज्ञानवास्तेकोईबीनेत्रकाउन्मीलनव्यापारकरेनहीं किंतुनिमीलितनेत्रकूंबीवायुमेंरूपाभावकायोग्यानुपलब्धिसेंज्ञानहोवैहै
तैसेंपरमाणुमेंमहत्वाभावकाज्ञानबीउन्मीलितनेत्रकीनांईनिमीलितनेत्रकूंबीहोवैहै औनिमीलितनेत्रकोंघटादिकनकाचाक्षु
षज्ञानकदीबीहोवैनहीं यातेंवायुमेंरूपाभावका औपरमाणुमेंमहत्वाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षबनेंनहीं किंतुयोग्यानुपलब्धिसेंति
नकापरोक्षज्ञानहोवैहै औजोनैयायिककहेहैं अभावज्ञानमेंइंद्रियकेअन्वयव्यतिरेकदेषनेतें अभावज्ञानमेंइंद्रियहेतुहै औ
याकाजोभेदधिक्कारादिकग्रंथनमेंसमाधानलिष्याहै इंद्रियकाअन्वयव्यतिरेकअधिकरणकेज्ञानमेंचरितार्थहै जैसेंभूतलसें
घटाभावकाज्ञानहोवै तहांनेत्रइंद्रियसेंअभावकेअधिकरणभूतलकाज्ञानहोवैहै तानेत्रसेंज्ञातभूतलमेंघटाभावकायोग्यानुपल
ब्धिसेंज्ञानहोवैहै इसरीतिसें घटाभावकाअधिकरणजोभूतल ताकेज्ञानमेंइंद्रियचरितार्थकहियेसफलहै सोसंकाऔसमाधा
नदोनूंअसंगतहैं काहेतेंवायुमेंरूपाभावका औ परमाणुमेंमहत्वाभावकानेत्रव्यापारसेंबिनाबीज्ञानहोवैहै यातेंकिसीअभाव
ज्ञानमेंइंद्रियकेअन्वयव्यतिरेकहुयेंइंद्रियकूंकारणतासिद्धहोवैनहीं सकलअभावकेज्ञानमेंइंद्रियकाअन्वयव्यतिरेकअसिद्ध
हैं इसरीतिसेंशिथिलमूलशंकाकासमाधानकथनबीअसंगतहै औजो नैयायिक इसरीतिसेंसंकाकरेंघटानुपलब्ध्याइंद्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येणाभावंनिश्चिनोमिश्रैसीप्रतीतिहोवैहै यातेंअनुपलब्धिऔइंद्रियदोनूंघटादिकनकेअभावज्ञानकेहेतुहैं याशंकाकाउक्तसमा
धानकरैंघटाभावकेअधिकरणकाज्ञानइंद्रियतेंहोवैहै औघटाभावकाज्ञानअनुपलब्धिसेंहोवैहै सोबीसमाधानसंभवैनहीं का
हेतेंजहांइंद्रिययोग्यअधिकरणहै तहांतोउक्तसमाधानसंभवैहै औजहांअधिकरणइंद्रिययोग्यनहीं तहांउक्तसमाधानसंभवै
नहीं जैसेंवायौरूपानुपलब्ध्यानेत्रेणरूपाभावंनिश्चिनोमि इसरीतिसेंवायुमेंरूपाभावकीअनुपलब्धिजन्यऔनेत्रजन्यप्रतीति
भासैहै तहांवायुकीप्रतीतिनेत्रजन्यहै औरूपाभावकीप्रतीतिअनुपलब्धिजन्यहै यहकहनासंभवैनहीं काहेतेंवायुमेंरूपकेअ
भावतेंनेत्रकीयोग्यतानहीं यातेंअभावज्ञानकूंकेवलअनुपलब्धिजन्यमानेउभयजन्यताकीप्रतीतिसेंविरोधकाअहै तवादीका
यहसमाधानहै भूतलेअनुपलब्ध्यानेत्रेणघटाभावंनिश्चिनोमियाकहनेकाअनुपलब्धिसहितनेत्रतेंभूतलमेंघटाभावकेनि
श्चयवालामैंहूं यहअभिप्रायनहींहै किंतुभूतलमेंइंद्रियजन्यघटकीउपलब्धिकेअभावतेंघटाभावकेनिश्चयवालामैंहूं यहता
त्पर्यहै अभावकेनिश्चयकाहेतुअनुपलब्धिहै औअनुपलब्धिकाप्रतियोगीजोउपलब्धितामेंइंद्रियजन्यताभासैहै यातेंनिषे
धनीयउपलब्धिमेंइंद्रियजन्यताप्रतीतहोनेतेंइंद्रियजन्यउपलब्धिकेअभावतेंघटाभावकानिश्चयउपजेहै यहसिद्धहुवातें
सेंवायौरूपानुपलब्ध्यानेत्रेणरूपाभावंनिश्चिनोमियाकहनेकाबीरूपकीअनुपलब्धिसहितनेत्रतेंरूपाभावकेनिश्चयवाला
मैंहूंयहतात्पर्यनहींहै काहेतेंनेत्रकेव्यापारविनाबीरूपाभावकानिश्चयहोवैहै किंतुनेत्रजन्यरूपकीउपलब्धिकेअभावतेंवायुमें
रूपाभावकेनिश्चयवालामैंहूं यहतात्पर्यहै यातेंजिसउपलब्धिकाअभावरूपाभावकेनिश्चयकाहेतुताउपलब्धिमेंनेत्रजन्यताप्र ३६
तीतहोवैहै इसरीतिसेंसारेअभावनिश्चयकाहेतुजोअनुपलब्धिताकेप्रतियोगीउपलब्धिमेंइंद्रियजन्यताकहियेहै औविवेकविना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तहां अभावज्ञानमें भ्रमबुद्धि हुये विना तिस अधिकरणमें तापदार्थका ज्ञान होवै नहीं जैसें आत्मामें कर्तृत्वादिकनका अभाव
ज्ञान हुया न्यायादिकशास्त्रसूनैं वी प्रथमज्ञानमें भ्रमबुद्धि हुया विना कर्ता भोक्ता आत्मा है औसा ज्ञान होवै नहीं जाकूं वे
दांत अर्थनिश्चय करिकै नैयायिकादिकनकै कुसंगतें कर्ता भोक्ता आत्मा है औसा ज्ञान होवैहै तहां प्रथमज्ञानमें भ्रमबुद्धि हो
यकै होवैहै प्रथमज्ञानमें भ्रमबुद्धि हुये विना विरोधीज्ञान होवै नहीं सो भ्रमबुद्धि भ्रमरूप होवै अथवा यथार्थ होवै इसमें आग्रह
नहीं परंतु भ्रमबुद्धिमें भ्रमत्वनिश्चय नहीं चाहिये यह आग्रह है इस रीतिसें जिस कालमें गुरुवाक्यनतें जिज्ञासूकूं औसा दृढनिश्च
य हुया है आकाशादिक सकल प्रपंच गंधर्वनगरकी नांई दृष्टनष्टस्वभाव है तातें विलक्षणस्वभाव आत्मा है आकाशादिकनमें
आत्माका किंचित् वी सादृश्य नहीं तिस कालमें आकाश औ आत्माका सादृश्यज्ञान संभवै नहीं यातें उत्तम जिज्ञासूकै अनुकूल
सिद्धांतकी उपमितिका उदाहरण मिलै नहीं औ सर्वथा नैयायककी रीतिकी उपमितिमें विरोध होवै तो उपमितिका यह लक्षण कर
णा चाहिये सादृश्यज्ञानजन्यज्ञान अथवा वैधर्म्यज्ञानजन्यज्ञान इन दोनूंमैं कोई एक होवै सो उपमिति कहियेहै खड्गमृगमें उष्ट्र
कै वैधर्म्यज्ञानतें उष्ट्रमें खड्गमृगका वैधर्म्यज्ञान होवैहै पृथिवीमें जलकै वैधर्म्यज्ञानतें जलमें पृथिवीका वैधर्म्यज्ञान होवैहै
यातें उष्ट्रमें खड्गमृगका वैधर्म्यज्ञान औ जलमें पृथिवीका वैधर्म्यज्ञान उपमिति है ताका करण उपमान कहियेहै इहां खड्गमृग
में उष्ट्रका वैधर्म्यज्ञान औ पृथिवीमें जलका वैधर्म्यज्ञान करण होनेतें उपमान है औ रविपरीत वी उपमान उपमितिभाव संभवै है
इंद्रियसंबद्धमें सादृश्यज्ञान उपमान है औ इंद्रियसें व्यवहितमें सादृश्यज्ञान उपमिति है जैसें प्रपंचमें आत्माकै वैधर्म्यज्ञा
नतें आत्मामें प्रपंचका वैधर्म्यज्ञान उपमिति होवैहै इस रीतिसें सादृश्यज्ञानजन्यज्ञान औ वैधर्म्यज्ञानजन्यज्ञान दोनूंकूं उ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पमितिकहैं तौजिज्ञासुकै अनुकूलउदाहरणसंभवैहै औवेदांतपरिभाषामें एकसादृश्यज्ञानजनज्ञानहीउपमितिकालक्ष
णकह्याहै औताकेव्याख्यानमैंताकेपुत्रनैंदूसरीउपमितिकेखंडनवास्तेयहकह्याहै जहांकमठेमेंलोचनमुपमिनोमि इस
रीतिसैंउपमानउपमेयभावहोवैतिसीस्थानमैंउपमानप्रमाणहोवैहै वैधर्म्यज्ञान होवैतहांउपमानउपमेयभावहोवैनहीं
यातैंउपमानप्रमाणसंभवैनहींताकूंयहपूछ्याचाहियेवैधर्म्यज्ञानजन्यउपमितिकेजोउदाहरणकहेतिनमैंउपमितिकेवि
षयकाज्ञानउपमानप्रमाणसैंहोवैनहींतौकिसप्रमाणतैंतिनकाज्ञानहोवैहै जाप्रमाणतैंतिनकाज्ञानकहैतिसीप्रमाणतैंसा
दृश्यज्ञानजन्यउपमितिकेविषयकाबीज्ञानहोयजावैगाउपमानप्रमाणकाप्रयोजनकेअभावतैंअनंगीकारचाहियेजो ऐसैं
कहेगवयकेप्रत्यक्षसमैंगोकासादृश्यतौप्रत्यक्षहै परंतुगोमैंगवयकासादृश्यप्रत्यक्षनहीं काहेतैंधर्मीकेसाथिइंद्रियका
संयोगहोवैतौइंद्रियसंयुक्ततादात्म्यसंबंधसैंसादृश्यधर्मकाप्रत्यक्षहोवैगोरूपधर्मीकेसाथिइंद्रियसंयोगकेअभावतैं
गोमैंगवयकासादृश्यप्रत्यक्षकाविषयनहीं यातैंगोमैंगवयकेसादृश्यज्ञानकाहेतुगवयमैंगोकासादृश्यज्ञानरूपउपमान
प्रमाणचाहियेतौतैसैंहीखड्गमृगमैंउष्ट्रकेवैधर्म्यकातौप्रत्यक्षज्ञानहै उष्ट्रकेसाथिइंद्रियसंयोगकेअभावतैंउष्ट्रमैंखड्गमृ
गकेवैधर्म्यकाज्ञानप्रत्यक्षरूपसंभवैनहींताकाहेतुखड्गमृगमैंउष्ट्रकावैधर्म्यज्ञानरूपउपमानहीप्रमाणमाननायोग्यहै और
जोवेदांतपरिभाषाकीटीकामैंलिख्याहै जाज्ञानतैंउत्तरउपमिनोमिऐसीप्रतीतिज्ञाताकूंहोवैसोज्ञानउपमितिहै औवैधर्म्यज्ञा
नजन्यवैधर्म्यज्ञानसैंउत्तरउपमिनोमिऐसीप्रतीतिहोवैनहीं यातैंउपमितिनहींसोबीअशुद्धहै काहेतैंमुखमैंचंद्रकेसादृ ३
श्यप्रत्यक्षसैंउत्तरमुखंचंद्रेणउपमिनोमिऐसीप्रतीतिहोवैहै औमुखमैंचंद्रकेसादृश्यकाप्रत्यक्षज्ञानहैउपमितिनहीं यातैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपजैहैं क्रमतें उपजते वर्णनका निमित्त विना नाश मानें तौ सकल वर्णनकौ प्रथम क्षणमें उत्पत्ति औ द्वितीय क्षणमें नाश होवे
गा यातें उत्पत्ति नाश विना शब्दमें और कोई प्रत्यक्षतादिक व्यापार सिद्ध नहीं होवेगा यातें शब्दके नाशका कोई निमित्त मान्या
चाहिये ओ निमित विना द्वितीय क्षणमें शब्दका नाश होवे नहीं सो और तौ कोई शब्दके नाशका निमित्त संभवे नहीं पूर्व शब्दके
नाशका हेतु स्वोत्तरवर्ति शब्द है गौः या वाक्यमें पुरुषकी कृतिसें नाभिदेशतें वायुमें क्रिया होयके गकारका जनक जिह्वामूलमें
वायुका संयोग होयके औकारका जनक कंठ ओष्ठसें वायुका संयोग होवेहै तिसतें अनंतर विसर्गका जनक कंठसें वायुका सं
योग होवेहै जिस क्रमतें तीनि संयोग होवेहैं उसी क्रमतें गकार औकार विसर्गरूप तीनि वर्ण होवेहैं यद्यपि कौमुदी आदि
क ग्रंथनमें कवर्गका कंठस्थान लिख्या है तथापि पाणिनिकृत शिक्षामें कवर्गका जिह्वामूल स्थान लिख्या है ता शिक्षा वचनके
अनुसारतें जिह्वामूलमें वायुके संयोगतें गकारकी उत्पत्ति कही है व्याकरणमतमें यद्यपि गौः इतने वर्ण वाक्यरूप नहीं हैं त
थापि न्यायमतसें वाक्य कह्या है प्रथम क्षणमें गकारकी द्वितीय क्षणमें औकारकी तृतीय क्षणमें विसर्गकी उत्पत्ति होवेहै तहां
गकार नाशमें औकार हेतु है औकारके नाशमें विसर्ग हेतु है तृतीय क्षणमें शब्दका नाश होवेहै द्वितीयमें नहीं काहेतें नाशका
हेतु स्वोत्तर शब्द है सो द्वितीय क्षणमें उपजैहै कारणकी सिद्धि विना कार्य होवे नहीं प्रथम क्षणमें द्वितीय शब्द असिद्ध है यातें
द्वितीय क्षणमें सिद्ध द्वितीय शब्दसें तृतीय क्षणमें प्रथम शब्दका नाश होवेहै ऐसें तृतीय शब्दसें द्वितीयका नाश होवेहै
इस रीतिसें उपांत्य शब्दपर्यंत स्वोत्तरवर्ति शब्दसें शब्दका नाश होवेहै औ अंत्य शब्दका उपांत्य शब्दसें स्कंदोपस्कंद न्यायतें
नाश होवैहै स्कंद औ उपस्कंद दो भ्राता हुये हैं तिनका परस्पर नाश भारतमें प्रसिद्ध है परंतु यामें यह दोष है जो उपांत्य शब्दसें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृति. अंत्यशब्दकानाशमानेंतौद्वितीयक्षणमेंहीअंत्यशब्दकानाशहोवेगा यातेंउत्पत्तिनाशतेंअन्यव्यापाररहितअंत्यशब्दअप्रत्यक्ष प्र.
२३ हुयाचाहिये जोअैसेंकहै जगदीशभट्टाचार्यनें अंत्यशब्दअप्रत्यक्षकह्याहै यातेंअप्रत्यक्षकाअपादनइष्टहैदोषनहीं तोभीतृती ३
यक्षणमेंशब्दकानाशहोवैहै यानियमकाभंगहोवैगा यातेंअंत्यशब्दकेनाशमेंउपांत्यशब्दकानाशहेतुहै उपांत्यशब्दहेतुन
हीं यापक्षमेंअंत्यशब्दके नाशमेंद्वितीयक्षणमेंनाशकीआपत्तिनहीं काहेतेंउपांत्यशब्दकानाशअंत्यशब्दसेंहोवैहै या
तें अंत्यशब्दकौद्वितीयक्षणमेंउपांत्यकानाश तासेंउत्तरक्षणमेंअंत्यकानासहोवैहै इसरीतिसेंसकलशब्दकानाशतृतीय
क्षणमेंहोवैहै यामेंयहशंकाहोवैहै जहांएकहीवर्णरूपशब्दहोवै तहांशब्दकेनाशकाहेतु कोईशब्दनहीं ताकायहसमा
धानहै जैसेंकंठादिकनतेंवायुकासंयोगवर्णरूपशब्दकाहेतुहै औभेरीआदिकनतेंदंडादिकनकासंयोगध्वनिरूपशब्दका
हेतुहै औवंशकेदलद्वयकाविभागध्वनिरूपशब्दकाहेतुहै तैसेंशब्दबीशब्दकाहेतुहै भेरीदंडकेसंयोगतेंजोभेरीदेशमेंश
ब्दहोवैहै तासेंउत्पन्नहुवाजोशब्दताकाश्रवणसेंसाक्षात्कारहोवैहै तैसेंकंठादिकदेशमेंवायुकेसंयोगतें जोवर्णरूपशब्द
उपजैहै ताकाश्रोत्रसेंसाक्षात्कारहोवैनहीं किंतुवर्णरूपशब्दसेंअन्यशब्दउपजैहै ताकासाक्षात्कारहोवैहै इसरीतिसेंअन्यशब्दर
हितएकशब्दअलीकहै परंतुयामतमेंवर्णकासमुदायरूपपदका एककालमेंसंभवनहीं यातेंपदकासाक्षात्कारतोसंभवैनहीं तथापिप्र
त्येकवर्णकेसाक्षात्कारनतेंसकलवर्णकूंविषयकरनेंवालीएकस्मृतिहोवैहै स्मृतपदसेंपदार्थकीस्मृतिहोवैहै तासेंशाब्दबोधहो
वैहै अथवापूर्वपूर्ववर्णकेअनुभवतेंसंस्कारहोवैहै संस्कारसहितअंत्यवर्णकाअनुभवहीपदकाअनुभवकहियेहै तासेंप २३
दार्थकीस्मृतिहोवैहै तासेंशाब्दबोधहोवैहै यहन्यायकामतहै औमीमांसाकेमतमेंवर्णनित्यहैं यातेंवर्णकासमुदायरूपवेद

1552

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वीनित्यहैं औरसारे वर्णविभुहैं जहांकंठादिदेशमें अध्यात्मवायुकासंयोगहोवैतहां वर्णकीअभिव्यक्ति होवैहै नैयायिकमतमेंजो वर्णकीउत्पत्तिकेहेतुहैं सोईमीमांसकमतमें वर्णकीअभिव्यक्तिकेहेतुहै इसरीतिसें वर्णसमुदायरूपवेदनित्यहै यातैंअपौरुषेयहै औवेदांतमतमेंवर्णऔतिनकासमुदायरूपवेदनित्यनहीं काहेतैं वेदकीउत्पत्तिश्रुतिनैंकहीहै औचेतनसैंभिन्नसकलअनित्यहै यातैंवेदनित्यनहींऔक्षणिकनहीं किंतुसृष्टिकेआदिकालमेंसर्वज्ञईश्वरकेसंकल्पमात्रतैंवेदकीउत्पत्तिहोवैहै यातैंश्वासकीनांईअनायासतैंईश्वरवेदकूंरचैहै नैयायिकमतमेंभारतादिकनकीनांईवेदपौरुषेयहै वेदांतमतमेंभारतादिकनकीनांईईश्वररूपपुरुषतैंरचित-होनेतैंपौरुषेयतौहै परंतुसर्वज्ञव्यासादिकसकलसर्गनमेंभारतादिकनकूंरचैहैं तहांयहनियमनहींजैसीपूर्वसर्गमेंआनुपूर्वीहोवैतैसेहीभारतादिकउत्तरसर्गमेंहोवैहै किंतुअपनीइच्छाके अनुसारभारतादिकनकीआनुपूर्वीरचैहैं औवेदकी आनुपूर्वीविलक्षण नहींहोवैहै किंतुपूर्वसर्गकीआनुपूर्वीकूंयादिकरिकेउत्तरसर्गमें पूर्वकल्पकेसमानआनुपूर्वीवालेवेदकूंईश्वररचैहै पुरुषरचिततारूपपौरुषेयतावेदमैंभारतादिकनकेसमाननहै अन्यसर्गकीआनुपूर्वीकेस्मरणबिनापूरुषरचितत्वरूपपौरुषेयत्वभारतादिकनमें है वेदमेंनहीं वेदमेंपूर्वसर्गकीआनुपूर्वीकूंस्मरणकरिकेपुरुषरचितत्वहै यातैंवेदकीआनुपूर्वीअनादिहै औईश्वररूपपुरुषकरिके रचितहैविरोधनहीं ॥ इतिश्रीमन्निश्चलदासाख्यसाधुविरचितेवृत्तिप्रभाकरेशब्दप्रमाणनिरूपणंनामतृतीयः प्रकाशः ॥३॥

1553

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीरामोजयति॥ अथचतुर्थप्रकाशप्रारंभः॥ यद्यपिन्यायवेदांतकेसकलग्रंथननेंमेंउपमाननिरूपणतेंउत्त

रशब्दनिरूपणकियाहै तथापितीनिप्रमाणवादीसांख्यादिकउपमानकूंनहींमानेंहैं प्रत्यक्षअनुमानशब्दयेतीनिमानेंहैं तिनके
उपयोगीप्रमाणपद्धतीकहेचाहिये यातेंशब्दप्रमाणतेंउत्तरउपमाननिरूपणकरियेहै जिसक्रमतेंशास्त्रोंमेंअधिकप्रमाणका अंगी
कारहैतिसक्रमतेंयाग्रंथमेंप्रमाणनिरूपणहै यातेंअन्यसंगतिकीइहांअपेक्षानहीं उपमितिप्रमाकाकरणउपमानप्रमाणकहियेहै
न्यायरीतिसेंउपमितिउपमानकायहस्वरूपहैं संज्ञीमेंसंज्ञाकीवाच्यताकाज्ञानउपमितिकहियेहै ताकाकरणकहियेव्यापारवालाअ
साधारणकारणजोहोवैसोउपमानकहियेहैं कोईनगरवासीपुरुषगवयशब्दकेवाच्यकूंनहींजानिकैआरण्यकपुरुषतेंकीदृशगव
यहोवैहै ऐसाप्रश्नकरैतबगोकेसदृशगवयहोवैहै ऐसाआरन्यकपुरुषकावचनसुनिकैवाक्यार्थअनुभवकरिकेवनमेंगोसदृ
शगवयकूंदेषिकेगोकेसदृशगवयहोवेहैं इसरीतिसेंवाक्यार्थकास्मरणकरैहै तिसतेंअनंतरदृष्टपशुमेंगवयपदवाच्यताजानैहै त
हांपशुविशेषमेंगवयपदवाच्यताज्ञानउपमितिहै आरण्यकपुरुषबोधितवाक्यकेअर्थकाशाब्दानुभवकरणहै गोसदृशपिंडकूं
देषिकेवाक्यार्थकीस्मृतिव्यापारहै औगोसदृशपिंडकाप्रत्यक्षसंस्कारकाउद्बोधकहोनेंतेंसहकारीहै यातेंवाक्यार्थानुभवउपमा
नहैं वाक्यार्थस्मृतिव्यापारहै जैसें आकांक्षादिकशब्दकेसहकारीहैं तैसेंगोसदृशपिंडकाप्रत्यक्षसहकारीहै उपमितिफलहैय
हसांप्रदायिकनैयायिकनकामतहै औनवीननैयायिकयहकहैंहैं गोसदृशपिंडकाप्रत्यक्षसहकारीमान्याहै सोउपमानहै औ
वाक्यार्थस्मृतिव्यापारहै गवयपदकीवाच्यताकाज्ञानउपमितिरूपफलहै यामतमेंवाक्यार्थकाअनुभवकारणकाकारणहोनेंतें १
कुलालपिताकीनांईअन्यथासिद्धहै अर्थयहहै जैसेंकुलालपिताघटकीसामग्रीतेंबाह्यहै तैसेंउपमितिसामग्रीतेंवाक्या

1554

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थानुभवबाह्यहै यहदोमतनैंयायिकनकेहैं इनमेंअनेकसंकासमाधानरूपविचारन्यायकौस्तुभादिकोंमेंलिख्याहै सिद्धां
तमेंउपयोगीनहीं यातेंहमनेंलिख्यानहीं जैसेंसादृशज्ञानतेंउपमितिहोवैहै तैसेंविधर्मज्ञानसेंवीहोवैहै जहांखड्गमृगपद
केवाच्यकूंनहींजानताआरण्यकपुरुषतेंउष्ट्रविधर्मोशृंगसहितनासिकावालाखड्गमृगपदकावाच्यहै इसवाक्यकूंसुनिके
वाक्यार्थानुभवसेंउत्तरवनमेंजायकै उष्ट्रविधर्मखड्गमृगकेप्रत्यक्षसेंउत्तरगेंडेमेंखड्गमृगपदकीवाच्यताजानैहै औ पृथिवी
पदकेवाच्यकूंनहींजानताजलादिवैधर्म्यवतीपृथिवीऐसागुरुवाक्यसुनिकेताकेअर्थकूंअनुभवकरिकेजलादिवैधर्म्यवानप
दार्थकूंदेखिकेवाक्यार्थकूंस्मरणकरिकेतापदार्थमेंपृथिवीपदकीवाच्यतानिश्चयकरैहै विरुद्धधर्मवालेकूंविधर्मकहैहैं विरुद्ध
धर्मकूंवैधर्म्यकहैहैं खड्गमृगमेंउष्ट्रतैंविरुद्धधर्मह्रस्वग्रीवादिकहैं पृथिवीमेंजलादिकनतेंविरुद्धधर्मगंधहै दोनूंउदाहरण
नमेंसांप्रदायिकरीतिसेंवाक्यार्थानुभवकरणहैवाक्यार्थस्मृतिव्यापारहैविरुद्धधर्मवत्पदार्थदर्शनसहकारीहै नवीनरीतिसें
विरुद्धधर्मविशिष्टपदार्थकाप्रत्यक्षकरणहै वाक्यार्थस्मृतिव्यापारवाक्यार्थानुभवसामग्रीबाह्यहै खड्गमृगपदकीवाच्यताज्ञा
नऔपृथिवीपदकीवाच्यताज्ञानउपमितिरूपफलहै इसरीतिसेंन्यायमतमेंसंज्ञाकावाच्यताज्ञानउपमानप्रमाणकाफलहै औ
प्राचीनमतमेंवाक्यार्थानुभवकूंउपमानप्रमाणकहैहैं नवीनमतमेंसादृश्यविशिष्टपिंडदर्शनवावैधर्म्यविशिष्टपिंडदर्शन
कूंउपमानप्रमाणकहैहैं वेदांतमतमेंउपमितिउपमानकाअन्यस्वरूपहै ग्रामविषेगोव्यक्तिकूंदेखनेवालावनमेंजायकैगव
यकूंदेखैतबयहपशुगौकेसदृशहै ऐसाप्रत्यक्षहोवैहै तिसतें अनंतरमेरीगौइसपशुकेसदृशहै ऐसाज्ञानहोवैहै तहांग
वयमेंगोसादृशकाज्ञानउपमानप्रमाणकहियेहै औगौमेंगवयकासादृश्यज्ञानउपमितिकहियेहै यामतमेंवीउपमितिकाक

1555

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति· रणहीउपमानकहियेहै परंतुउपमितिकास्वरूपऔलक्षणभिन्नहै यातेंउपमानकेलक्षणभेदविनास्वरूपकाभेदासिद्धहोवै ४
२ हैं न्यायमतमेंतोसंज्ञाकासंज्ञीमेंवाच्यताज्ञानउपमितिकहियेहै औवेदांतमतमेंसादृश्यज्ञानतेंजन्यज्ञानकूंउपमितिकहे
हैं गवयमेंगोकेसादृश्यज्ञानतेंगोमेंगवयकासादृश्यज्ञानजन्यहै इसरीतिसैंउपमितिकालक्षणन्यायमतसेंभिन्नहैताका
ज्ञोकरणहोवैसोउपमानकहियेहै सादृश्यज्ञानजन्यज्ञानरूपउपमितिगोमेंगवयकासादृश्यज्ञानहै ताकाकरणगवयमेंगोका
सादृश्यज्ञानहैसोईउपमानहै यामतमेंउपमानप्रमाणव्यापारहीनहै उपमानतेंअनंतरउपमितिकीउत्पत्तिमेंकोईव्यापारमि
लैनहीं यामतमेंवैधर्म्यविशिष्टज्ञानतेंउपमितिकाअंगीकारनहीं काहेतेंसादृश्यज्ञानजन्यज्ञानकूंहीउपमितिकहेहैंअन्यकूं
नहीं औविचारसागरमेंन्यायकीरीतितेंउपमितिकास्वरूपकह्याहैताकायहअभिप्रायहै न्यायकीरीतिसेंउपमितिउपमानका
स्वरूपमानेंतौबीअद्वैतसिद्धांतमेंहानिनहींउलटान्यायकीरीतिसैंसिद्धांतकेअनुकूलउदाहरणमिलैहै काहेतेंवैधर्म्यज्ञानतें
उपमितिन्यायमतमेंमानीहै ताकासिद्धांतकेअनुकूलयहउदाहरणहै आत्मपदकाअर्थकैसाहै याप्रश्नकादेहादिवैध-
र्म्यवान् आत्माऐसाउत्तरसेंअनित्यअशुचिदुःखस्वरूपदेहादिकनसेंविधर्मानित्यशुद्धआनंदरूपआत्मपदकावाच्यहै
ऐसाएकांतदेशमेंविवेचनकालमेंमनकाआत्मासेंसंयोगहोयकेउपमितिज्ञानहोवैहै औसादृश्यज्ञानजन्यज्ञानकूंहीउपमि
तिमानेंसोआत्मामेंकिसीकासादृश्यनहीं यातेंजिज्ञासूकेअनुकूलउदाहरणमिलैनहीं यद्यपिअसंगत्वादिकधर्मनतेंआका २
शकेसदृशआत्माहै यातेंआकाशमेंआत्माकासादृश्यज्ञानउपमानहै आत्मामेंआकाशकासादृश्यज्ञानउपमितिहै यहजि
ज्ञासूकेअनुकूलउदाहरणसिद्धांतकीउपमितिकासंभवहै तथापिजिसअधिकरणमेंजिसपदार्थकेअभावकाज्ञानहोवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विहितांजलिनाविपश्चिताविदुषाश्रीशंकरेणभगवंतएतान्यासनानिपरिगृह्यतामितिविनयपूर्विकयोक्त्याऽर्पिताविष्टराआसनानियेभ्यस्तेपरमार्थस्य
संश्रयोयेषांतेमोक्षनिष्ठाअमीऋषयोऽमुनाश्रीशंकरेणसहकथाःकृतवंतः मोक्षसंश्रयाथाइतिकथानांवाविशेषणं ॥ ३८ ॥ कथानामंतरेंतरालेत
स्यसर्वज्ञस्यजननीमुनीनुवाच ॥ यदुवाचतदाह ॥ वयमद्यकृतार्थतांप्राप्तायद्यस्माद्भगवंतोगृहानुपागताः ॥ ३९ ॥ भवदागमनंनकेवलंकृतार्थ
तायाएवसंपादकमपितुजन्मांतरीयानंतसुकृतसूचकमपीत्याशयेनाह ॥ क्वेति ॥ बहुदोषभाजनंकलिःक्व ॥ क्वचयुष्मच्चरणावलोकनं ॥ तथा

विहितांजलिनाविपश्चिताविनयोक्त्यार्पितविष्टराअमी ॥ ऋषयःपरमार्थसंश्रयाअमुनासाकमचीकरन्क
थाः ॥ ३८ ॥ निजगादकथांतरेमुनीन्जननीतस्यसमस्तदर्शिनः ॥ वयमद्यकृतार्थतांगताभगवंतोयदुपाग
तागृहान् ॥ ३९ ॥ क्वकलिर्बहुदोषभाजनंक्वचयुष्मच्चरणावलोकनं ॥ तदलभ्यतचेत्पुराकृतंसुकृतंनःकिमिति
प्रपंचये ॥ ४० ॥ शिशुरेषकिलातिशैशवेयदशेषागमपारगोभवत् ॥ महिमापियदद्भुतोस्यतद्द्वयमेतत्कुरुते
कुतूहलं ॥ ४१ ॥ करुणार्द्रदृशानुगृह्यतेस्वयमागत्यभवद्भिरप्ययं ॥ वदतास्यपुराकृतंतपःक्षममाकर्णयि
तुंमयायदि ॥ ४२ ॥

चसमस्तदोषाश्रयेकलियुगेऽत्यंतालभ्यंतत्युष्मच्चरणावलोकनमलभ्यतचेत्तर्हिनोऽस्माकंपुराकृतंपुण्यंकिमितिप्रपंचयेतद्वर्णनमशक्यमित्यर्थः ॥
॥ ४० ॥ एवंस्तुत्याऽभिमुखीकृतान्मुनीन्किंचित्प्रष्टुमारभते शिशुरिति ॥ एषभवदग्रेस्थितःशिशुरतिबाल्येसर्वागमपारगोयदभवत्महिमाप्यस्य
यदद्भुतोभवदेतद्द्वयंकुतूहलंकुरुते ॥ ४१ ॥ भवदागमनमप्येतदद्भुतमाहात्म्यसूचकमित्याशयेनाह भवद्भिरप्यत्यंतालभ्यदर्शनैरपि ॥ तत्रापि
स्वयमागत्य ॥ तत्रापिकरुणार्द्रदृशाऽयमनुगृह्यते ॥ तस्मादस्यपुराकृतंतपोवदत मयाआकर्णयितुंयदिक्षमंयोग्यंतर्हिब्रूतेत्यर्थः ॥ ४२ ॥

1557

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महर्षीणांसंसदिसभायांतैरेवप्रेरितोऽतिवृद्धोऽगस्त्यःप्रतिव
इत्येवंप्रकारेणसादरंयथास्यात्तथासत्योच्चारितांवाचमाकर्ण्य ॥ सादरमाकर्ण्यैतिवा ॥ महर्षीणांसंसदिसभायांतैरेवप्रेरितोऽतिवृद्धोऽगस्त्यःप्रतिव
क्तुंप्रचक्रमे ॥ ४३ ॥ साक्षाच्छिवएवतवपत्याऽतितपसासमाराध्यलब्धोनत्वयंकश्चित्तपस्वीत्याशयेनाह ॥ तनयायेतित्रिभिः ॥ हेपतिव्रतेपूर्वं
तवपत्यापुत्रार्थंतपसाप्रसादितोरजनीवल्लभस्यचंद्रस्यखंडोमंडनमलंकारोयस्यसनिशाकरकलाशेखरोभगवान्शंकरोवचनमुपाददेप्रोक्तवान् ॥
त्वयासहैवतवपत्यातपस्तप्तमितिद्योतनायसंबोधनं ॥ ४४ ॥ शैवंवचनमुदाहरति ॥ वरयस्वेति असर्वविदःशतायुषःसुतान्वरयस्वापिवासर्वं

इतिसादरमीरितांतयागिरमाकर्ण्यमहर्षिसंसदि ॥ प्रतिवक्तुमभिप्रचोदितोघटजन्माप्रवयाःप्रचक्रमे
॥ ४३ ॥ तनयायपुरापतिव्रतेतवपत्यातपसाप्रसादितः ॥ स्मितपूर्वमुपाददेवचोरजनीवल्लभखंडमंडनः
॥ ४४ ॥ वरयस्वशतायुषःसुतानपिवासर्वविदंमितायुषं ॥ सुतमेकमितीरितःशिवंसतिसर्वज्ञमयाचता
त्मजं ॥ ४५ ॥ तदभीप्सितसिद्धयेशिवस्तवभाग्यात्तनयोयशस्विनि ॥ स्वयमेवबभूवसर्वविन्नततोऽन्योऽ
स्तियतःसुरेष्वपि ॥ ४६ ॥ इतितद्वचनंनिशम्यसामुनिवर्यंपुनरप्यवोचत ॥ कियदायुरमुष्यभोमुनेसकल
ज्ञोस्यनुकंपयावद ॥ ४७ ॥

तस्यतवपत्युरभिलषितस्यासिद्धयेस्वयमेवशिवोभाग्यात्तव
ज्ञमल्पायुषमेकंसुतंवरयस्वेतिईरितस्तवपतिर्हेसतिसर्वज्ञमात्मजमयाचत ॥ ४५ ॥ तस्यतवपत्युरभिलषितस्यासिद्धयेस्वयमेवशिवोभाग्यात्तव
तनयोबभूव ॥ हेयशस्विनीतिसंबोधयन्तवयशःख्यापनार्थंबभूवेतिसूचयति ॥ ननुसर्वज्ञमन्यमेवपुत्रंकुतोनदत्तवानितिचेत्तत्राह ॥ यतःकारणा
द्देवेष्वपितस्माच्छिवादन्यःसर्वज्ञोनास्तिततइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ इत्येवंप्रकारेणतस्यागस्त्यस्यवचनंमितायुषमित्यादिरूपंश्रुत्वा ॥ सासतीमुनिश्रेष्ठं
पुनरप्युवाच॥भोमुनेयतःसकलज्ञोऽस्यतोमुष्यायुःकियत्परिमितमस्तितत्करुणयावद ॥ यतोमितायुषमितिश्रुत्वाममत्रासोजातइतिभावः ॥४७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवंपृष्टोमुनिरुवाच ॥ शरदःसंवत्सराःअष्टतथापुनरष्टामिलित्वाषोडशेतियावत्अस्यतवपुत्रस्यायुर्यद्यपितथाप्यसौतेतनयःकारणांतरादस्मिन्भुवनेषोडशसंवत्सरान्पुनर्निवसिष्यतिवासंकरिष्यति॥४८॥इत्येवंप्रकारेणभाविनींभविष्यांकथांकुंभजेऽगस्त्येवादिनिसतिमुनयस्तंनिवार्यश्रीशंकरंसमुपामंत्र्यतेनघटजेनसहयथागतंजग्मुः ॥४९॥ अतिकष्टदांमुनिवाचंश्रुतवतींसतींवर्णयती ॥ सृणिनाअंकुशेनहस्तिनीवसामुनिवाचाऽर्दितापीडिताऽभवत् ॥ शुचिनाआषाढेनशैवलिनीशेवलंपद्मकाष्ठंतत्संबंधिनीपुष्करिणीवसाशोषिताऽभवत् ॥ वायुनाकदलीवकंपिताभवत् ॥ यतःपुत्रवत्सला ॥ ५० ॥एवमतिकष्टवतींमातरंश्रीशंकरोयदुक्तवान्तद्वक्तुमुपक्रमते ॥ अथमातुर्मुनिवाचाऽतिदुःखभाक्स्यनंतरंशोकेनपरीताव्याप्ताचेतनाबुद्धिर्यस्याः

शरदोष्टपुनस्तथाष्टतेतनयस्यास्यतथाप्यसौपुनः ॥ निवसिष्यतिकारणांतराद्भुवनेस्मिन्दशषट्चवत्सरान् ॥ ४८ ॥ इतिवादिनिभाविनींकथामृषिमुख्येघटजेनिवार्यतं ॥ ऋषयःसहतेनशंकरंसमुपामंत्र्ययपुर्यथागतं ॥ ४९ ॥ सृणिनाकरिणीवसार्दिताशुचिनाशैवलिनीवशोषिता ॥ मरुताकदलीवकंपितामुनिवाचासुतवत्सलाभवत् ॥५०॥ अथशोकपरीतचेतनांद्विजराडित्थमुवाचमातरं ॥ अवगम्यचसंसृतिस्थितिंकिमकांडेपरिदेवनातव ॥ ५१ ॥ प्रबलानिलवेगवेल्लितध्वजचीनांशुककोटिचंचले ॥ अपिमूढमतिःकलेवरेकुरुतेकःस्थिरबुद्धिमंबिके ॥ ५२ ॥

तांसंसारस्यस्थितिंक्षणभंगुररूपामवगम्याकांडेऽसमयेपरिदेवनाशोकःतवकिमर्थमपार्थेत्यर्थः ॥ ५१ ॥ अतिचंचलेशरीरेमूढमतिरपिस्थिरबुद्धिंनकुरुते ॥ त्वंत्वतिसुज्ञातत्रतांकर्तुमित्ययोग्येतिबोधयन्नाह ॥ प्रबलोयोऽनिलोवायुस्तस्यवेगेनवेल्लितोऽतिकंपितोयोध्वजस्तस्ययच्चीनदेशीयमतिसूक्ष्मंवस्त्रंतस्यकोटिरग्रभागस्तद्वच्चंचलेकलेवरेशरीरेस्थिरबुद्धिंमूढमतिरपिकःकुरुतेनकोपीत्यर्थः॥उक्ताशयसूचकंसंबोधनमंबिकेति ॥ तथाचास्मदंबिकाऽतिसुज्ञाऽतिचंचलेकलेवरेऽस्थिरबुद्धिस्त्वेनैवंशोचितुमनर्हासीत्यर्थः ॥ ५२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंचतत्तज्जन्मन्यनुभूतानांपुत्रादीनामानंत्यात्सर्वेषांशोकासंभवादेतेशोच्याएतेनेत्यस्मिन्नविनिगमकाभावान्नकेपिशोच्याइत्याशयेनाह ॥ कतीति
॥ इहास्मिन्संसारेकतिवधूर्ललनानाभुंजिहिनभुक्तातेसुताःक्व ॥ तावधूश्चक्व ॥ वयंचक्व ॥ तथाचभवसंगःपांथानांतत्तद्दिग्भ्यआगतानांपथिकाना
मेकस्मिन्प्रपादौयथासंगमस्तद्वद्भवसंगोप्यनियतःक्षणभंगुरश्चेत्यर्थः ॥ प्रसिद्धंचेदमित्याह ॥ खल्विति ॥ तस्मात्केपिशोच्यानभवंतीत्याशयः
॥ ५३ ॥ एवंशोकापहारकैर्वाक्यैर्मातरंप्रबोध्यस्वेनयदवश्यंकर्तव्यंतदाह ॥ भ्रमतामिति संसारमार्गेभ्रमादज्ञानाद्भ्रमतांकिंचिदपिसुखंनलक्ष

कतिनामसुतानलालिताः कतिवानेहवधूरभुंजिहि ॥ क्वनुतेक्वचताःक्ववावयंभवसंगःखलुपांथसंगमः ॥
॥ ५३ ॥ भ्रमतांभववर्त्मनिभ्रमान्नहिकिंचित्सुखमंबलक्षये ॥ तदवाप्यचतुर्थमाश्रमंप्रयतिष्येभवबंध
मुक्तये ॥ ५४ ॥ इतिकर्णकठोरभाषणश्रवणाद्वाष्पपिनद्धकंठया ॥ द्विगुणीकृतशोकयातयाजगदेगद्गद
वाक्ययामुनिः ॥ ५५ ॥

येऽपितुजननीजठरवासादिरूपंदुःखमेवेतिसूचयन्संबोधयति हेंऽबेति हियस्मादेवंतत्तस्माच्चतुर्थंसंन्यासाश्रममवाप्यसंसारलक्षणाद्बंधाद्विमुक्त्यर्थं
प्रकर्षेणयत्नंकरिष्यामि ॥ ५४ ॥ एवंश्रीशंकरवाक्यमुदाहृत्यतद्वचनेनद्विगुणीकृतशोकायाःसत्यावचनमुदाहर्तुमाह ॥ इत्येवंप्रकारेणयत्कर्णयो
:कठोरंदुःस्पर्शंभाषणंचतुर्थमाश्रममित्यादिरूपंतस्यश्रवणात्बाष्पैरश्रुभिःपिनद्धोपिहितःकंठोयस्याद्विगुणीकृतःशोकोयस्या अतएवगद्गदंवाक्यंयं
स्यास्तयामुनिःश्रीशंकरोजगदे कर्मणिप्रत्ययःएवंभूतासामुनिंजगादेत्यर्थः ॥ ५५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1561

यदुवाचतदाह ॥त्यजेति॥ इदानीमेवचतुर्थाश्रमंप्राप्यप्रयातिष्यइतीमांबुद्धिंत्यज ॥ तर्हिकिंकर्तव्यमितिचेत्तत्राह ॥ मेममवचनंशृणु ॥ किंतदितित
त्राह ॥ गृहमेधीगृहस्थोभव किंततइत्यतआह ॥ पुत्रंप्राप्नुहि ॥क्रतुभिर्यजनंचकुरु ॥ ततस्तदनंतरंयतिर्भवितासिभविष्यसि ॥ अंगहेपुत्रसतांशास्त्रो
क्तोऽयमेवक्रमइत्यर्थः॥ तथाचस्मृतिः॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेदिति ॥ ५६॥ किंचएकस्तनुभवःपुत्रोयस्यास्तथाविधाऽबलाऽहंत्वया
विरहिताशुचाशोकेनैवजीवितुंकथमुत्सहे॥पुत्रस्यतवैवंविधदुःखदातृत्वमनुचितमितिसूचयन्संबोधयति॥तनयेति ॥ पाठांतरेत्वयेत्यनेनसंबंधनीयं
किंचयदर्थंत्वमुत्पादितस्तदौर्ध्वदैहिकमपिप्रमृतायांकःकरिष्यतीत्यर्थः ॥ ५७ ॥ किंचाल्पविदापिवृद्धाजननीनपरित्यज्यतेयदिकेनचिदतिमूढेनत्य

त्यजबुद्धिमिमांशृणुष्वमेगृहमेधीभवपुत्रमाप्नुहि ॥ यजचक्रतुभिस्ततोयतिर्भवितास्यंगसतामयंक्रमः ॥ ५६ ॥
कथमेकतनूभवात्वयारहिताजीवितुमुत्सहेऽबला ॥ तनयैवशुचौर्ध्वदैहिकंप्रमृतायांमयिकःकरिष्यति ॥ ५७ ॥ त्व
मशेषविदप्यपास्यमांजरठांवत्सकथंगमिष्यसि ॥ द्रवतेत्हृदयंकथंनतेनकथंकारमुपैतिवादयां ॥ ५८ ॥ एवंव्यथां
तांबहुधाश्रयंतीमपास्तमोहैर्बहुभिर्वचोभिः ॥ अंबामशोकांविदधाद्विधिज्ञःशुद्धाष्टमेचिंतयदेतदंतः ॥ ५९ ॥

ज्यतेतर्हित्यज्यतां त्वंत्वशेषज्ञोपिमांस्वमातरंतत्रापिवृद्धांत्यक्तुमत्यन्तयोग्यांपरित्यज्यकथंगमिष्यसि मामपास्यगंतुमत्यंतायोग्योसीत्यर्थः वत्स
गमनंयथागोःपीडाकरंतथातवगमनंममेतिद्योतयन्संबोधयति ॥ वत्सेति ॥ एवमुक्तमप्यद्रवीभूतांतःकरणंपुत्रमालक्ष्याह ॥ द्रवतइतिननुवा
स्तवसंबंधाभावविदोममक्वापिममत्वाभावात्स्नेहवशात्कथंमेहृदयंद्रवीभूतंभवेदित्याशंक्यतत्त्वविदामतिदयालुत्वश्रवणात्तेहृदयंदयांकथंनप्राप्नोती
त्याह नकथमितिवा ॥ ५८ ॥ एवंप्रकारेणबहुधाव्यथांपीडामाश्रयंतींतांमातरमपास्तस्तिरस्कृतोमोहोऽविवेकोयैस्तैर्बहुभिर्वचोभिर्विधिंशोकनिवृ
त्तिप्रकारंजानातीतिविधिज्ञःश्रीशंकरःशोकरहितांविदधादकृत ॥ ततश्चशुद्धेऽष्टमवर्षेऽतर्मनसिएतद्वक्ष्यमाणमचिंतयत ॥ अष्टमवर्षात्मकस्य
कालस्यशुद्धत्वंकलिमलशून्यत्वं ज० ॥ ५९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदाचितयत्तद्दर्शयति ॥ ममेति ॥ मममनःसंसृतिसाधनंप्रवृत्तिमार्गंनेच्छति ॥ जननीपुनर्नचजिहासतिहातुंत्यक्तुंनैवेच्छति मामितिविपरिणामेन
संसृतिपदंवाऽनुषंजनीयं ननुजननीसंसृत्यनभिवांछिनंत्वांतवमनसाऽनिष्ठितांसंसृतिवाकुतोनजिहासतीत्याशंक्यतस्यास्तदीक्षणाभावादित्याह
नचेति तत्तांसंसृतितन्मानसमितिवा ॥ ननुत्वयाप्रसह्यप्रबोधनीयेतिचेत्तत्राह ॥ गुरुरिति ॥ अतएवसंन्यासाश्रयणेतस्याईषदनुशासनमाज्ञा
ऽपेक्षितं द्रुत० ॥ ६० ॥ एवंमनसिश्रीशंकरकृतांचितामुपवर्ण्यईषदनुशासनंग्रहीतुंतत्कृतंचरित्रंवर्णयति इत्येवंप्रकारेणविचिंत्यसकदाचिन्मज्ज

ममनमानसमिच्छतिसंसृतिनचपुनर्ज्जननीविजिहासति ॥ नचगुरुर्जननीतदुदीक्षतेतदनुशासनमीषद
पेक्षितं ॥ ६० ॥ इतिविचिंत्यसजातुमिमंक्षयाबहुजलांसरितंसमुपाययौ ॥ जलमगाहततत्रसमग्रहीज्जल
चरश्चरणेजलमीयुषः ॥ ६१ ॥ सचरुरोदजलेजलचारिणाधृतपदोऽन्हियतेऽबकरोमिकिं ॥ चलितुमेकपदंनच
पारयेबलवताविवृतोरुमुखेनह ॥ ६२ ॥

नेच्छयाबहुजलांनदींसमुपाययौ गत्वाजलमगाहत तत्रनद्यांजलंप्राप्नवतश्चरणेजलचरःसम्यगग्रहीत ॥ ६१ ॥ सचरुरोदरोदनंकृतवान्बलवता
विवृतमुरुबृहन्मुखयस्यतेनजलचारिणाग्राहेणधृतोगृहीतःपादोयस्यसहेंऽबजलेन्हियतेऽतःकिंकरोमि ॥ ननुजलद्बहिःकुतोनायासीत्याशंक्याह ए
कंपदंचलितुंनचपारये समर्थोनभवामि हेतिखेदे ॥ ६२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्स्वसुतरोदनंगृहस्थाजननीउपाशृणोत्श्रुत्वाचपरवशाऽतिविकलाद्रुतमाशुसरित्तटमवाप तीरंगतासाजनन्यपिजलगतस्यपुत्रस्यमुखंगतेप्राप्तेई क्षणेनेत्रेयस्याःसाइतिशुशोच कथमित्यतआह ममम‍ृतेरिति मरणात्प्रथमंममशरणंपतिस्ततःपतिमृत्यनंतरंपुत्रोमेशरणमभवत्॥सचतनयोमरिष्य तियतोनक्रस्यजलजंतोर्वशंगतोहंतातिकष्टं हेशिवपुरापूर्वमुचितामममृतिर्मरणंनाजनिनाभूत् शिवोपासकायाममाशिवप्राप्तिरत्यंतामुचितेतिसंबोध नाशयः इत्येवंशुशोचेत्यर्थः॥६३॥६४॥एवमतिशोकपरितांमातरमालक्ष्याह त्यजतीति हेंऽबमेचरणमयंचंचलोजलचरस्तेऽनुमतेनसकलेसंन्यसने परिकल्पितेसतित्यजति तथाचयदितवानुमतिस्तर्ह्यहंपरिकल्पयेसकलसंन्यासनमितिविपरिणामेनसंबंधनीयं ॥६५॥ इत्येवंप्रकारेणस्फुटंयथा

गृहगताजननीतदुपाशृणोत्परवशाद्रुतमापसरित्तटं ॥ ममम‍ृतेःप्रथमंशरणंधवस्तदनुमेशरणंतनयोभव
त् ॥ ६३ ॥ सचमरिष्यतिनक्रवशंगतःशिवनमेऽजनिहंतपुरामृतिः ॥ इतिशुशोचजनन्यपितीरगाजलग
तात्मजवक्त्रगतेक्षणा ॥ ६४ ॥ त्यजतिनूनमयंचरणंचलोजलचरोंऽबतवानुमतेनमे ॥ सकलसंन्यसनेप
रिकल्पितेयदितवानुमतिःपरिकल्पये ॥ ६५ ॥ इतिशिशौचकितावदतिस्फुटंव्यधितसानुमतिंद्रुतमंबि
का॥सतिसुतेभवितामयदर्शनंमृतवतस्तदुनेतिविनिश्चयः ॥ ६६ ॥तदनुसंन्यसनंमनसाव्यधादथमुमोच
शिशुंखलनक्रकः ॥ शिशुरुपेत्यसरित्तटमत्रसन्प्रसुवमेतदुवाचशुचावृतां ॥ ६७ ॥

स्यात्तथाशिशौवदतिसतिचकितासांऽबिकाद्रुतंशीघ्रमनुमतिमनुमोदनंव्याधिताकृत स्फुटमितिमध्यमणिन्यायेनात्रापिसंबंधनीयं शीघ्रानुमतिकर णेहेतुंतत्कृतंनिश्चयंदर्शयति सतिसुतेसुतस्यदर्शनंममभविष्यति मृतवतस्तुतद्दर्शनंनभविष्यतीतिविशेषेणनिश्चयोस्तीत्यर्थः ॥६६॥ तस्यामातुरनु मतेःपश्चाच्छ्रीशंकरःमनसासंन्यसनंव्यधादथसंन्यसनानंतरंदुष्टजलचरःशिशुंमुमोच संसाराख्येनाज्ञानजलचरेणदुष्टनक्रेणगृहीतस्यसंन्यासंवि नानमोक्षइत्याशयः ततःकिंवृत्तमित्यपेक्षायामाह शिशुरत्रसन्नदीतटमुपेत्यशोकेनव्याप्तांजननीमेतद्वक्ष्यमाणमुवाच ॥६७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शं० वि० यदुवाचतदाह हेमातर्विधेयमाज्ञापयात्रास्मिन्‌लोकेयत्संन्यासिनाकर्तुंयोग्यंतन्निश्चयेनकरोमि नाहंसंदिहेसंशययुक्तोनभवामि ननुसंन्यासिनासं डिं० टी०
ग्रहशून्येनत्वयाकर्तव्यंभोजनाच्छादनप्रदानंकःकरिष्यतीतिचेत्तत्राह वस्त्रेति ॥ येधनमिदंगृह्णंतिअमीवस्त्राशनेतवयथेष्टंप्रदेयुःयत्‌यस्मातधनंमम
पितृसंबंधितस्मादित्यर्थः यन्ममपैतृकंतदिदमितिवा व० ॥६८॥ननुसंन्यस्यत्वयिगतेरोगाधीनेमद्देहेसतिमरणप्राप्तौचकेद्रक्ष्यंतीतिचेत्तत्राह देहइति
॥८॥ हेमातस्तवदेहेरोगवशगेचपुनर्मरणप्रसक्तौअमीसनाभयःसपिंडाःशक्तिमनुसृत्यदर्शनंकरिष्यंति मरणानंतरंदाहादिसंस्कारंयथाविधानंकुर्युस्तत्रहे ॥५॥
तुद्वयमाहार्थस्यममपैतृकधनस्यग्रहणाज्जनानांभयाच्च तस्मादल्पमपिभयंत्वयानकर्तव्यमित्यर्थः ॥६९॥ संस्कृतिंचामीकुर्युरितिसुतोक्तमसहमाना 1564

मातर्विधेयमनुशाधियदत्रकार्यंसंन्यासिनातदुकरोमिनसंदिहेऽहं ॥ वस्त्राशनेतवयथेष्टममीप्रदेयुर्गृह्णंतियेधन
मिदंममपैतृकंयत् ॥ ६८ ॥ देहेंबरोगवशगेचसनाभयोऽमीद्रक्ष्यंतिशक्तिमनुसृत्यमृतिप्रसंगे ॥ अर्थग्रहाज्ज
नभयाच्चयथाविधानंकुर्युश्चसंस्कृतिममीनबिभेयमीषत् ॥ ६९ ॥ यज्जीवितंजलचरस्यमुखात्तदिष्टंसंन्यास
संगरवशान्ममदेहपाते ॥ संस्कारमेत्यविधिवत्कुरुशंकरत्वंनोचेत्प्रसूयममकिंफलमीरयत्वं ॥ ७० ॥

सत्युवाचयदिति संन्यासस्यसंगरोंऽगीकृतिस्तद्वशाज्जलचरस्यमुखाद्यज्जीवितंतवयज्जीवनंतदिष्टं संगरोंऽगीकृतौयुधीतिविश्वप्रकाशः तथापिममदे
हस्यपातेसतियत्रक्वापिस्थितस्त्वमागत्यविधिवन्ममदाहादिसंस्कारंकुरु ननुसंन्यासिनोममदाहादिकर्मण्यधिकाराभावात्कथमेवंवदसीतिचेत्तत्रा
ह हेशंकर परमेश्वरस्यतवनकिंचिदपिदोषावहमितिभावः ॥ ननुतथापिलोकविरुद्धत्वात्किमर्थमेवंविधेयमितितत्राह नोचेदिति मरणानंतरंदाहसं
स्कारस्याप्यलाभेसतित्वामुत्पाद्यमयाकिंफलंलब्धमितित्वमेवकथय ॥ ७० ॥ ॥८॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवंस्वदाहसंस्कारेऽतिनिर्बंधवतीमतिदुःखितांमातरमालक्ष्यश्रीशंकरउवाच हेंऽबान्हिदिवसेस्ववशगास्वाधीनारोगादिनापराधीनावशगावामांचित
य तत्रतवचिंतनसमयेसर्वसमयमाचारंविहायागमिष्यामि समयःशपथाचारसिद्धांतेष्विति मेदिनी मदुक्तेविश्वासंप्राप्नुहि मृतावपिसंस्कारंकरिष्ये
॥ ७१ ॥ संन्यासिनाकर्तुमयोग्यमप्यंगीकुर्वतोममैकाप्रार्थनात्वयाप्यवश्यंस्वीकर्तव्येत्याशयवानाहायंशिशुर्विधवामनाथांमांत्यक्त्वासंन्यासंकृ
तवानितिमांप्रतिकस्यांचिदप्यवस्थायांत्वयानचिंतनीयं ननुत्वयापरित्यक्तत्वादतिकष्टवत्यामयकथंनाचिंतनीयमितितत्राह स्थितवतामयाय
त्परिमितंफलंत्वयाप्राप्तव्यंहेमातस्तस्माच्छतगुणंफलमहंप्रापयिष्ये ॥ ७२ ॥ अनेनप्रकारेणमातरमुक्त्वासगोत्रजनमुवाचेत्याहेत्थमिति यदुवा

अह्न्यंबरात्रिसमयेसमयांतरेवासंचितयस्ववशगावशगाथवामां ॥ एष्यामितत्रसमयंसकलंविहायविश्वास
माप्नुहिमृतावपिसंस्करिष्ये ॥ ७१ ॥ संन्यस्तवान्शिशुरयंविधवामनाथांक्षिप्त्वेतिमांप्रतिकदापिनचिंतनी
यं ॥ यावन्मयास्थितवताफलमापनीयंमातस्ततःशतगुणंफलमापयिष्ये ॥७२॥इत्थंसमातरमनुग्रहणेच्छुरु
क्त्वाप्रोचेसनाभिजनमेषविचक्षणाग्र्यः ॥ संन्यासकल्पितमनाव्रजितोस्मिदूरंतांनिक्षिपामिजननीमधवांभ
वत्सु ॥ ७३ ॥ एवंसनाभिजनमुत्तममुत्तमाग्र्यःश्रीमातृकार्यमभिभाष्यकरद्वयेन॥संप्रार्थयत्स्वजननींविनयेन
तेषुनिक्षेपयन्नयनजांबुनिषिंचमानां ॥ ७४ ॥ आत्मीयमंदिरसमीपगतांयथासौचक्रेविदूरगनदींजननीहिता
य ॥ तत्तीरसंश्रितयदूद्वहधामकिंचित्सानिम्नगारभतताडयितुंतरंगैः ॥ ७५ ॥

चतदाह संन्यासेति संन्यासायकल्पितंमनोयेनसोहंदूरंगंतुमुद्यतोस्मि तस्मात्पतिरहितांतांजननींभवत्सुरक्षार्थेस्थापयामि ॥७३॥एवंप्रकारेणोत्तमं
सनाभिजनमुत्तमाग्र्यःश्रीशंकरःश्रीमातृकार्यसम्यगुक्त्वा मुकुलितेनहस्तद्वयेनसम्यक्प्रार्थयन्सन्नेत्रजांबुभिर्निषिंचमानांमातरंसःविनयेनतेषुसना
भिजनेषुनिक्षेपयत्।७४।संन्यासग्रहणायश्रीशंकरस्यगमनंवर्णयिष्यन्गमनसमयेसयत्कृतवान्तद्वर्णयितुमारभते आत्मीयेति अथानंतरमसौयां
विदूरगांनदींमातुर्हितायस्वीयमंदिरसमीपगतांचक्रेतस्यास्तीरंसंश्रितस्ययदुश्रेष्ठस्यश्रीकृष्णस्यधामस्थानंकिंचित्सानदीतरंगैस्ताडयितुमारभत ७५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंचवर्षासुहरौदेवेंद्रेवर्षतिसति इंद्रोदुश्च्यवनोहरिरितिहलायुधः किंचिज्जलंभगवतोविष्णोरंतःपुरमागत्यमृत्सांप्रशस्तांमृत्तिकामथनुनोद ततश्चान
वद्याकृष्णमूर्तिःक्रमेणचलितुमारब्धप्रवृत्ता ननुतज्जलंतद्धिंसांकुतोनमुक्तवदितितत्राह देवोऽविभेदिवभयंप्राप्तइवाभवत् भीरुर्हिंसांचकोपिनत्यज
तीत्यतइत्यर्थः ॥ ७६ ॥ एवंनद्याक्लेशितोभगवान्श्रीकृष्णोऽनंगयाऽशरीरयावाचाश्रीशंकरमवदत् उक्तवान्तांविशिनष्टिमातुश्चरणकमलद्वंद्वंप्रणिप
त्यकेनापिप्रकारेणमातुराज्ञांचपरिगृह्यगंतुकामंसकलदोषविनिर्मुक्तं एतेनस्वस्याज्ञानादिदोषनिवृत्त्यर्थंतस्यगमनेच्छावारिता तर्हिकिमर्थंतस्यग
मनेच्छेत्यतआह जनानांहितंएकोमुख्योरसोयस्यतंतथाचलोकोपकारायतस्यगमनसंन्यासग्रहणादिकमितिभावः ॥ ७७ ॥ यदुवाचतदाह

वर्षासुवर्षतिहरौजलमेत्यकिंचिदंतःपुरंभगवतोपनुनोदमृत्सां ॥ आरब्धमूर्तिरनघाचलितुंक्रमेणदेवोबि
भेद्विवनमुंचातिभीरुर्हिंसां ॥ ७६ ॥ प्रस्थातुकाममनघंभगवाननंगवाचावदत्कथमपिप्रणिपत्यमातुः ॥
पादारविंदयुगलंपरिगृह्यचाज्ञांश्रीशंकरंजनहितैकरसंसकृष्णः ॥ ७७ ॥ आनेष्टदूरगनदींकृपयाभवान्यां
सामातिमात्रमनिशंबहुऊर्मिहस्तैः ॥ क्लिश्नातिताडनपरावदकोभ्युपायोवस्तुंक्षमेननितरांद्विजपुत्रया
सि ॥ ७८ ॥ आकर्ण्यवाचमितितामतनुंगुरुर्नःप्रोद्धृत्यकृष्णमचलंशनकैर्भुजाभ्यां॥प्रातिष्ठपन्निकटएवन
यत्रबाधानघेत्युदीर्यसुखमास्वचिरायचेति ॥ ७९ ॥

यांदूरगनदींभवान्कृपयाआनीतवान्साऽत्यंतंनिरंतरमनंतोर्मिरूपैर्हस्तैस्ताडनपरामांक्लिश्नाति क्लेशनिवृत्तौवदकोभ्युपायोयतोवस्तुंनसमर्थोभवामि
हेद्विजपुत्र त्वंयास्यतःसुतरांवस्तुंनक्षमेइत्यर्थः ॥ ७८ ॥ श्रीकृष्णोक्तंश्रुत्वाकिंकृतवानित्यपेक्षायामाहाकर्ण्येति इत्येवंतामतनुमशरीरांवाचंश्रुत्वा
नोऽस्माकंगुरुरितिग्रंथकारोक्तिः अचलमपिकृष्णंशनकैर्भुजाभ्यांप्रकर्षेणांगभंगादिकंविनैवोद्धृत्यसमीपएवप्रकर्षेणपुनश्चलनंयथानस्यात्तथास्था
पितवान् ननुनिकटस्थापनेनपुनरपिनदीबाधाभविष्यतीतिचेतत्राह यस्मिन्स्थानेनद्याबाधानास्तितत्रेत्यर्थः चिरकालंसुखमुपविशेत्युक्त्वाच
त्रातिष्ठयदित्यन्वयः ॥ ७९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तस्माच्छ्रीकृष्णात्भक्तिवशात्स्वमातुरप्यनुज्ञांगृहीत्वासंसारमहासमुद्राद्विरक्तिमान्संन्यसनायदूरंगंतुंमनोऽकृत किमर्थमित्यतआह किमिति नौका यांस्थितः समुद्रेकिंपतितुमिच्छति नैवेच्छतितद्वद्वैराग्यादिलक्षणनौस्थितःसंसारसमुद्रेपतितुंनैवेच्छतीत्यर्थः॥८०॥इत्थमनेनप्रकारेणससुधीःनिशां तात्सदनान्निरगात्निर्गतवानितियोजना निशांतपस्त्यसदनंभवनागारमंदिरमित्यमरः॥ तंविशिनष्टि माताचलक्ष्मीश्चमातृलक्ष्मीशौनिरवग्रहोनिरव धिर्मातृविष्णोरनुग्रहोयस्मिन् एतेनमातृश्रीकृष्णाभ्यांप्रसन्नतापूर्वंकंप्रेषितइतिबोधितंनन्वतिशीघ्रंकिमर्थंगतवानित्यतआह घटजेनागस्त्येनबोधि

तस्मात्समातुरपिभक्तिवशादनुज्ञामादायसंसृतिमहाब्धिविरक्तिमान्सः ॥ गंतुंमनोव्यधितसंन्यसनायदूरंकिन्नौ
स्थितःपतितुमिच्छतिवारिराशौ ॥ ८० ॥ इत्थंसुधीःसनिरवग्रहमातृलक्ष्मीशानुग्रहोघटजबोधितभाविवेदी ॥
एकांततोविगतभोग्यपदार्थतृष्णःकृष्णेप्रतीचिनिरतोनिरगान्निशांतात् ॥ ८१ ॥ यस्यात्रिनेत्रापरविग्रहस्यकामे
ननास्थीयतदृक्पथेपि ॥ तन्मूलकःसंसृतिपाशबंधःकथंप्रसज्येतमहानुभावे ॥ ८२ ॥

तंभविष्यंजानातीतितथा ननुजीवनोपायमेवकुतोनकृतवानित्यतआहात्यंतंविगतानिवृत्ताभोग्यपदार्थेभ्योदेहादिभ्यस्तृष्णायस्यसयतःकृषिर्भूवा चकःशब्दोणश्चनिर्वृतिवाचकःतयोरैक्यंपरंब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयतइत्युक्तत्वात्कृष्णेप्रतीचिप्रत्यगभिन्नेब्रह्मणिनितरांरतइत्यर्थः ॥८१॥ तस्मिन्नैत च्चित्रमित्याह यस्यत्रीणिनेत्राणिकामदाहकाग्निसोमसूर्यात्मकानियस्यसअपरोविग्रहोयस्यतस्यापरविग्रहस्येतिवा दृष्टिपथेपिकामेननास्थीयत कामःस्थातुंनशक्तस्तस्मिन्महानुभावेकाममूलकःसंसृतिपाशबंधःकथंप्रसज्येत ॥ ८२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नसुनित्यमुक्तस्यशिवस्यसंन्यासेनकिमाधिक्यमितिचेत्तत्राह॥ स्मरेणेति ॥ विधिर्ब्रह्मा [illegible] द्रस्तौकामेनमोहितौजातुकदाचिदुत्पथौचसुतानुधा
वनेनताराग्रहेणचोन्मार्गौचतथाऽहंशिवोपिकामेनमोहितोमोहिन्याःकेशस्तनादिनिरीक्षणपरोऽहहेत्यत्यंताश्चर्ये मोहिनीमगामनुगतवानितिविम्रा
र्यसःशिवोयतीशस्यवपुषाकामेनकृतायाःपीडायाःवार्त्तयाप्युज्झितोऽजागरीदतिशयेनजागर्तिस्मेत्यर्थःपृथ्वी ॥८३॥किंचयोधानुष्कवरोधनुष्मच्छ्रे
ष्ठोमारःकामोऽसुराननिष्पत्राकुरुत सपुंखानांशराणामपरपार्श्वेषुनिर्गमनान्निष्पत्रान्कृतवान् तथासुरानपिसपत्राकरोत्सपुंखशरप्रवेशनेनसपत्रा

स्मरेणकिलमोहितौविधिविधूचजातूत्पथौतथाहमपिमोहिनीकचकुचादिवीक्षापरः ॥ अगामहहमो
हिनीमितिविमृश्यसोऽजागर्धतीशवपुषाशिवःस्मरकृतार्तिवार्तोज्झितः ॥८३॥ निष्पत्राकुरुतासुरा
नपिसुरान्मारःसपत्राकरोदप्यन्यानिहनिष्कुलाकृततरांगंधर्वविद्याधरान् ॥ योधानुष्कवरोनराननल
सात्कृत्योदलासीदलंयस्तस्मिन्नशुशूरतैषमुनिभिर्वर्ण्यःकथंशंकरः ॥ ८४ ॥

न्कृतवान् सपत्रनिष्पात्रदतिव्यथनइतिडाच् तथाऽन्यानपिगंधर्वविद्याधरानिहजगतिनिष्कुलाकृततरांनिर्गतंकुलमंतरवयवानांसमुहोयेभ्यस्त
थाभूतानत्यंतंकृतवान्निष्कुलान्निष्कोषणेइतिडाच् तथानराननलसात्साकल्येनाग्निरूपान्कृत्वाभृशंदग्ध्वालमुदलासीत्सम्यग्दीप्तिमानभूत्तस्मिन्का
मेयःअशुशूरतशूरतांकृतवान्सैषःश्रीशंकरोमुनिभिःकथंवर्ण्योनकथमपीत्यर्थः शार्दू० ॥ ८४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पठितंश्रुतमनूनकमखंडमादराद्रहस्येकांतआलोक्यप्रविभज्यचसारासारविभागंविधार्यनिजसुखेनिमज्जतःविधेयान्शिष्यान्ससुधीःश्रीशंकरोविदधेतमांसम्यक्कृतवान् ॥ ३२ ॥ विनीतशालीविनयवान् वसं० ॥ ३३ ॥ अन्योन्ययोगस्यसंयोगस्यविरहस्त्वनयोःशंकरतज्जनन्योरसह्योयद्यपितथापिवोढुंपरिणयंकर्तुंनोइच्छतिस्म ॥ तत्रहेतुमाह ॥ मनुष्यभावाद्देवाधिदेवत्वात् मेरुंप्राप्तःकिंदुष्प्रदेशंदुष्टस्थानमभिवांछतिनैववांछतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ आप्ताश्चबंधवश्चतेआप्ताश्चतेबंधवश्चेतिवा ॥ कृतासंपादिताविद्यायेनतममुंश्रितंगार्हस्थ्यंयेनएवंविधंचिकीर्षवःकर्तुमिच्छ

पठितंश्रुतमादरात्पुनःपुनरालोक्यरहस्यनूनकं॥प्रविभज्यनिमज्जतःसुखेसविधेयान्विदधेतमांसुधीः ॥ ३२ ॥ सर्वार्थतत्त्वविदपिप्रकृतोपचारैःशास्त्रोक्तभक्त्यतिशयेनविनीतशाली ॥ संतोषयन्सजननीमनयत्कियंतिसंमानितोद्विजवरैर्दिवसानिधन्यः ॥ ३३ ॥ साशंकरस्यशरणंसचतज्जनन्यात्वन्योन्ययोगविरहस्त्वनयोरसह्यः ॥ नोवोढुमिच्छतितथाप्यमनुष्यभावान्मेरुंगतःकिमभिवांछतिदुष्प्रदेशं ॥ ३४ ॥ कृतविद्यममुंचिकीर्षवःश्रितगार्हस्थ्यमथाप्तबंधवः ॥ अनुरूपगुणामचिंतयन्ननवद्येषुकुलेषुकन्यकां ॥३५॥ अथजातुदिदृक्षवःकलाववतीर्णंमुनयःपुरद्विषं ॥ उपमन्युदधीचिगौतमत्रितलागस्त्यमुखाःसमाययुः ॥३६॥ प्रणिपत्यसभक्तिसन्नतःप्रसवित्र्यासहतान्विधानवित् ॥ विधिवन्मधुपर्कपूर्वयाप्रतिजग्राहसपर्ययामुनीन् ॥ ३७ ॥

वोऽनुरूपागुणायस्यास्तथाभूतांकन्यकांदोषवर्जितेषुकुलेष्वचिंतयन् वि० ॥ ३५ ॥ अथानंतरंजातुकदाचित्त्रिपुरघ्नंमहादेवंकलियुगेश्रीशंकरात्मनाऽवतीर्णंद्रष्टुमिच्छवउपमन्युप्रमुखामुनयःसमाययुः ॥ ३६ ॥ भक्त्यासम्यक्नतोनम्रःप्रसवित्र्याजनन्यासहप्रणामपूजादिविधानवित्सश्रीशंकरस्तान्मुनीन्प्रणिपत्यप्रकर्षेणनत्वा मधुपर्कःपूर्वमादौयस्यास्तयासपर्ययापूजयाप्रतिजग्राह स्वागतंकृतवानित्यर्थः ॥ ३७ ॥

1569

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नितांतमत्यंतंहृदयंगमोमनोहरःसारोयस्यांतुलिताऽमृतधारायया तांगांवरंगृहाणेतिवाचंनिशम्यरचितोऽजलिबंधोयेनसबद्धांजलिः सुष्ठुसंधाप्रति
ज्ञायस्यसभूपतिःस्वोपमंस्वसदृशंपुत्रमियेषइच्छतिस्म ॥ २७ ॥ एवंप्रार्थितःश्रीशंकरस्तंराजानमुवाच एतत्सहस्रसंख्याकंहाटकंममहितायना
स्तितर्हिकथंविधेयमितितत्राह नोऽस्माकंगृहवासिजनायतुदेहि तवेहितंमनसाऽभिलषितंशीघ्रंभविष्यतितस्मात्पूर्णमनसाशीघ्रंयाहिगच्छेतिमध्य
मणिन्यायेनशीघ्रपदमुभयत्रसंबंधनीयं ॥ २८ ॥ एवंजनसमाजउक्त्वापुनारहसिएकांतेराजवर्यकुलस्यवृद्धेर्निमित्तभूतांश्रुतिप्रसिद्धां वित्तंकी

तांनितांतहृदयंगमसारांगांनिशम्यतुलितामृतधारां ॥ भूपतिःसरचितांजलिबंधःस्वोपमंसुतमियेषसुसंधः ॥
॥ २७ ॥ नोहितायममहाटकमेतद्देहिनस्तुगृहवासिजनाय ॥ ईहितंतवभविष्यतिशीघ्रंयाहिपूर्णमनसेत्यवद
त्तं ॥ २८ ॥ राजवर्यकुलवृद्धिनिमित्तांव्याजहाररहसिश्रुतिवित्तां ॥ इष्टिमस्यसकलेष्टविधातुस्तुष्टिमापहित
याक्षितिनेता ॥ २९ ॥ सविशेषविदासभाजितःकविमुख्येनकलाभृतांवरः ॥ अगमत्कृतकृत्यधीर्निजां
नगरीमस्यगुणानुदीरयन् ॥ ३० ॥ बहवःश्रुतिपारदृश्वनःकवयोऽध्यैषतशंकराद्गुरोः ॥ महतःसुमहांतिदर्श
नान्यधिगंतुंफणिराजकौशलीं ॥ ३१ ॥

वेधनेवाच्यलिंगंख्यातेविचारितइतिमेदिनी ॥ अस्यराज्ञःसकलेष्टानांविधातापरमात्मातस्यइष्टिंपूजांव्याजहारतत्प्रकारमुक्तवान् तयाइष्ट्या भू
मिनेताराजातुष्टिमापेत्यर्थः ॥ २९ ॥ विशेषज्ञेनकविमुख्येनश्रीशंकरेणसभाजितःपूजितःकलाभृतांमध्येश्रेष्ठः कृतंकृत्यंयययासाबुद्धिर्यस्यसराजा
ऽस्यगुणान्वर्णयन्स्वीयांनगरीमगमत्गतवान् वि० ॥ ३० ॥ एवंकेरलभूमिपतेर्वरप्रदानादिकमुपवर्ण्यवृत्तांतांतरंवर्णयितुमुपक्रमते ॥
बहवःश्रुतिपारदृश्वनोवेदपारंदृष्टवंतःकवयःश्रीशंकरान्महतःगुरोर्महांतिदर्शनानिशास्त्राणिफणिराजस्यशेषस्यकुशलतामधिगंतुमध्यैषताध्ययनंकृत
वंतइत्यर्थः ॥ ३१ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1571

अनुभवसैंबाधितहै नेत्रसंयोगसैं अव्यवहितउत्तरक्षणमैंचाक्षषज्ञानहोवैहै तैसाही अनुभवहोवैहै यातैंउक्तरीतिअसंगतहै औउक्तरीति
सैंशक्तिकेदोज्ञानसिद्धहोवैहै एकतोसंस्कारकाउद्बोधकसामान्यज्ञान औदूसरासंस्कारजन्यभ्रमज्ञान इसरीतिसैंशक्तिकेदोज्ञानवी अनु
भवविरुद्धहैं नेत्रसंयोगहोतेंही इदंरजतंयह एकहीज्ञान अनुभवसिद्धहै यातैंरजतानुभवजन्यसंस्कारसहित नेत्रसंयोगतैं इदंरजतं
यहभ्रमहोवैहै यहकहनावीसंभवैनहीं औस्रगंधिचंदनंयाज्ञानकूं अलौकिकप्रत्यक्षमानैंतौवी इदंरजतंयहज्ञानतोज्ञानलक्षणअ
लौकिकसंबंधजन्यसंभवैनहीं काहेतैंस्रगंधिचंदनंयहज्ञानहुयेंस्रगंधकेउत्कर्षअपकर्षकासंदेहहोवैहै यातैंस्रगंधकेउत्कर्षअप
कर्षकानिश्चयरूपप्राकट्यअलौकिकज्ञानतैंहोवैनहीं यहमान्याचाहियेजोअलौकिकज्ञानतैंवीविषयकाप्राकट्यहोवैतोस्रगंधकेअ
पकर्षादिकनकासंदेहसंभवैनहीं औइदंरजतंयाभ्रमतैंऔसत्यरजतमैंइदंरजतंयाप्रमातैंरजतकीप्रकटतासमहोवैहै जोभ्रमस्थ
लमैंरजतकीप्रकटतान होवै तौरजतकेपरिमाणादिकनकासंदेहहुयाचाहिये औपरिमाणादिकनकासंदेहहोवैनहीं यातैंभ्रमज्ञा
नतैंरजतकीप्रकटताहोवैहै औज्ञानलक्षणसंबंधजन्यज्ञानतैंविषयकीप्रकटताहोवैनहीं यातैंइदंरजतंयाभ्रमज्ञानकाहेतुज्ञानलक्ष
णसंबंधनहीं औविचारकरैंतौज्ञानरूपसंबंधकहूवीसंभवैनहीं काहेतैंज्ञानलक्षणसंबंधसैंअलौकिकप्रत्यक्षहोवैहै यापक्षकायहनि
ष्कर्षहै जहांएकपदार्थकीअनुभवजन्यस्मृतिहोवै अथवाअनुभवजन्यसंस्कारहोवै औअपरपदार्थसैंइंद्रियकासंबंधहोवै तहांइंद्रि
यसंबंधीमैंस्मृतिगोचरपदार्थकीअथवासंस्कारगोचरपदार्थकीप्रतीतिहोवैहै इंद्रियसंबंधीपदार्थतौविशेष्यरूपतैंप्रतीतहोवैहै
औस्मृतिगोचरपदार्थविशेषणरूपतैंप्रतीतहोवैहै जैसैंस्रगंधिचंदनंयाज्ञानमैंनेत्ररूपइंद्रियसंबंधीचंदनविशेष्यहै औस्मृति
गोचरस्रगंधविशेषणहै तैसैंइदंरजतंयाभ्रमज्ञानमैंवीइंद्रियसंबंधीशक्तिविशेष्यहै औस्मृतिकागोचरअथवासंस्कारकागो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वरजतत्वविशेषणहै विशेषणविशेष्यदोनूंकाज्ञानप्रत्यक्षहै यापक्षका अंगीकारहोवैतौ अनुमानप्रमाणकाउच्छेद होवैगा काहेतैं
पर्वतोवन्हिमान ऐसा अनुमितिज्ञान अनुमानप्रमाणतैंहोवैहै हेतुमैंसाध्यकीव्याप्तिकेस्मरणतैं अथवा साध्यकीव्याप्तिके उद्बुद्धसं
स्कारनतैं अनुमितिज्ञानहोवैहै यह अर्थ अनुमाननिरूपणमैंनिर्णीतहै साध्यकीव्याप्तिकीस्मृतिहोवैं नयव्याप्तिनिरूपकसाध्यकी
वीस्मृतिहोवैहै यातैंपर्वतसैंनेत्रकासंयोग औ वन्हिकीस्मृतिसैं पर्वतोवन्हिमान् ऐसैंप्रत्यक्षज्ञानकासंभवहोतैंपक्षमैं साध्यनिश्चय
रूप अनुमितिज्ञानकाजनक अनुमानप्रमाणका अंगीकारनिष्फलहै औ गोतमकणादकपिलादिकसर्वज्ञकृतसूत्रनमैं अनुमानप्रमा
णप्रत्यक्षसैंभिन्नकह्याहै जो अनुमानप्रमाणनिष्प्रयोजनहोतातौसूत्रनमैंनहींकहते यातैं अनुमानकाप्रयोजनसाधकज्ञानरूप
संबंधजन्य अलौकिकप्रत्यक्ष अलीकहै औ जो अन्यथाख्यातिवादी ऐसैंकहै प्रत्यक्षज्ञानकीविषयतासैं अनुमितिज्ञानकीविषय
ताविलक्षणहै इसीवास्तेप्रत्यक्षकेविषयमैंपरिमाणादिकनकासंदेहनहींहोवैहै औ अनुमितिकेविषयमैपरिमाणादिकनकासं
देहहोवैहै इसरीतिसैंपरोक्षता अपरोक्षतारूपविषयताकाभेद अनुमितिज्ञान औ प्रत्यक्षज्ञानकेभेदसैंहोवैहै यातैंपरोक्षतारूपवि
षयताकासंपादकप्रत्यक्षज्ञाननहीं किंतु अनुमितिज्ञानहै ताकाहेतु अनुमानप्रमाणहै यहकथनवीसंभवैनहीं काहेतैंलौकिकप्रत्य
क्षकीविषयतातौ अनुमितिसैंविलक्षणहै परंतु स्रगंधिचंदन इत्यादिकज्ञानस्रगंधादिक अंशमैं अलौकिकहै तहांस्रगंधकाज्ञान अनु
मितिकेसमानहै जैसैं अनुमितिज्ञानकेविषयमैंउत्कर्षादिक अनिर्णीतहोवैहै तैसैंस्रगंधकेउत्कर्षादिकवी अनिर्णीतहै यातैं अलौकिक
प्रत्यक्षकीविषयताका अनुमितिकीविषयतासैंभेदनहीं औ भ्रमरूप अलौकिकप्रत्यक्षकीविषयतारजतत्वादिकनमैंहै ताकातौ यद्यपि अनुमि ५
तिकीविषयतासैंभेद अनुभवसिद्धहै इसीवास्तेरजतकी अस्यतादिकनकासंदेहहोवैनहीं तथापिज्ञानलक्षणसंबंधजन्य अलौकिकप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यक्षप्रमाकी विषयतासें भेद नहीं जैसें अनुमितिके विषयमें अप्रमाकत्व है तैसें अलौकिक प्रत्यक्ष प्रमाके विषय गंधमें अप्रमाकत्व है
यातें ज्ञानलक्षण संबंधसें पर्वतमें वन्हिका अलौकिक प्रत्यक्षसें प्रकाश संभवै है अनुमितिज्ञानवास्ते अनुमान प्रमाण व्यर्थ होवैगा औ
अनुमान प्रमाण सर्वज्ञवचनसिद्ध है यातें अनुमानकी व्यर्थतासंपादक अलौकिक प्रत्यक्ष असिद्ध है औ जो यह कह्या विलक्षण विषयता
कासंपादक अनुमितिज्ञान है ताका हेतु अनुमान प्रमाण व्यर्थ नहीं यह कथन ही असंगत है काहेतें जहां अनुमान प्रमाणतें अनुमिति
होवै तहां सारे अलौकिक प्रत्यक्षकी सामग्री है जैसें पर्वतमें वन्हिकी अनुमितिसें पूर्व धूमदर्शन व्याप्तिज्ञान तो अनुमितिकी सामग्री है
औ पर्वतसें नेत्रका संबंध औ वन्हिकी स्मृति यह अलौकिक प्रत्यक्षकी सामग्री है दोनूं ज्ञानोकी दो सामग्री होतें पर्वतमें वन्हिका प्रत्य
क्षरूप ही ज्ञान होवैगा अनुमितिज्ञान होवै नहीं यातें अनुमान प्रमाण व्यर्थ ही होवै है काहेतें यह न्यायशास्त्रका निर्णीत अर्थ है जहां ए
कगोचर अनुमितिसामग्रीका औ अपरगोचर प्रत्यक्षसामग्रीका समावेश होवै तहां अनुमितिसामग्री प्रबल है जैसें पर्वतसें नेत्रसंयो
गतो पर्वतके प्रत्यक्षकी सामग्रीका औ वन्हिकी अनुमितिकी सामग्रीका समावेश हुयां वन्हिकी अनुमिति होवै है पर्वतका प्रत्यक्षज्ञान हो
वै नहीं जहां धूमसें औ वन्हिसें नेत्रका संयोग होवै औ धूममें वन्हिकी व्याप्तिका ज्ञान होवै तहां वन्हिकी अनुमितिकी सामग्री है औ वन्हिके प्र
त्यक्षकी सामग्री है यातें समानगोचर उभय ज्ञानकी सामग्री है तहां प्रत्यक्षसामग्री प्रबल है यातें वन्हिका प्रत्यक्ष ही ज्ञान होवै है व-
न्हिकी अनुमिति होवै नहीं औ पुरुषमें पुरुषो न वा ऐसा संदेह होयके पुरुषत्वव्याप्यकरादिमानयं ऐसा प्रत्यक्षरूप परामर्शज्ञान
औ पुरुषतें नेत्रका संयोग होवै तहां परामर्श तो पुरुषकी अनुमितिकी सामग्री है औ पुरुषके नेत्रसंयोग पुरुषके प्रत्यक्षकी सामग्री है त
हां पुरुषका प्रत्यक्षज्ञान ही होवै है पुरुषकी अनुमिति होवै नहीं यातें एक विषयके दोनूं ज्ञानोंकी सामग्री होवै तिनमें प्रत्यक्षसामग्री प्रबल है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1574

वृति· ५१ यातैंवन्हिकी अनुमितिसामग्री होतैंबी अलौकिकसंबंधरूपसामग्रीतैं वन्हिका प्रत्यक्षज्ञान ही होवैगा इसैरीतिसैं ज्ञानलक्षणाअ पृ· ७
लौकिकसंबंधतैं प्रत्यक्षज्ञानकीउत्पत्तिमानैं अनुमानप्रमाणव्यर्थहै जोनैयायिकऐसैंकहै यद्यपिभिन्नविषयहोवैं तहां प्रत्यक्षसाम
ग्रीसैं अनुमितिसामग्रीप्रबलहै औ समानविषयहोवै तहां अनुमितिसामग्रीसैं प्रत्यक्षसामग्री प्रबलहै तथापिसमानविषयहोतैबी-
लौकिकप्रत्यक्षकीसामग्री अनुमितिसामग्रीसैं प्रबलहै औ अलौकिकप्रत्यक्षकीसामग्रीतो अनुमितिकीसामग्रीसारैं दुर्बलहै. या
तैंपर्वतमैं वन्हिकी अनुमितिसामग्रीसैं अलौकिकप्रत्यक्षसामग्रीकाबाधहोनेतैं अनुमानप्रमाणनिष्फलनहीं यहकहनाबीसमी
चीननहीं काहेतैं जहांस्थाणुमैं स्थाणुर्नवा ऐसासंदेहहोयकै पुरुषत्वव्याप्यकरादिमानयं ऐसाभ्रमहोयकै पुरुषएवायं ऐसाभ्रम
रूपप्रत्यक्षहोवैहै तहांनैयायिकवचनकीरीतिसैं अनुमितिहुईचाहिये प्रत्यक्षनहींहुयाचाहिये काहेतैं उक्तस्थलमैं स्थाणुमैं पुरुषत्व
काप्रत्यक्षहोनैतैं भ्रमप्रत्यक्षहै औ भ्रमप्रत्यक्षकीतेरेमतमैं अलौकिकसामग्रीहै यातैं अनुमितिसामग्रीसैं अलौकिकप्रत्यक्षकीसामग्री
कूं दुर्बलमानैं उक्तस्थलमैं अनुमितिहुईचाहिये औ जोउक्तस्थलमैं पुरुषकाभ्रम अनुमितिरूपमानैं तोउत्तरकालमैं पुरुषंसाक्षात्करोमि ऐ
सा अनुव्यवसायहोवैहै सोनहींहोवैगा पुरुषमनुमिनोमि ऐसा अनुव्यवसायहुयाचाहिये यातैं दोनूंसमानविषयहोवै तहां लौकिकप्र
त्यक्षसामग्रीकीनांई अलौकिकप्रत्यक्षसामग्रीबी प्रबलहै अनुमितिसामग्रीदुर्बलहै यातैं ज्ञानलक्षणासंबंधसैं प्रत्यक्षकीउत्पत्तिमा
नैंतौ अनुमितिज्ञानकूं बाधिकै पर्वतादिकनमैं वन्हिआदिकनका प्रत्यक्षज्ञान ही होवैगा यातैं अनुमानप्रमाणनिष्फलहोवैगा इसकार
णतैं जो अनुमानप्रमाणमानैं तौ ताकेमतमैं स्मृतिज्ञानसहितइंद्रियसंयोगतैं वासंस्कारसहितइंद्रियसंयोगतैं व्यवहितवस्तुका प्रत्यक्षज्ञान संभवै ५
नहीं यातैं शुक्तिकारजतत्वरूपतैं प्रतीतिरूप अन्यथाख्यातिसंभवैनहीं औ अनिर्वचनीयख्यातिवादमैं जोदोषकह्याहै अनिर्वचनीय ख्या-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1575

तिकेमतमैंविषयकीऔज्ञानकीकारणतादोषमैंमानैहैं अन्यथाख्यातिवादमैंज्ञानकीकारणतामानैहैं विषयकीनहीं यातैंअन्यथाख्याति
वादमैंलाघवहै औअनिर्वचनीयख्यातिवादीकूंअन्यथाख्यातिबीमाननीहोवैहै अन्यथाख्यातिवादीकूंअनिर्वचनीयख्यातिमाननी
होवैनहीं यातैंबीलाघवहै यहकथनबीअविवेकमूलकहै काहेतैंअन्यथाख्यातिवादीकूंश्रुतिस्मृतिकीआज्ञातैंस्वप्नमैंतौअनिर्वच
नीयख्यातिअवश्यमाननीचाहिये वेदउक्तअर्थकापुरुषमतिकल्पितयुक्तिसमुदायसैंअन्यथाभावकल्पनआस्तिककूंयोग्यनहीं औशु
क्तिरजतकातादात्म्यप्रतीतहोवैहै तैसैंइदंपदार्थमैंरजतत्वकासमवायप्रतीतहोवैहै तैसैंइदंपदार्थकाऔरजतकातादात्म्यप्रतीतहोवैहै
इदंपदार्थशुक्तिहै शुक्तिरजतकातादात्म्यअन्यस्थानमैंप्रसिद्धनहीं यातैंपुरोवर्त्तिदेशमैंशुक्तिरजतकातादात्म्यअनिर्वचनीयउपजै
है जोअनिर्वचनीयतादात्म्यकीउत्पत्तिनहींमानैंतौअप्रसिद्धकीअपरोक्षप्रतीतिनहींहोवैगी औतादात्म्यकीअपरोक्षप्रतीतिहोवैहै
औजोंनेयाथिकआग्रहतैंयहकहैशुक्तिमैंरजतत्वकासमवायहीभासैहै याकाबीयहअर्थहै समवायसंबंधतैंरजतत्वभासैहै औशु-
क्तिरजतकातादात्म्यभासैनहीं ऐसाकहैंतौशुक्तिज्ञानतैंउत्तरकालमैंनेदंरजतंऐसाबाधहोवैहै ताकाबाध्यइदंपदार्थमैंरजतकाता
दात्म्यहै जोभ्रमकालमैंइदंपदार्थमैंरजतकातादात्म्यनहींभासैतौबाधनिर्विषयहोवैगा जोकेवलरजतत्वकासमवायहीशुक्तिमैंभासै
तौनात्ररजतत्वंऐसाबाधहुयाचाहिये यातैंशुक्तिमैंरजतकातादात्म्यभासैहै सोशुक्तिरजतकातादात्म्यउभयसापेक्षहै कहूंप्रसिद्ध
नहीं यातैंअनिर्वचनीयतादात्म्यकीउत्पत्तिअन्यथाख्यातिवादमैंआवश्यकहै केवलअन्यथाख्यातिसैंनिर्वाहहोवैनहीं औअनि
र्वचनीयख्यातिवादीकूंअन्यथाख्यातिमाननीहोवैहै औअद्वैतग्रंथकारोंनेमानीहैं यहकथनबीअद्वैतग्रंथनकेअभिप्रायकेअज्ञा
नतैंहै काहेतैंअद्वैतवादमैंकहूंबीअन्यथाख्यातिनहींसारैअनिर्वचनीयख्यातिहै बहुतक्याकहैं जहांप्रमाज्ञानकहैहैं तहांबीअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्वैतसिद्धांतसैं विषयऔज्ञान अनिर्वचनीयहै औकितनेंस्थानोंमें अन्यथाख्याति लिखीहै ताका यहतात्पर्यहै जहां अधिष्ठान आरोप्य
कासंबंधहोवै औपरोक्षभ्रमहोवै तहां अन्यथाख्यातिबी संभवैहै परंतुसारैअन्यथाख्यातिसंभवैनहीं जहांआरोप्यव्यवहितदुयां
अपरोक्षभ्रमहोवै तहांअनिर्वचनीयख्याति आवश्यकहै यातैंआवश्यक अनिर्वचनीयख्याति हीसारैमानीचाहियै इसरीतिसेंअ
न्यथाख्यातिकाकथनसंभवाभिप्रायतैंहै अंगीकरणीयत्वाभिप्रायतैंनहीं जहांआत्मसत्ताको अनात्ममें अन्यथाख्यातिकही तहां
बी आत्मसत्ताका अनिर्वचनीयसंबंधउपजैहै इसरीतिसैंजहां अनिर्वचनीयसंबंधीकीउत्पत्तिनहीं संभवै तहांअनिर्वचनीयसं
बंधकाअंगीकारहै तैसैं परोक्षभ्रमहोवै तहांबी अनिर्वचनीयविषयकीउत्पत्तिब्रह्मविद्याभरणमेंलिखीहै परंतुपरोक्षभ्रमहोवै
तहांअन्यथाख्यातिमानैंतौबीदोषनहीं है इसवास्तेसरलबुद्धितैंपरोक्षभ्रम अन्यथाख्यातिरूपकह्याहै औजोऐसेंकहै तदेवेदंरज
तं इसरीतिसैंशक्तिमैंरजतकाप्रत्यभिज्ञाभ्रमहोवै तहांअनिर्वचनीयरजतकीपुरोवर्तिदेशमेंउत्पत्तिमानैंतौसन्निहितरजतमें तौतत्ता
संभवैनहीं यातैंदेशांतरस्थरजतवृत्तिरजतत्वकी औतत्ताकीशक्तिपदार्थमेंप्रतीतिहोवैहै अथवाताादात्म्यसंबंधसैंदेशांतरस्थरजतकी
प्रतीतिहोवैहै यातैंउक्तस्थलमें अन्यथाख्याति आवश्यकहै यहकथनबीअसंगतहै काहेतैंउक्तप्रत्यभिज्ञामैंबीअनिर्वचनीयरजतही
विषयहै देशांतरस्थनहीं काहेतैंप्रमातासैंसंबंधविना अपरोक्षअवभाससंभवैनहीं औदेशांतरस्थरजतका प्रमातासैंसंबंधबाधित
है यातैंदेशांतरस्थरजतकी प्रतीतिनहीं औजहांयथार्थप्रत्यभिज्ञाहोवै तहांबीतत्ताअंशमेंस्मृतिहै यहसिद्धांतहै यातैंतदेवेदं रजतं
यहभ्रमरूपप्रत्यभिज्ञाबीतत्ताअंशमेंस्मृतिहै औइदं रजतं इतनेअंशमें अनिर्वचनीयप्रत्यक्षहै यातैंकहूंबी अन्यथाख्याति आव-
श्यकनहीं जहांअनिर्वचनीयविषयकीउत्पत्तिनहीं संभवै तहांअनिर्वचनीयसंबंधकीउत्पत्तिहोवैहै जैसैंआत्मअनात्मका अन्योन्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1577

वछेदकसो होवैहै शाब्दबोधकीजनकतासकलसक्तपदमेंरहैहै नाकेसमानदेशमेंशक्तिरहैहै यातेंशाब्दबोधकीजनकताकाअ
वछेदकशक्तिसंभवैहै लक्षणिकपदमेंवीशाब्दबोधकीजनकतामानें तौलाक्षणिकपदमेंशक्तिहैनहीसाब्दबोधकीजनकता
है यातेंन्यूनदेसवृत्तिहोनेतेंशाब्दबोधकीजनकताकाअवछेदकशक्तिसोसंभवैनहीं औ शक्लालाक्षणिकसारेपदनमेंरहनेवा-
ला एकधर्महैनहीं यातेंशाब्दबोधकीजनकतानिरवछेदकहोवेगी सोनिरवछेदकजनकताअलीकहै दंडकुलालादिकनमेंघटादि
कनकीजनकताके अवछेदकदंडत्वकुलालत्वादिकहै यातेंनिरवछेदकजनकताअप्रसिद्धहै इसरीतिसें लाक्षणिकपदकूं शाब्दबो
धकीजनकतानहीं यह मीमांसाकामतहै औअद्वैतवादकाअतिविरोधीहै काहेतें महावाक्यनमेंसकलपदलाक्षणिकहै तिनतेंशा
ब्दबोधकीअनुपपत्तिहोवेगी यातेंइसमतकाखंडनअवश्यकर्तव्यहै तामेंयहदोषहै गंगायांग्रामः यावाक्यमेंग्रामपदसेंतीरवि
षेशाब्दबोधमानेंतोग्रामपदकीतीरमेंवीशक्तिहुईचाहिये काहेतें जोपदलक्षणाविनाजिसअर्थविषेशाब्दबोधकाजनकहोवैतिस
पदकीताअर्थविषेशक्तिहै यहनियमहै मीमांसकमतमेंग्रामपदलक्षणाविनातीरविषेशाब्दबोधकाजनकहोनेतेंतीरमेंश क्तिहुया
चाहिये औयहनियमहै जापदमेंजिसअर्थकीवृत्तिहोवे तापदसेंतिसअर्थविषेस्मृतिहोवैहै औतिसअर्थविषेहीतापदसेंशाब्दबो
धहोवैहै मीमांसकमतमेंयानियमकाभंगहोवेगा काहेतें मीमांसकमतमें लक्षणावृत्तितोतीरमेंगंगापदकी औतीरकीस्मृतिवीगंगापदसेंऔ
रतीरविषेशाब्दबोधगंगापदसेंनहीं किंतुशाब्दबोधतीरकाग्रामपदसेंहोवैहै ताग्रामपदकीतीरमेंशक्तिवालक्षणावृत्तिनहीं औग्रामपद
सेंतीरकीस्मृतिवीनहीं यातेंयहमतबुद्धिमानोकूंहसनेयोग्यहै औग्रामपदतेंतीरकाशाब्दबोधमानेग्रामविषेशाब्दबोधनहींहोवैगा-
काहेतेंजहांहरिआदिकएकपदकीअनेकअर्थनमेंशक्तिहै तहांवीएककालमेंएकपुरुषकूंहरिपदसेंएकहीअर्थकाबोधहोवैहै जोअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति नेकपदार्थनका एकपदसें बोध होवैतौ हरियाकहनेतें वानरकेऊपरिसूर्यहै इसरीतिसें शाब्दबोध हुवाचाहिये जैसें एकग्रामपदतें प्र
१२ परस्परसंबंधीग्राम तीरकाशाब्द बोध होवैहै तैसें एकहरिपदतें परस्परसंबंधीवानरसूर्यकाशाब्दबोध हुवाचाहिये जो ऐसें कहै ३
एकपदतें दोशक्यकाशाब्दबोधहोवैनहीं तौ एकपदतें अपनेशक्यकेसाथिअपनें अशक्य अलक्ष्यकेसंबंधका तौ शाब्दबोध अ
त्यंतदूर है यातें लाक्षणिकनानुभावकहै यहमीमांसाकावचनअसंगत है औ जो लाक्षणिकशब्दकूं शाब्दानुभवकी जनकतामें दो
षकह्याशाब्दबोधकीजनकताकाअवछेदकनहींमिलैगाताकायहसमाधानहै शब्दमेंशक्ति औ लक्षणाकेभेदतें दोप्रकारकी वृ
त्ति है कहूं अर्थकीशक्तिवृत्ति है कहूं अर्थकी लक्षणावृत्ति है शाब्दबोधकीजनकताशब्दमात्रमें है औ वृत्तिवी शब्दमात्रमें है यातें
तिसजनकताकेसमानदेशमें रहनेतें ताका अवछेदकवृत्ति है अथवा शाब्दबोधकीजनकताका अवछेदकयोग्यशब्दत्व है इस
रीतिसें लाक्षणिकपदसें वी शाब्दबोध होवै है महावाक्यनमें जहत्लक्षणा औ अजहत्लक्षणा नहीं किंतु भागत्यागलक्षणा
है ताकी रीति विचारसागरमें लिषी है सो भागत्यागलक्षणा महावाक्यनमें लक्षितलक्षणा नहीं किंतु केवललक्षणा है काहेतें ल-
क्ष्यचेतनतें वाच्यका साक्षात्संबंध है परंपरा नहीं जहां भागत्यागलक्षणा होवै तहां वाच्यका एकदेस लक्ष्य होवै है ता वाच्य
के एकदेसतें वाच्यका साक्षात्संबंध होवै है यातें केवललक्षणा होवै है औ महावाक्यतें जिज्ञासूकूं अखंडब्रह्मका बोध होवै
ऐसा ईश्वरका अनादितात्पर्य है यातें निरूढलक्षणा है प्रयोजनवती नहीं इहां ऐसी संका होवै है वाच्यअर्थका लक्ष्यचेतनसें संबं
धमानें तो लक्ष्यअर्थमें असंगताकी हानि होवैगी संबंध नहीं मानें तो लक्षणा बनै नहीं काहेतें शक्यसंबंध अथवा बोध्यसं १२
बंधकूं लक्षणा कहै है सो असंगमें संभवै नहीं ताका यह समाधान है वाच्यअर्थमें चेतन औ जड दोभाग हैं ताका चेतनभाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कालक्ष्यअर्थमैं तादात्म्यसंबंधहै सकलपदार्थनकास्वरूपमैं तादात्म्यसंबंधहोवैहै वाच्यभागचेतनकास्वरूपहीलक्ष्यचेतनहै
यातैंवाच्यमैंचेतनभागकालक्ष्यचेतनमैंतादात्म्यसंबंधहै औवाच्यमैंजडभागकालक्ष्यचेतनसैं अधिष्ठानतासंबंधहै कल्पित
केसंबंधतैं अधिष्ठानकास्वभावविगरैनहीं औअपनैंतादात्म्यसंबंधसैंवीस्वभावकीहानिहोवैनहीं यातैंलक्ष्यअर्थकीअसं
गताबिगरैनहीं अन्यसंकातत्पदकीअखंडचेतनमैंलक्षणामानैंऔत्वंपदकीवीअखंडचेतनमैंलक्षणामानैंतोपुनरुक्ति
दोषहोनैंतैं घटोघटः इसवाक्यकीनांईअप्रमाणवाक्यहोवैगा दोनूंपदनकालक्ष्यअर्थजुदामानैंतोंअभेदबोधकतानहींहो
वैगी ताकायहसमाधानहै मायाविशिष्टऔअंतःकरणविशिष्टतोतत्पदऔत्वंपदकाशक्यहै उपहितलक्ष्यहै जोब्रह्मचेतन
दोनूंपदनकालक्ष्यहोवैतोपुनरुक्तिदोषहोवैसोब्रह्मचेतनलक्ष्यनहीं किंतुमायाउपहितचैौअंतःकरणउपहितलक्ष्यहै सोउपा
धिकेभेदतैंभिन्नहैंपुनरुक्तिनहीं औउपहितदोनूंपरमार्थसैंअभिन्नहैं यातैंअभेदबोधकतावाक्यकूंसंभवैहै इसरीतिसैं तत्प
दार्थऔत्वंपदार्थकाउद्देशविधेयभावमानिकेअभेदबोधकतानिर्दोषहै तत्पदार्थमैं परोक्षताभ्रमनिवृत्तिकेअर्थतत्पदार्थकूंउद्देश
करिकेत्वंपदार्थताविधेयहै त्वंपदार्थमैं परिछिन्नताभ्रमनिवृत्तिकेअर्थत्वंपदार्थकूंउद्देशकरिकेतत्पदार्थताविधेयहै औपुनरुक्ति
केपरिहारवास्तेकोईग्रंथकारकायहतात्पर्यहै जोदोपदनकूंभिन्नभिन्नलक्षकतामानैंतोपुनरुक्तिकीशंकाहोवैसोभिन्नभिन्नलक्ष
कतानहीं किंतुमीमांसकरीतिसैंदोनूंपदमिलिकैंअखंडब्रह्मकेलक्षकहैं इसीवास्तेप्राचीनआचार्योंनैंमहावाक्यनकूंप्रातिपाद
कार्थमात्रकीबोधकताकहीहै यद्यपिउद्देशविधेयभावशून्यअर्थकाबोधकवाक्यलोकमैंअप्रसिद्धहै तथापिअलौकिकअर्थ
महावाक्यनकाहै यातैंअप्रसिद्धिदोषनहीं किंतुभूषणहै जोअप्रसिद्धदोषहोवैतोअसंगिअर्थकीबोधकतावीवाक्यकूंलो

1579

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1580

कमैंअप्रसिद्धहै याते असंगिब्रह्मकीबोधकतावीमहावाक्यनकूंनहींहोवैगी जैसैंलोकमैं अप्रसिद्ध असंगिब्रह्मकीबोधकतामा
नियेहै तैसैंउद्देशविधेयभावशून्यअखंड अर्थकीबोधकतासंभवैहै इसरीतिसैं लक्षणाके प्रसंगमैं बहुतविचारप्राचीनआचा
र्यौंनैं लिख्याहै कोई आधुनिकग्रंथकारलक्षणाविनाशक्तिवृत्तिसैंहीमहावाक्यनकूंअद्वितीयब्रह्मकीबोधकतामानैंहैं तिनोंनैंय
हप्रकारलिख्याहै विशिष्टवाचकपदकेअर्थकाअन्यपदकेविशिष्टअर्थसैंजहांसंबंधनहींसंभवै तहांपदकीशक्तिसैंहीविशेष
णकूंत्यागिकैंविशेष्यकीप्रतीतिहोवैहै जैसैंअनित्योघटः यावाक्यमैंघटत्वविशिष्टव्यक्तिकावाचकघटपदहै ताकाअनित्यत्ववि
शिष्टअनित्यपदार्थसैंअभेदसंबंधबोधनकरियेहै औघटत्वजातिनित्यहै यातैंघटत्वविशिष्टकाअनित्यपदार्थसैंअभेदबाधि
तहोनेतैंताकाअनित्यपदार्थसैंअभेदसंबंधसंभवैनहीं तहांघटत्वरूपविशेषणकूंत्यागिकैंव्यक्तिमात्रकीघटपदसैंस्मृतिऔअनित्य
पदार्थसैंसंबंधबोधरूपशाब्दबोधहोवैहै तैसैंगेहेघटः यावाक्यमैं घटत्वरूपविशेषण कूंत्यागिकैंविशेष्यव्यक्तिमात्रकीघटप
दसैंस्मृतिऔशाब्दबोधहोवैहै तैसैं घटेरूपं यावाक्यमैंवीघटत्वकूंत्यागिकैंव्यक्तिमात्रकीप्रतीतिहोवैहै काहेतैं गेहेघटः यावा
क्यतैंगेहकीआधेयताघटपदार्थमैंप्रतीतहोवैहै औघटत्वजातिमैंअपनाआश्रयव्यक्तिकीआधेयताहोवैहै गेहकीआधेयता
बाधितहै यातैंघटत्वकूंत्यागिकैंव्यक्तिमात्रमैंगेहकीआधेयताकासंबंधबोधनकरियेहै तैसैंगेहपदार्थमैंगेहत्वकात्यागहो
वैहै घटेरूपं यावाक्यमैंवीघटत्वकूंत्यागिकैंद्रव्यस्वरूपव्यक्तिमात्रमैंअधिकरणता औरूपत्वकूंत्यागिकैंगुणमात्रमैंआधेय
ताप्रतीतहोवैहै काहेतैंघटपदार्थकीआधेयतावालारूपपदार्थहै यहवाक्यकाअर्थहै तहांघटत्वकीआधेयताकिसीमैंहैनहीं ९३
यातैंघटत्वकूंत्यागिकैंव्यक्तिमात्रघटपदकाअर्थहै ताकीआधेयतारूपत्वजातिमैंनहीं किंतुरूपव्यक्तिकीआधेयतारूपत्वमैंहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1581

कारणतें काव्यप्रकाशादिकसाहित्यग्रंथनमैंनिरूढलक्षणाऔप्रयोजनवतीलक्षणाकेभेदउदाहरणसहितलिषेहैं ऐ
छिकलक्षणालिषीनहीं गदाधरभट्टाचार्यादिकोंनें ऐछिकलक्षणालिषीहै तिनकातात्पर्यऐछिकलक्षणाकीसंभावना
मैंहै औ ऐछिकलक्षणावालेपदकाप्रयोगसाधूहै इसअर्थमैंतात्पर्यनहीं लक्षणाकेअवांतरभेदमम्मट्टआदिकोंनें-
औरबहुतलिषेहै तथापिवेदांतग्रंथनमेंकहुंलिषेनहीं यातेंजिज्ञासूकूंतिनकेलिषणेंकाउपयोगनहीं जैसेंशक्यतावच्छेदकमेंशक्तिहै तैसेंलक्ष्यतावच्छेदकतीरत्वादिकनमें गंगादिकपदनकीलक्षणानहीं किंतुव्यक्तिमात्रमेंलक्षणावृत्ति
होवैहै औपदकीवृत्तिविनालक्ष्यतावच्छेदककीस्मृतिऔशाब्दबोधहोवैहै यहवार्ताशब्दार्थनिर्णयकेग्रंथनमेंप्रतिपादनकरीहै औमीमांसाकेमतमेंलाक्षणिकशब्दसैंलक्ष्यअर्थकीस्मृतितोहोवैहै औलक्ष्यअर्थकेशाब्दबोधकाहेतुलाक्षणिकपदनहीं किंतुलाक्षणिकपदकेसमीपजोपदांतरसोअपनेंशक्यअर्थकेशाब्दबोधकाऔलक्ष्यअर्थकेशाब्दबोधकाहेतुहोवैहै जैसेंगंगायांघोषः यावाक्यमेंगंगापदतीरमेंलाक्षणिकहै सोतीरकीस्मृतिकाहेतुहै औतीरविषेशाब्दबोधकाहेतुनहीं किंतुतीरविषेशाब्दबोधकाहेतुऔअपनेंशक्यविषेंशाब्दबोधकाहेतुग्रामपदहै यामतकीसाधकयहयुक्तिहै लाक्षणिकशब्दकूंशाब्दबोधकीजनकतामानेंतोसकलशाब्दबोधकीजनकताकाअवच्छेदकधर्मकालाभनहीं
होवैगा काहेतें मीमांसाकेमतमेंतोशाब्दबोधकीजनकतालाक्षणिकपदमैंहैनहीं किंतुशक्तपदमैंहै यातेंशाब्दबोधकीजनकताकाअवच्छेदकशक्तिहै औलाक्षणिकपदकूंबीशाब्दबोधकीजनकतामानेंतोताजनकतासेंशक्तिन्यूनवृत्ति ११
होनेतें ताकाअवच्छेदकनहींहोवैगा जोन्यूनदेशवृत्तिऔअधिकदेशवृत्तिनहोवै किंतुजाकेसमानदेशवृत्तिजोहोवैताकाअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तात्पर्य संभवे नहीं यातें तत्पद इदं पद के शक्य में परोक्षता अपरोक्षता भाग कूं त्यागि के वस्तु भाग में लक्षणा होने तें भागल
क्षणा है इस रीति सें तीनि भांति की लक्षणा प्रयोजनवती लक्षणा औ निरूढ लक्षणा भेद तें दो प्रकार की है जहां शक्ति वाले
पद कूं त्यागि के लाक्षणिक शब्द प्रयोग में प्रयोजन कहिये फल होवे सो प्रयोजनवती लक्षणा कहिये है जैसें गंगापद की
तीर में प्रयोजनवती लक्षणा है तीरे ग्रामः ऐसा कहें तौ तीर में शीतपावनतादिकन की प्रतीति होवे नहीं गंगापद सें तीर
का बोधन करें गंगा के धर्म शीतपावनतादिक तीर में प्रतीत होवें हैं इसी वास्ते व्यंजनावृत्ति कूं आलंकारिक मानें हैं न्याय
मत में शीतपावनतादिक शब्दबोध के विषय नहीं किंतु अनुमिति के विषय हैं तथाहि गंगातीरं शीतपावनत्वादिमत्
गंगापदबोध्यत्वात् गंगावत् यह अनुमान है सर्वथा प्रयोजनवती लक्षणा है औ पद की जिस अर्थ में शक्तिवृत्ति होवे
नहीं औ शक्य की नांई जिस अर्थ की प्रतीति जिस पद सें सर्व कूं प्रसिद्ध होवे तिस अर्थ में ता पद की प्रयोजनशून्य लक्ष-
णा निरूढ लक्षणा कहिये है जैसें नीलादिक पदन की कोशरीति सें गुण गुणी में शक्ति मानें तौ गौरव दोष है औ शक्यताव
च्छेदक एक एक धर्म का लाभ होवे नहीं यातें गुणमात्र में शक्ति है औ नीलो घट इत्यादिक वाक्यन कूं स्रुणने हो सर्व पुरुषन कूं
गुणी की प्रतीति अति प्रसिद्ध है यातें नीलादिक पदन की गुणी में प्रयोजनशून्य लक्षणा होने तें निरूढ लक्षणा है निरूढल
क्षणा शक्ति के सदृश होवै है कोई विलक्षण अनादि तात्पर्य होवे तहां निरूढ लक्षणा होवे है औ जहां प्रयोजन औ अनादि
तात्पर्य दोनूं होवें नहीं किंतु ग्रंथकार अपनी इछा तें लाक्षणिक शब्द का प्रयोग बिना प्रयोजन करें हैं तहां तीसरी ऐछिक
लक्षणा होवै है परंतु अनादितात्पर्य औ प्रयोजन बिना लाक्षणिक शब्द के प्रयोग कूं विद्वान् समीचीन नहीं कहे हैं इसी

1582

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1583

धोलक्षणाऐसाकहेहैं शक्यसाक्षात्संबंधोलक्षणाऐसानहींकहेहैं इसरीतिसें लक्षिताकहियेशक्यसंबंधत्वरूपस्व
लक्षणवालीलक्षणालक्षितलक्षणाशब्दकाअर्थहै सोपरंपरासंबंधस्थलमेंसंभवैहै यद्यपिलक्षितलक्षणाशब्दका
उक्तअर्थसाक्षात्संबंधस्थलमेंबीसंभवैहै तहांबीलक्षितलक्षणाकहीचाहिये तथापि लक्षितालक्षणालक्षितलक्ष
णायाकहनेंकायहअभिप्रायहै शक्यसाक्षात्त्वविशिष्टसंबंधत्वरहिताकेवलशक्यसंबंधत्वरूपलक्षणवतीलक्ष
णालक्षितलक्षणा यातेंकेवललक्षणाकासंग्रहहोवैनहीं इसरीतिसें कर्मधारयसमासहै औरकितनेंग्रंथनमेंय
हलिष्याहै सिंहोदेवदत्तइत्यादिवाक्यनमेंसिंहादिशब्दगौणीवृत्तिसें पुरुषादिकनकेबोधकहैं जैसेंशक्तिऔलक्ष
णापदकीवृत्तिहै तैसेंतीसरीगौणीवृत्तिहै पदकेशक्यअर्थमेंजोगुणहोवैतिसवालेअशक्यअर्थमेंपदकीगौणी
वृत्तिकहियेहै जैसेंसिंहपदकेशक्यमेंशूरतादिकगुणहैं तिनवालाजोसिंहशब्दकाअशक्यपुरुषतामेंसिंहशब्दकी
गौणीवृत्तिहै सोपूर्वप्रकारसेंलक्षणाकेअंतर्भूतहै औचौथीव्यंजनावृत्तिअलंकारग्रंथनमेंलिषीहै ताकायहउदाहर
णहै शत्रुग्रहमेंभोजननिमित्तप्रवृत्तपुरुषकूंदूसराभियपुरुषकहैहै विषंभुंक्ष्वतहांविषकाभोजनकरयहशक्तिवृत्तिसें
वाक्यकाअर्थहै औभोजनकेअभावमेंवक्ताकातात्पर्यहै सोभोजनमेंशक्तिवालेपदकीअभावमेंसंबंधकेअभावतेंल
क्षणाबीबनेनहीं यानेंशत्रुगृहतेंभोजननिवृत्तिवाक्यकाव्यंग्यअर्थहै व्यंजनावृत्तिसेंजोअर्थप्रतीतहोवैसोव्यंग्यअ
र्थकहियेहै अन्यउदाहरणसंध्याकालमेंअनेकपुरुषनकूंनानाकार्यमेंप्रवृत्तिनिमित्तकिसीनेंसूर्योस्तंगतः यहवाक्य
उच्चारणकिया ताकूंसुनिकेंनानापुरुषतिसकालमेंअपनेंअपनेंकर्तव्यकूंजानिकेंप्रवृत्तहोवैहै तहांअनेकपुरुषन-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1584

कूंनानाकर्तव्यकाबोधव्यंजनावृत्तिसेंहोवैहै इसरीतिसें व्यंजनावृत्तिके अनेकउदाहरणकाव्यप्रकाशकाव्यप्रदीप
आदिकग्रंथनमेंमम्मटगोविंदभट्टआदिकोंनेंलिखेहैं सोबहुतउदाहरणशृंगाररसकेहैं यातेंनहींलिखे न्यायग्रंथनमें-
व्यंजनावृत्तिकाबीलक्षणावृत्तिमें अंतर्भावकह्याहे औरजोआलंकारिककहेहैं शक्यसंबंधीअर्थकातोलक्षणावृत्तिसें-
बोधसंभवेहे औशक्यअर्थके असंबंधीअर्थमें लक्षणासंभवेनहींताकीशब्दसेंप्रतीतिके अर्थव्यंजनावृत्तिमानीचा
हियेताकायहसमाधानहै साक्षात्औपरंपराभेदतेंसंबंधदोप्रकारकाहोवैहै तिनमेंसाक्षात्संबंधतोपरस्परकिनोंका
हीहोवैहै सर्वकाहोवेनहीं औपरंपरासंबंधतोसर्वपदार्थनकापरस्परसंभवेहे बहुतक्याकहैं गोत्वअश्वत्वकाबीप
रस्परव्यधिकरणतासंबंधहै घटाभावऔघटपरस्परविरोधीहैं तोबीघटाभावकाघटमेंप्रतियोगितासंबंधहै औघट
काअपनेंअभावमेंस्ववृत्तिप्रतियोगितानिरूपकतासंबंधहै इसरीतिसें सर्वपदार्थनकाआपसमेंपरंपरासंबंधसंभ
वेहे यातेंव्यंग्यअर्थबीशक्यसंबंधीहोनेतेंलक्ष्यके अंतर्भूतहै औव्यंजनावृत्तिकाप्रतिपादनकाव्यप्रकाशमें औरता
कीटीकामेंजयरामभट्टाचार्यादिकोंनेंलिख्याहै तैसेंकाव्यप्रदीपमें औताकीटीकाउद्योतनमेंनागोजीभट्टनेंलिख्या
है ताकाखंडनबीन्यायग्रंथनमेंलिख्याहै औव्याकरणग्रंथनमेंकहूंखंडनलिख्याहै कहूंप्रतिपादनलिख्याहै अद्वै
तसिद्धांतमेंखंडनकावाप्रतिपादनकाआग्रहनहीं यातेंप्रतिपादनकीरीतिमात्रजनाईहै शक्तिऔलक्षणादोवृत्ति
सर्वकेमतमेंहै औमहावाक्यकेअर्थनिरूपणमेंबीदोकाहीउपयोगहै तिनमेंशक्तिकानिरूपणकिया औशक्यकेसा ९
क्षात्संबंधऔपरंपरासंबंधकेभेदतेंकेवललक्षणाऔलक्षितलक्षणारूपदोभेदलक्षणाकेकहेजलत्लक्षणाअजह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्लक्षणाभागत्यागलक्षणा इनभेदनतैंफेरितीनिप्रकारकीलक्षणाहैं जहांशक्यकीप्रतीतिनहींहोवै केवलशक्यसंबं
धीकीप्रतीति होवै तहांजहत्लक्षणाहोवैहै जैसैंविषंभुंक्ष्व यास्थानमैंशक्यजोविषभोजनताकूंत्यागिकैशक्य
संबंधीभोजननिवृत्तिकीप्रतीतिहोनैंतैंजहत्लक्षणाहै यद्यपि जहां शक्यअर्थकासंबंधनहींसंभवैतहांजहल्लक्षणाका
अंगीकारहोवैहै जैसैंगंगायांग्रामः यास्थानमैंपदनकेशक्यअर्थनकापरस्परसंबंधसंभवैनहीं श्रोविषंभुंक्ष्व यास्थान
मैंशक्यअर्थकाअन्वयसंभवैहै मरणकाहेतुवीविषहै तौवीभोजनमैंविषकाअन्वयसंभवैहै तथापिअन्वयानुपपत्ति
लक्षणामैंवीजनहीं किंतुतात्पर्यानुपपत्तिलक्षणामैंवीजहै यहग्रंथनमैंलिख्याहै ताकायहभावहैअन्वयकहियेशक्य
अर्थकासंबंधताकीअनुपपत्तिकहिये असंभवजहांहोवैतहांलक्षणाहोवैहै यहनियमनहींजोयहीनियमहोवैतोय-
ष्टीःप्रवेशययावाक्यमैंयष्टिपदकीयष्टिधरमैंलक्षणानहींहोवैगी काहेतैं यष्टिपदकेशक्यकाप्रवेशमैंअन्वयसंभवैहै
यातैंतात्पर्यानुपपत्तिलक्षणामैंवीजहै अन्वयानुपपत्तिनहीं तात्पर्यकहियेवाक्यकर्ताकीइच्छाताकीअनुपपतिकहि
येशक्यअर्थमैंअसंभवलक्षणामाननैंकावीजकह्यायेहेतुहै यष्टीःप्रवेशययावाक्यमैंतात्पर्यानुपपत्तिहै काहेतैं यष्टि-
काप्रवेशजोशक्यअर्थतामैंवक्ताकातात्पर्यभोजनकेसमैंसंभवैनहीं यातैंयष्टिपदकीयष्टिधरपुरुषनमैंलक्षणाहै तैसैं
मरणहेतुविषभोजनमैंपिताकातात्पर्यसंभवैनहीं यातैंभोजननिवृत्तिमैंजहत्लक्षणाहै गंगायांग्रामः यास्थानमैं तात्प
र्यानुपपत्तिवीसंभवैहै यातैंजहांतात्पर्यानुपपत्तिहोवैतहांलक्षणामानियेहै यहनियमहै गंगायांग्रामः यास्थानमैंवी
गंगापदकाशक्यजोदेवनदीकाप्रवाह ताकूंत्यागिकैशक्यसंबंधीतीरकीप्रतीतिहोवैहै यातैंजहत्लक्षणाहैजहांसामा-

1585

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1586

न्यतीरबोधमेंवक्ताकातात्पर्यनहींहै किंतुगंगातीरकेबोधमेंवक्ताकातात्पर्यहै तहांगंगापदकीगंगातीरमेंअजहत्लक्ष
णाहै औरअजहत्लक्षणाकेअसाधारणउदाहरणतोकाकेभ्योदधिरक्ष्यतांइत्यादि कहेंहैं सहितशक्यसंबंधीकीजहांप्रती
तिहोवेतहांअजहत्लक्षणाहोवेंहै भोजनवास्तेदधिरक्षामेंवक्ताकातात्पर्यहै सोबिडालादिकनसेंदधिरक्षणविनासंभ
वेनहीं यातेंकाकपदकीदधिउपघातकमेंअजहत्लक्षणाहै इसरीतिसें छत्रिणोयांतियास्थानमें छत्रिपदकी छत्रिसंयु
क्तएकसार्थमेंअजहत्लक्षणाहै न्यायमतमेंनीलादिकपदनकीगुणमात्रमेंशक्तिहै नीलोघटइत्यादिकवाक्यनमें नी
लरूपवालेकेबोधकनीलादिकपदलक्षणातेंहैं तहांशक्यसहितसंबंधीकीप्रतीतहोवेहै यातेंअजहत्लक्षणाहै औको
शकारकेमतमेंनीलादिकपदलक्षणातेंहैं तहांशक्यसहितसंबंधीकीप्रतीतिहोवेहै यातेंअजहत्लक्षणाहै औकोशका
रकेमतमेंनीलादिकपदनकीगुणऔगुणीमेंशक्तिहै लक्षणानहीं वेदांतपरिभाषाग्रंथमेंनीलादिकपदनकीगुणीमेंअजह
ल्लक्षणाकहिसोन्यायकामतहै औशक्यअर्थके एकदेसकूंत्यागिकेएकदेसकेबोधमेंवक्ताकातात्पर्यहोवे तहांभागत्यागलक्षणाहोवेहै जैसें
सोयंदेवदत्तः यास्थाननेमेंभागत्यागलक्षणाहै इहांपरोक्षवस्तुतत्सदकाअर्थहै औअपरोक्षवस्तुइदंपदकाअर्थहै दकारादिवर्णविशि
ष्टनामवालापुरुषशरीरदेवदत्तपदकाअर्थहै तत्सदार्थकाइदंपदार्थसेंअभेदतत्सदोत्तरविभक्तिकाअर्थहै इदंपदार्थ
कादेवदत्तपदार्थसेंअभेदइदंपदोत्तरविभक्तिकाअर्थहै अथवा तत्सद औइदंपदसेंउत्तरविभक्तिनिरर्थकहैं समानवि
भक्तिवालेपदनकेसन्निधानतेंपदार्थनकाअभेदप्रतीतहोवेहै यातेंपरोक्षवस्तुसेंअभिन्नअपरोक्षवस्तुस्वरूपदेव १०
दत्तनामवालाशरीरहै यहवाक्यकेपदनकाशक्यअर्थहै सोउष्णाशीतलहै याकीनांईबाधितहै बाधितअर्थमेंवक्ताका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

 नीहोवेनही अवयवकीशक्तिसैंजोशब्दअपनें अर्थकूंजनावेताकूं योगिकशब्दकहेहैं जैसैंपाचकशब्दहै तहांपा-
चअवयवकापाकअर्थहै अकअवयवकाकर्ताअर्थहै इसरीतिसैं अवयवशक्तिसैं पाककर्तापाचकशब्दकाअर्थहो
नेतैंपाचकशब्दयोगिकहै अवयवशक्तिकूंयोगकहेहैं शास्त्रकाअसाधारणसंकेतपरिभाषाकहियेहैं परिभाषातैं
अर्थकाबोधकशब्दपरिभाषिकशब्दकहियेहै लक्षितशब्दके लक्षअरुइतदोअवयवहैं तिनमैंलक्षशब्दकाअर्थल
क्षणहै इतशब्दकाअर्थसंबंधीहै यातेंलक्षणसंबंधीअर्थकाबोधकलक्षितशब्दयोगिकहै यातेंलक्षणवालालक्षि
तशब्दकाअर्थहै तैसेंशक्यसंबंधकानामलक्षणाहै यहशास्त्रकासंकेतहै यातेंलक्षणाशब्दपरिभाषातेंशक्यसं
बंधरूपअर्थबोधकहोनेतैं पारिभाषिकहै लक्षितावासौलक्षणालक्षितलक्षणा यहकर्मधारयसमासहै लक्षण
वालीलक्षणायह अर्थकर्मधारयसमासतैंसिद्धहोवैहै असाधारणधर्मकूंलक्षणाकहेहैं शक्यसंबंधकूंलक्षणाकहे
हैं यातेंलक्षणाकाअसाधारणधर्मशक्यसंबंधत्वहै सोईताकालक्षणहै यद्यपिशक्यकासंबंधसाक्षात्परंपराभे
दतैं दोप्रकारकाहै औरबहुतस्थानमेंशक्यकासाक्षात्संबंधरूपलक्षणाहै द्विरेफोरौति सिंहोदेवदत्तइत्यादिकनमें
शक्यकासाक्षात्संबंधहैनहीं तथापिलक्षणाकाअसाधारणधर्मशक्यसंबंधत्वहै संबंधमेंसाक्षात्पनालक्षणा
केलक्षणमेंप्रविष्टनहीं जहांशक्यकापरंपरासंबंधहै तहांबीशक्यसंबंधत्वरूपस्वलक्षणवालीलक्षणाहै गंगा
यांग्रामः इत्यादिकउदाहरणमें यद्यपिशक्यकासाक्षात्संबंधरूपलक्षणाहै तथापिसंबंधकासाक्षात्पनालक्षणाकेलक्षणमें १
प्रविष्टनहीं किंतुसाक्षात्परंपरासाधारणसंबंधत्वरूपतैंलक्षणाकेलक्षणमेंसंबंधमात्रप्रविष्टहै इसीवास्तेशक्यसंबं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यशक्यसंबंधीलक्षितशब्दकाअर्थहै तथापिभागत्यागलक्षणासैंवक्तृतात्पर्यविषयइतनाभागत्यागिकेइहांशक्यसंबंधी
लक्षितशब्दकाअर्थहै तैसैंलक्षणाशब्दकाअर्थवीशक्यसंबंधहै तामैंशक्यभागत्यागिकेभागत्यागलक्षणासैंसंबंधमा
त्रलक्षणाशब्दकाअर्थहै यातैंलक्षितकहियेशक्यसंबंधीकोलक्षणाकहियेसंबंध लक्षितलक्षणाशब्दकाअर्थहोवैहै इस
रीतिसैंशक्यसंबंधीकासंबंध लक्षितलक्षणाशब्दसैंयोगवृत्तिसैंहीसिद्धहोवैहै अथवालक्षितशब्दकीतोशक्यसंबंधीमैं
भागत्यागलक्षणाहै औलक्षणाशब्दकाशक्यसंबंधही अर्थहैताकीसंबंधमात्रमैंलक्षणानहीं औलक्षितेनलक्षणा
लक्षितलक्षणा इसरीतिसैंतृतीयासमासमानेइष्टअर्थकीसिद्धिहोवैहै लक्षितेनकहियेशक्यसंबंधीद्वारालक्षणाक
हिये शक्यकासंबंध यह लक्षितलक्षणाशब्दकाअर्थहै शक्यकासंबंधकहूंसाक्षात्होवैहै कहूंशक्यसंबंधीद्वाराश
क्यकासंबंधहोवैहै द्विरेफोरौति इत्यादिस्थानमैंद्विरेफपदकाशक्यजोदोरेफतिनकामधुपसैंसाक्षात्संबंधनहीं किंतुश
क्यसंबंधीभ्रमरपदहै तिसकासंबंधीमधुपहै यातैंद्विरेफपदकाशक्यजोदोरेफतिनकाभ्रमरपदद्वारामधुपसैंसंबंध
है तैसैंसिंहशब्दकेशक्यकेसंबंधीजेशूरतादिकगुणतिनोंद्वारासिंहशब्दकेशक्यकासंबंधिशूरतादिगुणविशिष्टमैंहै
यातैंसिंहशब्दकालक्षितकहियेशक्यसंबंधीजेशूरतादिगुणतिनद्वारालक्षणाकहियेसिंहशब्दकेशक्यकासंबंध
पुरुषमैंहै षष्ठीसमासमानैंतौलक्षितशब्दऔलक्षणाशब्दमैंभागत्यागलक्षणामाननीहोवैहै औतृतीयासमासमा
नैंतौलक्षणाशब्दकामुख्यअर्थरहैहै एकलक्षितशब्दमैंभागत्यागलक्षणामाननीहोवैहै औलक्षितलक्षणाशब्दमैं
कर्मधारयसमासमानैंतौलक्षितशब्दऔलक्षणाशब्दइनदोनूंकामुख्ययौगिकअर्थरहैहै भागत्यागलक्षणामान

1588

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1589

होवैताकूं केवललक्षणाकहैहैं जैसें गंगापदकी तीरमैं लक्षणा होवैहै तहां गंगापदकाशक्य जो प्रवाह ताका तीरसें साक्षात्सं
बंधसंयोगहै यातें गंगापदकी तीरमें केवललक्षणाहै लक्षितलक्षणाका उदाहरणयहहै द्विरेफोरौतियावाक्यका दोरेफध्व
निकरैहैं यह अर्थपदनकी शक्तिसें प्रतीतहोवैहै सो वर्णरूपरेफमैं ध्वनिकरना संभवै नहीं यातें शक्य अर्थमें वक्ताका ता
त्पर्यनहीं किंतु दोरेफवाला जो भ्रमरपद तिसके शक्यमें द्विरेफपदकी लक्षणाहै सो केवललक्षणातो है नहीं काहेतें जा
अर्थमें पदके शक्यका साक्षात्संबंध होवै तामें केवललक्षणा होवैहै द्विरेफपदका शक्य दोरेफहैं तिनका अन्वयविना संबं
ध भ्रमरपदमें है तापदका शक्तिरूपसंबंध अपनेवाच्य मधुपमें है यातें शक्यसंबंधी जो भ्रमरपद ताका संबंध होनेतें श
क्यका परंपरासंबंधहै यातें लक्षितलक्षणाहै यद्यपि दोरेफनकूं द्विरेफ नहीं कहैहैं किंतु दोरेफवालेकूं द्विरेफ कहैहैं दोरे
फवाला भ्रमरपदहै यातें द्विरेफपदका शक्य जो भ्रमरपद ताका मधुपसें साक्षात्संबंध होनेतें केवललक्षणा संभवै है तथा
पि व्याकरणके मतमें तो समासकी शक्तिहै यातें द्विरेफपदका शक्य दोरेफवाला भ्रमरपद है न्यायवैशेषिकादिकनके मतमें
समाससमुदायकी शक्ति नहीं मानैहैं किंतु समाससमुदायके जो अवयव हैं तिनकी लक्षणावृत्तिसें अधिक अर्थ समा
समें प्रतीत होवैहै जैसें द्विरेफ इतना समाससमुदाय है ताकी किसी अर्थमें शक्ति नहीं तहां द्वित्वसंख्याविशिष्ट द्विपदका
अर्थहै रेफत्वजातिविशिष्ट अक्षर रेफपदका अर्थहै द्विपदके शक्यका और रेफपदके शक्यका अभेदसंबंध वाक्यार्थ होवै तो
द्वित्वसंख्यावाले रेफहैं यही अर्थ शक्य है औ दोरेफवाले पदकूं द्विरेफ कहैहैं सो लक्षणावृत्ति मानिकै कहैहैं परंतु इतना भे
द है न्यायवैशेषिकमतमें वाक्यकी लक्षणा नहीं मानैहैं काहेतें शक्यसंबंधकूं लक्षणा कहैहैं पदसमुदायरूप वाक्यकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1590

किसीअर्थमेंशक्तिनहीं यातेंवाक्यकै शक्यकाअभावहोनेतें शक्यसंबंधरूपलक्षणावाक्यकीवनैनहीं किंतु पदकी
लक्षणाहोवैहै यामतमेंरेफपदकीरेफवालेमेंलक्षणाऔमीमांसामतमेंतथावेदांतम तमेंवाक्यकीबीलक्षणामानेहैं औ
वाक्यकीलक्षणामेंजोदोषकह्याहै ताकायहसमाधानहै पदसमुदायकूंवाक्यकहैहैं सोसमुदायप्रत्येकपदसेंभिन्न
नहीं यातेंपदनकाशक्यहीवाक्यकाशक्यहै अथवा शक्यसंबंधरूपलक्षणानहीं किंतुबोध्यसंबंधकूंलक्षणाकहैहैं जैसेंप
दकाशक्यशक्तिवृत्तिसेंबोध्यहै तैसेंपरस्परसंबंधसहितपदार्थरूपवापदार्थनकासंबंधरूपवाक्यार्थवीवाक्यबोध्यहै यातें
पदबोध्यसंबंधरूपलक्षणाजैसेंपदकीहोवैहै तैसेंवाक्यबोध्यसंबंधरूपलक्षणावाक्यकीवीहोवैहै यामतमेंद्विरेफसमु
दायकीदोरेफवाले पदमेंलक्षणा इसरीतिसेंद्विरेफपदसेंलक्षितभ्रमरपदकीमधुपमेंलक्षणाहोनेतेंलक्षितलक्षणाकहावै
है सोबीलक्षणाके अंतर्भूतहीहै काहेतें द्विरेफपदकाशक्यजोदोरेफताकाभ्रमरपदसेंसाक्षात्संबंधहै औभ्रमरतेंभ्रमरपद
द्वारापरंपरासंबंधहै यातेंशक्यसंबंधरूपलक्षणातेंलक्षितलक्षणापृथक्नहीं व्याकरणमतमेंद्विरेफपदकाशक्यदोरेफवाला
भ्रमरपदहै ताकाभ्रमरसेंसाक्षात्संबंधहै यातें यहउदाहरण लक्षितलक्षणाकानहीं केवललक्षणाकाहै वामतमेंलक्षितलक्ष
णाकेउदाहरणसिंहोदेवदत्तःइत्यादिकहैं यास्थानमेंसिंहसेंअभिन्नदेवदत्तहै यह वाक्यकाअर्थपदनकीशक्तिवृत्तिसेंप्रतीत
होवैहै सोसंभवैनहीं काहेतें पशुत्वजातिऔमनुष्यत्वजातिपरस्परविरुद्धहैं एकमेंसंभवैनहीं यातेंसिंहशब्दकीशूरताक्रूर
ताधर्मवालेपुरुषमेंलक्षणाहै तापुरुषतेंसिंहशक्यकासाक्षात्संबंधनहीं होनेतें केवललक्षणातोहैनहीं किंतुशूरतादिकनतें ६
सिंहशब्दकेशक्यकाआधेयतासंबंधहै औवाक्यसंबंधीशूरतादिकनकापुरुषमेंआश्रयतासंबंधहै परंतुसिंहकीशूरता-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ पुरुषकीशूरताका अभेद मानें तब तो सिंहकी शूरताका देवदत्तमें अधिकरणता संबंध है औ दोनूं शूरताका परस्पर भेद मानें तो सिंहकी शूरताका पुरुषमें स्वसजातीयशूरताधिकरणता संबंध है सिंहकी शूरता स्वशब्दका अर्थ है इसरीतिसें शक्यका परंपरासंबंध होनेतें सिंहशब्दकी शूरतादिगुणविशिष्टमें लक्षितलक्षणा है शक्यके परंपरासंबंधकूं लक्षितलक्षणा कहेंहें यद्यपि लक्षितलक्षणाशब्दसें उक्तअर्थकी सिद्धि क्लिष्ट है काहेतें लक्षितलक्षणाशब्दकी रूढि तो शक्यके परंपरासंबंधमें कोशादिकनमें कहीं नहीं औ योगवृत्तिसें लक्षणाशब्दका उक्तअर्थ प्रतीत होवै नहीं काहेतें लक्षितस्य लक्षणा लक्षितलक्षणा इस रीतिसें षष्ठीसमास करें तो लक्षितकहियेलक्षणावृत्तिसें जो प्रतीत हुया है ताकी लक्षणा यह लक्षितलक्षणाशब्दका अर्थ सिद्ध होवैहै द्विरेफो रौति सिंहो देवदत्तः इत्यादिक जो लक्षितलक्षणाके उदाहरण कहे तहां उक्तस्वरूप लक्षितलक्षणा संभवै नहीं काहेतें द्विरेफो रौति या वाक्यमें द्विरेफपदसें भ्रमरपद लक्षित होवै औ ताकी मधुपमें लक्षणा होवै तौ उक्तअर्थका संभव होवै सो दोनूं वार्ता हैं नहीं काहेतें यद्यपि द्विरेफपदके शक्यका संबंध भ्रमरपदतें है तथापि द्विरेफपदसें लक्षित भ्रमरपद नहीं काहेतें वक्ताके तात्पर्यका विषय शक्यसंबंधी लक्षित होवैहै केवल शक्यसंबंधी लक्षित नहीं होवैहै जो केवल शक्यसंबंधी लक्षित होवै तौ गंगापदके शक्यके संबंधी मीनादिक अनेक हैं ते सारेही गंगापदसें लक्षित हुये चाहियें यातें वक्ताके तात्पर्यका विषय शक्यसंबंधी लक्षित होवैहै गंगापदशक्यसंबंधी तौ अनेक हैं तथापि गंगायां ग्रामः या वाक्यमें श्रोताकूं गंगापदसें तीरका बोध होवै ऐसे तात्पर्यविषय शक्यसंबंधी केवल तीर है यातें गंगापदसें तीरही लक्षित है मीनादिक यद्यपि शक्यसंबंधी तौ हैं उक्ततात्पर्यके विषय नहीं यातें गंगापदसें लक्षित नहीं इसरीतिसें द्विरेफपदके शक्यका संबंधी तौ भ्रमरपद है परं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1592

तुद्विरेफपदसैं भ्रमरपदकाबोधश्रोताकूंहोवै ऐसावक्ताकातात्पर्यनहीं किंतुद्विरेफपदसैंभ्रमरपदकेशक्यमधुपकाबोधश्रो
ताकूंहोवै ऐसावक्ताकातात्पर्यहोवैहै यातैंद्विरेफपदकेशक्यकासंबंधीवीभ्रमरपदहै वक्ताकेउक्ततात्पर्यकाविषयनहींहो
नेतैंद्विरेफपदसैंलक्षितभ्रमरपदनहीं औरकिसीरीतिसैंद्विरेफपदसैंलक्षितभ्रमरपदहै इसवार्त्ताकूंमानिलेवैतोवीभ्रम
रपदकीमधुपमैंशक्तिहै यातैंताकीलक्षणाकथनअसंगतहै इसरीतिसैं लक्षितस्यभ्रमरपदस्यलक्षणालक्षितलक्षणा
इसरीतिसैं षष्ठीसमासकाअर्थउक्तउदाहरणमैंसंभवैनहीं तैसैंसिंहोदेवदत्तः याउदाहरणमैंवीउक्तअर्थसंभवैनहीं सिं
हवृत्तिशूरतादिकसिंहशब्दकेशक्यकेसंबंधीतोहैं परंतुसिंहशब्दसैंशूरतादिकनकाबोधश्रोताकूंहोवै ऐसावक्ताकाता
त्पर्यनहीं किंतुसिंहशब्दसैंसिंहसदृशपुरुषकाबोधश्रोताकूंहोवै ऐसावक्ताकातात्पर्यहोवैहै यातैंशक्यसंबंधीवीशूर
तादिकगुणउक्ततात्पर्यकेविषयनहींहोनेतैंसिंहशब्दसैंलक्षितनहीं औरकिसीरीतिसैंसिंहशब्दसैंलक्षितशूरतादिकहैं
याकूंमानिलेवैतोवीतिनकीलक्षणाकहनाविरुद्धहै काहेतैं शक्तिऔलक्षणावर्णात्मकशब्दकीहोवैहै शूरतादिकगुणश
ब्दरूपनहीं यातैंतिनकीशक्तिवालक्षणासंभवैनहीं इसरीतिसैं लक्षितस्यभ्रमरपदस्यलक्षणालक्षितलक्षणाऔर
लक्षितस्यशूरतादिगुणसमुदायस्यलक्षणालक्षितलक्षणाइसप्रकारकाअर्थषष्ठीसमासमानिकैहोवैहै याअर्थमैं
शक्यकेपरंपरासंबंधकालक्षितलक्षणाशब्दसैंबोधहोवैनहीं पूर्वउक्तदोनूंउदाहरणोंमैंशक्यकापरंपरासंबंधतोम
धुपऔपुरुषमैंहै औपूर्वोक्तरीतिसैंलक्षितलक्षणाशब्दकायोगअर्थसंभवैनहीं तथापि यावक्ष्यमाणरीतिसैंलक्षि ७
तलक्षणाशब्दकायोगअर्थषष्ठीसमासमानिकैशक्यकापरंपरासंबंधहीसंभवैहै यद्यपिवक्ताकेतात्पर्यकाविष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1593

र्थ आनयनमैं कर्मताका निरूपकतासंबंधहै पकारोत्तर अकारके कृति औ प्रेरणा दोअर्थहैं तहांकृतिमैं आनयनका अनुकू-
लतासंबंधहै कृतिका त्वंपदार्थमैं आश्रयतासंबंधहै प्रेरणाका त्वंपदार्थमैं विषयतासंबंधहै यातें गोवृत्तिकर्मतानिरूपक
आनयनानुकूलकृत्याश्रयः प्रेरणाविषयः त्वंपदार्थः यहज्ञान वाक्यश्रोताकूं होवैहै तहांवृत्तिविशिष्टसकलपदनकाज्ञान
शब्दप्रमाणहै पदनकेज्ञानतैंतिनकेअर्थकी स्मृतिव्यापारहै वाक्यार्थज्ञान फलहै इसरीतिसें लौकिकवैदिकवाक्यनतैंब
हुतस्थानमें पदार्थनकेसंबंधकावासंबंधसहितपदार्थनकाबोधहीफलहोवैहै तथापितत्वंपदार्थकासंबंधीनसदार्थका वी
तत्पदार्थकैसंबंधीत्वंपदार्थकामहावाक्यनतैंबोधमानैंतोअसंगोह्ययंपुरुषः इत्यादिकश्रुतिवचनोंनैंवेदांतप्रतिपाद्यब्र
ह्मकूं असंगताकहीहै ताकाबाधहोवैगा यातैंमहावाक्यनका प्रतिपाद्यअखंडब्रह्महै वाक्यनकूंअखंडअर्थकीबोधक
तामैंदृष्टांतसंक्षेपशारीरकमैंस्पष्टहै विस्तारभयतेंलिष्यानहीं महावाक्यनमैंलक्षणाकाप्रकारविचारसागरमैंलिष्याहै
सोजानिलेना पदकेशक्यसें संबंधकूं लक्षणाकहेहैं यातेंपदकापरंपरासंबंधरूपलक्षणाहै काहेतें पदकासाक्षात्संबंध
शक्यतें होवैहै ताशक्यकासंबंधलक्ष्यतें होवैहै यातें शक्यद्वारापदकासंबंधहोनेतें परंपरासंबंधरूपलक्षणावृत्तिहै
इसीकारणतैं ग्रंथकारोंनें लक्षणावृत्तिजघन्यकहीहै जहांपदकासाक्षात्संबंधरूपशक्तिवृत्तिनहींसंभवै तहांपरंप
रासंबंधरूपलक्षणावृत्तिका अंगीकारहै इसीकारणतें ग्रंथकारोंनेलिष्याहै जहांशक्यअर्थमैं वक्ताकातात्पर्यनहींसं
भवै तहांलक्षणावृत्तिमानिकेपदकालक्ष्यअर्थमाननायोग्यहै जहांशक्यअर्थमैंवक्ताकातात्पर्यसंभवै तहांलक्ष्यअर्थ ५
माननायोग्यनहीं केवललक्षणा औरलक्षितलक्षणाकेभेदतें सोलक्षणादोप्रकारकीहै पदकेशक्यकासाक्षात्संबंध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकासाक्षात्कारहोवै जिसपदकीजिसअर्थमैंवृत्तिपूर्वजानीहोवै तिसपदसैं तिसअर्थकी स्मृतिहोवैहै तिसतैं अनंतरप
रस्परसंबंधवालेसकलपदार्थनकाज्ञान अथवा सकलपदार्थनकापरस्परसंबंधज्ञान वाक्यार्थज्ञान होवैहै जैसैं गामान
यत्वं यावाक्यमैं गोआदिकपदहैं तिनकी अपने अर्थमैं वृत्तिका प्रथम ऐसाज्ञान पुरुषकूं चाहिये गोपदकी गोत्वविशिष्टप
शुविशेषमैं शक्तिहै द्वितीयाविभक्तिकी कर्मतामैं शक्तिहै आनयनमैं आपूर्वनीपदकी शक्तिहै यकारोत्तरअकारकी कृति औप्रेर
णामैं शक्तिहै संबोधनयोग्यचेतनमैं त्वंपदकी शक्तिहै इसरीतिसैं शक्तिज्ञानवालेकूं गामानयत्वं यावाक्यका श्रोत्रसैं सं
बंधहोतैंही गोआदिकसकलपदनका साक्षात्कारहोय के तिनपदनकै शक्यअर्थकी स्मृतिहोवैहै जैसैं हस्तिपालककेज्ञानतैं ता
के संबंधी हस्तीकी स्मृतिहोवैहै तैसैं पदनकेज्ञानतैं तिनके संबंधी शक्यअर्थनकी स्मृतिहोवैहै यह हस्तिपालकहै ऐसा ह
स्ति औ महावतके संबंधकाजाकूं ज्ञान होवैनहीं किंतुमनुष्यहै ऐसाज्ञानहोवै ताकूं हस्तिपालकदेषैबी हस्तीकी स्मृतिहोवै
नहीं तैसैं इसपदकायहशक्यहै अथवा लक्ष्यहै ऐसा शक्तिवालक्षणारूपसंबंधकाजाकूं पूर्वज्ञान होवैनहीं किंतुअज्ञानार्थ
पदका श्रावणसाक्षात्कारहोवै ताकूं पदनकै श्रवणतैंबी अर्थनकी स्मृतिहोवैनहीं यातैं वृत्तिसहितपदकाज्ञान पदार्थस्मृतिका
हेतुहै केवलपदकाज्ञान हेतुनहीं पदनकेज्ञानतैं सकलपदार्थनकी स्मृतिहोयके सकलपदार्थनकै परस्परसंबंधकाज्ञान
होवैहै अथवापदनकेज्ञानतैं परस्परसंबंधरहितजिनपदार्थनका स्मरणहुवाहै परस्परसंबंधसहिततिनपदार्थनका ज्ञा
नहोवैहै सोपदार्थनके संबंधकाज्ञान अथवा संबंधसहितपदार्थनकाज्ञान वाक्यार्थज्ञान कहियेहै औशाब्दीप्रमाकहि
येहै गामानयत्वं यावाक्यमैं गोपदार्थका द्वितीयार्थकर्मतामैं आधेयतासंबंधहै आधेयताकूं वृत्तित्वकहैंहैं आपूर्वनीकेअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकीवीघटपदसैंप्रतीतिहुईचाहिये समाधानवाच्यकीप्रतीतिपदसैंहोवैहै औरवाच्यवृत्तिजोजातिताकीप्रतीति होवैहै या
तैंयहनियमहैजातिभिन्नअवाच्यकीप्रतीतिहोवैनहीं औवाच्यवृत्तिजोजातिसोअवाच्यकीप्रतीतहोवैहै यातैंघटत्वादि
कतोअवाच्यवीघटादिकपदनतैंप्रतीतहोवैहैं पटादिकअवाच्यप्रतीतहोवैनहीं पुनःशंका वाच्यवृत्तिअवाच्यजातिकीप
दनसैंप्रतीतमानैंतोघटपदसैंपृथिवीत्वजातिकीप्रतीतिहुईचाहिये काहेतें घटपदकेवाच्यमैंजैसैंघटत्वजातिरहैहै तैसैं
पृथिवीत्ववीरहैहै यातैंदोनूंवाच्यवृत्तिहैं औअवाच्यहैं घटत्वकीनांई पृथिवीत्वकीवीप्रतीतिहुईचाहिये गोपदकावाच्य
जोगोताकेविषैगोत्वकीनांईपशुत्वरहैहै औदोनूंअवाच्यहैं तैसैंब्राह्मणपदसैंब्राह्मणत्वकीनांईमनुष्यत्वकीप्रतीतिहुईचा
हिये समाधानवाच्यतावछेदकजोअवाच्यताकीऔवाच्यकीपदसैंप्रतीतिहोवैहै अन्यकीप्रतीतिहोवैनहीं जैसैंघटपद
कावाच्यघटव्यक्तिकीऔवाच्यतावछेदकघटत्वकीप्रतीतिघटपदसैंहोवैहै पृथिवीत्ववाच्यनहीं औवाच्यतावछेदकनहीं
यातैंघटपदसैंपृथिवीत्वकीप्रतीतिहोवैनहीं वाच्यतासैंन्यूनवृत्तिऔअधिकवृत्तिनहोवै किंतुजितनेंदेशमैंवाच्यताहोवैउ
तनेंदेशमैंरहैसोवाच्यतावछेदकहोवैहै घटपदकी वाच्यतासकलघटव्यक्तिमैंहै औघटत्ववीसकलघटव्यक्तिमैंरहैहै या
तैंघटकीवाच्यतासैंन्यूनवृत्तिऔअधिकवृत्ति घटत्वनहीं किंतुसमानदेशवृत्तिहोनेतैंघटपदकावाच्यतावछेदकघटत्वहै
घटपदकीवाच्यतापटमैंनहीं औपृथिवीत्वपटमैंहै यातैंअधिकवृत्तिहोनेतैंघटपदकावाच्यतावछेदकपृथिवीत्वनहीं गो
पदकीवाच्यतासकलगोव्यक्तिमैंहै औगोत्ववीसकलगोव्यक्तिमैंहै यातैंगोपदकावाच्यतावछेदकगोत्वहै औअश्वमैंगोप
दकीवाच्यतानहींतासैंपशुत्वरहैहै यातैंगोपदकीवाच्यतासैंअधिकवृत्तिहोनेतैंगोपदकावाच्यतावछेदकपशुत्वनहीं तैसैं

1595

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1596

ब्राह्मणपदकीवाच्यतासकलब्राह्मणव्यक्तिमेंहै औब्राह्मणत्वबीसकलब्राह्मणव्यक्तिमेंहै यातेंब्राह्मणपदकावाच्यतावच्छे
दकब्राह्मणत्वहै औषष्ठ्यादिकनमेंब्राह्मणपदकीवाच्यतानहीं तहांमनुष्यत्वरहैहै यातेंअधिकवृत्तिहोनेतेंब्राह्मणपदकावा
च्यतावच्छेदकमनुष्यत्वनहीं इसरीतिसें घटादिकपदनतें घटत्वादिकनकीप्रतीतिहोवैहै औसक्तिनहींहोनेतेंघटादिपदनके
वाच्यनहीं किंतुवाच्यतावच्छेदकहैं यहशिरोमणिभट्टाचार्यकामतहै औघटादिपदनकीजातिमात्रमेंशक्तिहैव्यक्तिमेंनहीं
यहमीमांसाकामतहै शंका जिसअर्थमेंजिसपदकीशक्तिकाज्ञानहोवैतिसअर्थकीतिसपदसेंस्मृतिहोयकेशाब्दीप्रमाहोवैहै
पदकीशक्तिविनाव्यक्तिकीपदसेंस्मृति औशाब्दीप्रमानहींहुईचाहिये समाधान शब्दप्रमाणसेंतोजातिकाहीज्ञानहोवैहै त
थापि अर्थापत्तिप्रमाणतेंव्यक्तिकाज्ञानहोवैहै जैसेंदिनमेंअभोजीपुरुषकूंरात्रिभोजनविनास्थूलतासंभवैनहीं तैसेंव्य
क्तिविनाकेवलजातिमेंकोईक्रियासंभवैनहीं यातेंअर्थापत्तिप्रमाणतेंव्यक्तिकाबोधहोवैहै गामानयइसवाक्यतेंगोत्वके
आनयनकाबोधहोवैहै सोगोव्यक्तिकेआनयनविनावनैनहीं गोव्यक्तिकाआनयनसंपादकहै गोत्वकाआनयनसंपाद्य
है संपादकज्ञानकाहेतुसंपाद्यज्ञानअर्थापत्तिप्रमाणकहियेहै संपादकज्ञानप्रमाहै यास्थानमेंजातिकाज्ञानप्रमाणहै औ
व्यक्तिकाज्ञानप्रमाहै यहभट्टमीमांसककामतहै औरकोईजातिशक्तिवादीअनुमानतेंव्यक्तिकाबोधमानैहैं सोग्रंथांतरमें
स्पष्टहै कठिनप्रसंगलिख्यानहीं केवलजातिमेंशक्तिमानैंताकेमततेंव्यक्तिकाबोधशाब्दप्रमाणतेंहोवैनहीं किंतु अर्थापत्ति
वा अनुमानसेंव्यक्तिकाबोधहोवैहै परंतु कोईग्रंथकारजातिमेंकुजशक्तिमानैहैं ताकेमततेंव्यक्तिकाज्ञानबीशाब्दप्रमा ३
णतेंहीहोवैहै ताकायहअभिप्रायहै सकलपदनकीशक्ति तोजातिविशिष्टव्यक्तिमेंहै परंतु शक्तिकाज्ञानजाकूंहोवैता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूंपदसें अर्थकीस्मृति औ शाब्दबोध होवेहै अन्यकूं नहीं तहां घटपदकी घटत्वमें शक्तिहै इसरीतिसें जातिशक्तिकाज्ञान पदार्थकीस्मृतिका औ शाब्दबोधका हेतु है औ व्यक्तिमेंशक्तिके ज्ञानका उपयोग नहीं औ व्यक्ति अनंत हैं यातें सकल व्यक्तिका ज्ञान संभवै नहीं इसकारणतें व्यक्तिकीशक्तिस्वरूपसें पदार्थकीस्मृति औ शाब्दबोधका हेतु है ताका ज्ञान हेतु नहीं इसरीतिसें घटपदकी घटत्वविशिष्टमें शक्ति होनेतें घटपदके वाच्य तो घटत्व औ घट दोनूं हैं यातें घटपदका वाच्य जो घटत्व औ घट तिनके शाब्दबोधका हेतु घटत्वमें शक्तिकाज्ञान है यापक्षकूं कुब्जशक्तिवाद कहेहैं औरप्रकारसें कुब्जशक्तिवाद गदाधरभट्टाचार्यनें शक्तिवादके अंतमें लिख्याहै सो कठिन है यातें इहां लिख्या नहीं औ घटादिकपदनतें जैसें जातिविशिष्टव्यक्तिका बोध होवैहै तैसें जातिका व्यक्तिमें जो समवायादिक संबंध ताका बी बोध होवैहै यातें जातिव्यक्तिसंबंध इन तीनूंमें घटादिपदनकी शक्तिहै यह गदाधरभट्टाचार्यका मत है सर्वमतनमें जातिविशिष्टव्यक्तिमें घटादिकपदनकी शक्तिहै यह मत बहुतग्रंथकारोंनें लिख्याहै यातें घटपदकी घटत्वविशिष्टमें शक्ति कहीहै नीलके अभेदवाला एक घट है यह नीलो घटः इस वाक्यका अर्थ है तैसें वज्रहस्तः पुरंदरः यह वैदिकवाक्य है जैसें नीलो घटः या वाक्यमें विशेषणबोधक नीलपद हैं औ घटपद विशेष्यबोधक है तैसें वज्रहस्तपद विशेषणबोधक है औ पुरंदरपद विशेष्यबोधक है विशेषणपदके आगे विसर्ग निरर्थक है अथवा अभेदार्थक है विशेष्यबोधकपदके आगे विसर्गका एकत्व अर्थ है वज्रहस्तके अभेदवाला एक पुरंदर है यह वाक्यका अर्थ है इसरीतिसें लौकिक वैदिक वाक्यनकी समान रीति हैं परंतु वैदिकवाक्य दोप्रकारके हैं एक व्यावहारिक अर्थके बोधक हैं दूसरे परमार्थतत्वके बोधक हैं ब्रह्मसें भिन्न सारा व्यावहारिक अर्थ कहियेहै परमार्थतत्व ब्रह्म कहिये

1597

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं ब्रह्मबोधकवाक्यबीदोप्रकारकेहैं तत्पदार्थवात्वंपदार्थकेस्वरूपकेबोधकअवांतरवाक्यहैं जैसें सत्यंज्ञानमनंतंब्र
ह्म यहवाक्यतत्पदार्थकाबोधकहै यएषत्वद्यंतर्ज्योतिः पुरुषः यहवाक्यत्वंपदार्थकेस्वरूपकाबोधकहै तत्पदार्थत्वंपदार्थ
केअभेदकेबोधकतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहैं जाअर्थसें जापदकीवृत्तिहोवैताअर्थकीतापदसें प्रतीतिहोवैहै शक्तिऔ
लक्षणाभेदतें सोवृत्तिदोप्रकारकीहै ईश्वरकीइच्छा अथवा वाच्यवाचकभावसंबंधमूलतादात्म्य अथवा पदार्थबोधहेतुसा
मर्थ्यकूं शक्तिकहैंहैं जिसअर्थसें पदकीशक्तिहोवैसो अर्थपदकाशक्यकहियेहै शक्यसंबंधकूं लक्षणाकहैंहैं जैसें गंगा
पदकीशक्तिप्रवाहमेंहै यातें गंगापदकाशक्यप्रवाहहैं तासें संयोगसंबंधतीरकाहै इसरीतिसें पदकाजोअर्थसें परंपरासंबं
धसोलक्षणाहै जैसें गंगापदकातीरसें परंपरासंबंधहै सोई तीरमें गंगापदकीलक्षणाकहिये काहेतें साक्षात्संबंधवालेसें
जोसंबंधसोपरंपरासंबंधकहियेहैं गंगापदकाशक्तिरूपसंबंधप्रवाहसेंहै तासें संयोगतीरकाहै यातें स्वशक्यसंयोगरूपगं
गापदकातीरसें परंपरासंबंधहै सोईलक्षणाकहियेहै यातें यहसिद्धहुवाजाअर्थसें जिसपदकाशक्तिरूपसाक्षात्संबंध
होवैसोअर्थतिसपदकाशक्यकहियेहै जाअर्थसें जिसपदकेशक्यकासंबंधहोवैसोअर्थतिसपदकालक्ष्यकहियेहै जैसें
गंगापदकाशक्यजोप्रवाहताकातीररूपअर्थसें संयोगसंबंधहै यातें गंगापदकाशक्यप्रवाहहै औतीरलक्ष्यहै इसरीतिसें
पदकासाक्षात्संबंध औपरंपरासंबंधरूपशक्तिलक्षणाभेदतें वृत्तिदोप्रकारकीहै जापदकीवृत्तिजिसपुरुषकूं अज्ञातहोवैता
पदकातिसपुरुषकूं साक्षात्कारहुयेबी पदार्थकीस्मृति औशाब्दबोधहोवैनहीं यातें शक्तिलक्षणारूपवृत्तिकाज्ञानपदा ५
र्थकीस्मृति औशाब्दबोधकाहेतुहै शाब्दबोधकायहक्रमहै जापुरुषकूं पदकीवृत्तिज्ञानहोवैतापुरुषकूं वाक्यकेसकलपद

1598

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवाक्यार्थज्ञान कहिये है ताहीकूं शाब्दीप्रमा कहे हैं जैसें नीलो घटः यह वाक्य है तामें च्यारि पद हैं नीलपद है १ ओकारपद है
२ घटपद है ३ विसर्गपद है ४ नीलरूपविशिष्टमें नीलपदकी शक्ति है ओकारपद निरर्थक है यह वार्ता व्युत्पत्तिवादादिक ग्रंथन
में स्पष्ट है अथवा ओकारपदका अभेद अर्थ है घटपदकी घटत्वविशिष्टमें शक्ति है विसर्गकी एकत्वसंख्यामें शक्ति है शक्ति
का ज्ञान कोश व्याकरणादिकनतें होवे है नीलपीतादिक पदनकी वर्णमें औ वर्णवालेमें शक्ति है यह कोशमें लिख्या है औ वि
सर्गकी एकत्वसंख्यामें शक्ति है यह व्याकरणतें जानी जावे है घटपदकी घटत्वविशिष्टमें शक्ति है यह व्याकरणग्रंथनमें औ
शक्तिवादादिक तर्कग्रंथनमें लिख्या है औ न्यायसूत्रमें गोतमनें यह कह्या जाति आकृति व्यक्तिमें सकलपदनकी शक्ति है
अवयवके संयोगकूं आकृति कहे हैं अनेक पदार्थनमें रहे जो नित्य एक धर्म सो जाति कहिये है जैसें अनेक घटनमें नित्य
औ एक घटत्व है सो जाति है जातिके आश्रयकूं व्यक्ति कहे हैं यामतमें घटपदकी शक्ति कपालसंयोगसहित घटत्वविशिष्ट
घटमें है औ दीधितिकार शिरोमणि भट्टाचार्यके मतमें सकलपदनकी व्यक्तिमात्रमें शक्ति है जाति औ आकृतिमें नहीं या
मतमें घटपदका वाच्य केवल व्यक्ति है घटत्व औ कपालसंयोग घटपदके वाच्य नहीं काहेतें जिस पदकी जिस अर्थमें
शक्ति होवे तिस पदका सो अर्थ वाच्य कहिये है औ शक्य कहिये है केवल व्यक्तिमें शक्ति है यातें केवल व्यक्ति ही वाच्य है ग-
का घटपदके उच्चारणतें घटत्वकी गोपदके उच्चारणतें गोत्वकी ब्राह्मणपदके उच्चारणतें ब्राह्मणत्वकी प्रतीति होवे है सो २
यामतमें नहीं हुई चाहिये काहेतें अवाच्य अर्थकी लक्षणा बिना पदसें प्रतीति होवे नहीं जो अवाच्य अर्थकी लक्षणा
बिना पदसें प्रतीति मानें तो घटपदके अवाच्य घटत्वकी जैसें घटपदसें प्रतीति मानों तैसें घटपदके अवाच्य पटादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शक्ति कौ इहहै औ अद्वैतसिद्धांतमैं सारे अपना कार्य करनेंकी सामर्थ्य ही शक्ति है जैसें तंतुमें पट करणेंकी सामर्थ्यरूप शक्ति है व
न्हिमें दाह करणेंकी जो सामर्थ्य सो शक्ति है तैसें पदनमें अपनें अर्थके ज्ञानकी सामर्थ्य ही शक्ति है परंतु इतना भेद है वन्हि आदि
क पदार्थनमें जो सामर्थ्यरूप शक्ति ताके ज्ञानकी अपेक्षा नहीं शक्ति ज्ञात होवै अथवा अज्ञात होवै दोनूं स्थानमैं वन्हि आदिक
नसें दाहादिक कार्य होवैहै औ पदकी शक्तीका ज्ञान होवै तब तौ अर्थकी स्मृतिरूप कार्य होवैहै शक्तिका ज्ञान होवै नहीं तब अर्थ
की स्मृतिरूप कार्य होवै नहीं यातें पदकी सामर्थ्यरूप शक्ति ज्ञात होवै तब पदार्थकी स्मृतिरूप कार्य होवैहै शंका जहां अतीत प
दकी स्मृति होवै तहां पदके स्मरणरूप ज्ञानतें अर्थकी स्मृति होवैहै सो नहीं हुई चाहिये काहेतें सामर्थ्यरूप शक्तिवाले पदका
ध्वंस होयगया यातें अर्थकी स्मृतिका हेतु जो पद ताका अभाव है समाधान मीमांसाके मतमें सारे पद नित्य है तिन्हकी उत्पत्ति
नास होवैं नहीं यातें पदका ध्वंस बनै नहीं औ जो पदनकूं अनित्य मानें तौ यह समाधान है पदार्थस्मृतिकी सामर्थ्य पदमैं नहीं
है किंतु पदज्ञानमैं पदार्थकी स्मृतिकी शक्ति है जहां पदका ध्वंस हुया है तहां बी पदका स्मरणरूप ज्ञान है जहां वर्त्तमान पद है तहां
पदका श्रावण साक्षात्कार ज्ञान है ता ज्ञानमैं पदार्थकी स्मृतिकी सामर्थ्य है सोई शक्ति है या पक्षमैं शक्तिवाला पद नहीं किंतु पद
का ज्ञान है यह पक्ष गदाधरभट्टाचार्यनें शक्तिवादग्रंथमैं ज्ञानशक्तिवाद करिकै लिख्या है इस रीतिसें पदकी सामर्थ्य वा पदके-
ज्ञानकी सामर्थ्य शक्ति कहियेहै दूसरे पक्षमैं बी पद शक्तिवाला है इस व्यवहारकी सिद्धिवास्ते पदका धर्म शक्ति अपेक्षित होवै तौ जिस
पदका ज्ञान जिस अर्थकी स्मृतिमैं समर्थ होवै तिस पदकी तिस अर्थमैं शक्ति कहियेहै इस रीतिसें शक्तिसहित पदज्ञानतें पदा
र्थकी स्मृति होवैहै जितनें पदार्थनकी स्मृति होवै उनने पदार्थोंके संबंधका ज्ञान अथवा संबंधसहित सकल पदार्थनका ज्ञा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1601

नेंतें परस्पर विवेक होवै नहीं यातें ब्रह्मसें कूटस्थके मुख्य समानाधिकरणका जीवमें व्यवहार करेंहैं औ जीवमें कूटस्थ धर्मके आरोप विना मिथ्याजीवका सत्यब्रह्मसें मुख्य समानाधिकरण संभवै नहीं यातें स्वाश्रय अंतःकरणका अधिष्ठान जो कूटस्थ ताके धर्मकी विवक्षासें जीवका ब्रह्मसें मुख्य समानाधिकरण कह्याहै इसरीतिसें चित्रदीपमें विद्यारण्यस्वामीनें विवरणकारके वचनतें अविरोधका प्रकार लिख्याहै औ विवरणग्रंथकूं पूर्वउत्तरदेषें यह प्रकार संभवै नहीं काहेतें विवरणग्रंथमें बिंबका स्वरूपही प्रतिबिंब मान्याहै यातें ताके मतमें प्रतिबिंबत्व रूपजीवत्व तो मिथ्याहैं औ प्रतिबिंबरूपजीवका स्वरूप मिथ्या नहीं किंतु ताका स्वरूप सत्य है यातें जीवका ब्रह्मसें मुख्य समानाधिकरण संभवैहै औ विद्यारण्यस्वामीनें जो विवरणग्रंथका उक्त अभिप्राय कह्या सो प्रौढिवादसें कह्याहै तथाहि प्रतिबिंबकूं मिथ्यात्व मानें वी जीवमें कूटस्थत्व विवक्षातें महावाक्यनमें विवरणउक्त मुख्य समानाधिकरण संभवैहै यातें मुख्य समानाधिकरणकी अनुपपत्तिसें प्रतिबिंबकूं सत्यत्व अंगीकरणीय नहीं इस प्रौढिवादसें विद्यारण्यस्वामीनें उक्त अभिप्राय विवरणका लिख्याहै औ विवरणग्रंथका उक्त अभिप्राय है नहीं प्रौढि कहिये उत्कर्षसें जो वाद कहिये कथन ताकूं प्रौढिवाद कहैहैं प्रतिबिंबकूं मिथ्यात्व मानिकै महावाक्यनमें मुख्य समानाधिकरणकी प्रतिपादन करि शकैहै इसरीतिसें अपना उत्कर्षबोधन क्रियाहै इसरीतिसें अंतःकरणमें आभास जीव है सो विज्ञानमय कोशरूप है बुद्धिवासनाविशिष्ट अज्ञानमें आभास ईश्वर है सो आनंदमयकोशरूप है दोनूंका स्वरूप मिथ्या है कूटस्थ औ जीवका अन्योन्याध्यास है औ ब्रह्मचेतन ईश्वरका अन्योन्याध्यास है यातें जीवमें कूटस्थधर्मनके आरोपतें कहूं पारमार्थिक ब्रह्मता कही हैं तैसें ईश्वरमें अध्यासिक ब्रह्मत्वकी विवक्षातें कहूं वेदांतवेद्यत्वादिक धर्म कहेहैं यातें चेतनके च्यारि भेद हैं यह प्रक्रिया चित्रदीपमें कहीहैं परंतु बुद्धिवासनामें प्रतिबिंबकूं ईश्वरता संभवै नहीं तैसें आनंदमयकोशकूं ईश्वरता कथन वी संभवै नहीं तथाहि बुद्धिवासनाविशिष्ट अज्ञानमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1602

प्रतिबिंबकूंईश्वरकहेहै ताकूंयहपूछ्याचाहिये ईश्वरभावकीउपाधिकेवलअज्ञानहै अथवावासनासहितअज्ञानहै अथवाकेवलवासनाहै जोप्रथमपक्षकहेहै तौबुद्धिवासनाविशिष्टअज्ञानमेंप्रतिबिंबकूंईश्वरताकथनसैंविरोधहोवैगा जोद्वितीयपक्षकहैहै तौकेवलअज्ञानकूंही ईश्वरभावकीउपाधिमाननाचाहिये बुद्धिवासनाविशिष्टअज्ञानकूंईश्वरकीउपाधिकहनानिष्फलहै जोविद्यारण्यस्वामीकाभक्तइसरीति सैंकहै केवलअज्ञानकूंईश्वरकीउपाधिमानैंतौईश्वरमैंसर्वज्ञतासिद्धहोवैनहीं यातैंसर्वज्ञताकेलाभअर्थबुद्धिवासनावीअज्ञानकीविशेषणमानीहै यहकथनवीअसंगतहै काहेतैं अज्ञानस्थसत्त्वअंशकीसर्वगोचरवृत्तिसैंही सर्वज्ञताकालाभहोनैतैं बुद्धिवासनाकूंअज्ञानकीविशेषणतामाननानिष्फलहै औ अज्ञानस्थसत्वअंशकी वृत्तिसैंहीसर्वज्ञतासंभवहै बुद्धिवासनातैंसर्वज्ञतासिद्धहोवैनहीं काहेतैंएकएकबुद्धिवासनाकूंतौनिखिलपदार्थगोचरतासंभवैनहीं सर्वज्ञतालाभकेअर्थसकलवासनाकूंअज्ञानविशेषणतामान्याचाहिये सोप्रलयकालविनाएककालमेंसर्ववासनाकासद्भावसंभवैनहीं यातैंसर्वज्ञताकीसिद्धिवासनातैंहोवैनहीं इसरीतिसैंभीवासनासहितअज्ञानईश्वरकीउपाधिहै यहद्वितीयपक्षवीसंभवैनहीं जोकेवलवासनाईश्वरकीउपाधिहै यहतृतीयपक्षकहै तथापियहपूछ्याचाहिये एकएकवासनामेंप्रतिबिंबईश्वरहै अथवासकलवासनामेंएकप्रतिबिंबईश्वरहै जोप्रथमपक्षकहैतौजीवजीवकीबुद्धिकीवासनाअनंतहोनैतैंतिनमेंप्रतिबिंबईश्वरवीअनंतहोवैंगे औरएकएकवासनाकूंअल्पगोचरताहोनैतैंतिनमेंप्रतिबिंबरूप अनंतईश्वरवीअल्पज्ञहीहोवैंगे सर्ववासनामेंएकप्रतिबिंबमानैंतौसर्ववासनाप्रलयविनायुगपत्‌होवैनहीं औअनेकउपाधिमें अनेकहीप्रतिबिंबहोवैहै यातैंसर्ववासनामें एकप्रतिबिंबसंभवैनहीं इसरीतिसैंकेवलअज्ञानहीईश्वरकीउपाधिहै विद्यारण्यस्वामीनैं ५
चित्रदीपमेंवासनाकानिष्फलअनुसरणकर्‍याहै तैसैंआनंदमयकोशकूंईश्वरताकथनवीअसंगतहै काहेतैंजाग्रत्स्वप्नमेंस्थूलावस्थावि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1603

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीरामोजयति॥ अथ षष्ठमप्रकाशप्रारंभः॥ अनुपलब्धिप्रमाणतें अभावकीप्रमाहोवेहै यातें अभावकी
प्रमाके असाधारणकारणकूं अनुपलब्धिप्रमाणकहेहैं न्यायवेदांतकेसंस्कारहीनअभावकेस्वरूपकूंजानेंनहीं यातेंप्रथमअभावका
स्वरूपकहेहैं निषेधमुखप्रतीतिकाविषयहोवे अथवाप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोवे सोअभावकहियेहै प्राचीनम
तसेंप्रथमलक्षणहै नवीनमतमें ध्वंसऔप्रागभावनशब्दजन्यप्रतीतिकेविषयनहीं यहअर्थआगेस्पष्टहोवेगा यातें दूसराल
क्षणकह्याहै प्रतियोगिकूंत्यागिकें अभावकीप्रतीतिहोवेनहीं यातेंप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकेविषयसकलअभावहैं यद्यपिअभा
वकीनांईसंबंधऔसादृश्यबीप्रतियोगिनिरपेक्षप्रतीतिकेविषयनहीं किंतुप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकेविषयहैं तिनमें अभावल
क्षणजावेहै तथापिसंबंधऔसादृश्यकीप्रतियोगितासें अभावकीप्रतियोगिताविलक्षणहै सोन्यायग्रंथनमें अभावाभावरूपता
अभावकीप्रतियोगिताकास्वरूप आचार्यनेंलिख्याहै ऐसीप्रतियोगितासंबंधकीऔसादृश्यकीहैनहीं यातेंसंबंधकीऔसादृश्य
कीप्रतियोगितासेंविलक्षणप्रतियोगितावालाजाकाप्रतियोगिहोवेसोअभावकहियेहै स्थूलरीतियहहै संबंधसादृश्यतेंभिन्नहो
वेऔप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोवेसोअभावकहियेहै सोअभावदोप्रकारकाहै एकसंसर्गाभावहै दूसराअन्योन्याभा
वहै तिनमेंअन्योन्याभावतोएकहीविधहै संसर्गाभावकेच्यारीभेदहैं एकप्रागभावहै १ प्रध्वंसाभावहै २ सामयिकाभावहै ३ अ
त्यंताभावहै ४ इसरीतिसें च्यारिप्रकारकासंसर्गाभावऔअन्योन्याभावमिलिकेपांचप्रकारकाअभावहै कपालमें घटकीउत्पत्तिसें
पूर्वघटकाअभावहै औकच्चेकपालमेंरक्तरूपकीउत्पत्तिसेंपूर्वरक्तरूपकाअभावहै सोप्रागभावहै घटकीउत्पत्तिसेंउत्तरमुद्गरा
दिकतेंकपालमेंघटकाअभावहै सोप्रध्वंसाभावहै औपक्वकपालमेंस्यामरूपकाअभावहोवेहै सोस्यामरूपकाप्रध्वंसाभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति० १ है नैयायिकमततें प्रध्वंसाभाव सादि है औ अनंत है काहेतें घटके ध्वंसकी उत्पत्ति तो मुद्गरादिकनतें होवै है यह अनुभवसिद्ध है प्र० ६
औ ध्वंसका ध्वंस संभवै नहीं काहेतें प्रागभाव प्रतियोगि ध्वंस इन तीनूंमें एकका अधिकरणकाल अवश्य होवै है प्रागभाव ध्वंस
का अनाधारकाल प्रतियोगिका आधार होवै है यह नियम है जैसें घटकी उत्पत्ति हुये नाशतें पूर्व घटके प्रागभावका अनाधारकाल
है काहेतें प्रागभावका नाश होयगया औ घटका ध्वंस हुया नहीं यातें घटध्वंसका अनाधारकाल है सो घटका आधारकाल है जो
घटके ध्वंसका ध्वंस मानैं तौ घटध्वंसके ध्वंसका अधिकरणकाल घटप्रागभावका औ घटध्वंसका अनाधार होनेतें घटका आ
धार हुया चाहिये इसरीतिसें ध्वंसका ध्वंस माने प्रतियोगिका उन्मज्जन हुया चाहिये इसीवास्ते प्रागभावकूं अनादि मानै हैं जो
सादि मानैं तौ प्रागभावकी उत्पत्तिसें प्रथमकाल प्रागभाव औ ध्वंसका अनाधार होनेतें प्रतियोगिका आधार हुया चाहिये यातें प्रा
गभाव अनादि सांत है ध्वंस अनंत सादि है भूतलादिकनमें जहां कदाचित् घट होवै तहां घटशून्यकालमें घटका सामयिकाभा
व है किसी समयमें होवै सो सामयिकाभाव कहिये है वायुमें रूप कदाचित् बी होवै नहीं यातें वायुमें रूपका अत्यंताभाव है घ
टसें इतरपदार्थनमें जो घटका भेद सो घटका अन्योन्याभाव है सामयिकाभाव तौ सादि सांत है अत्यंताभाव अन्योन्याभाव दो
नूं अनादि अनंत हैं इसरीतिसें पांचप्रकारका अभाव है तिनकी परस्पर विलक्षणताकी साधक विलक्षणप्रतीति कहै हैं कपाल
में घटकी उत्पत्तिसें पूर्व कपाले घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवै है ताका विषय घटका प्रागभाव है काहेतें प्रतियोगिके उपादानकार
णमें सामयिकाभाव औ अत्यंताभाव तौ रहैं नहीं यह अर्थ आगे कहेंगे किंतु अपने प्रतियोगिके उपादानकूं त्यागिके अन्यस्था १
नमें दोनूं अभाव रहै हैं यातें कपाले घटो नास्ति इस प्रतीतिके विषय सामयिकाभाव अत्यंताभाव नहीं औ घटकी उत्पत्तिसें पूर्व

1604

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ध्वंसकासंभवनहीं काहेतें ध्वंसकाप्रतियोगिनिमित्तकारणहोवैहै कारणतें पूर्वकार्यसंभवैनहीं यातें घटकीउत्पत्तिसें पूर्वक
पालेघटोनास्तिइसप्रतीतिकाविषयघटध्वंसबीनहीं औघटकाअन्योन्याभावयद्यपिकपालमें सर्वदाहै तथापिकपालोन-
घटः ऐसीअन्योन्याभावकीप्रतीतिहोवैहै कपालेनघटः ऐसीप्रतीतिअन्योन्याभावकीहोवेनहीं जोऐसीप्रतीतिकाविषयहै
सोप्रागभावकहियेहै तैसेंमुद्गरादिकनतें घटकाअदर्शनहोवेतबकपालेघटोनास्तिऐसीप्रतीतिहोवैहै ताकाविषयप्रागभाव
नहींहै काहेतें प्रागभावकानासप्रतियोगिरूपहोवैहै घटकीउत्पत्तिसें उत्तरप्रागभावकासंभवनहीं औजोतीनिअभावहैं
तिनकाबीपूर्वउक्तप्रकारसेंसंभवनहीं यातेंमुद्गरादिजन्यघटकेअदर्शनकालमें कपालेघटोनास्तिऐसीप्रतीतिहोवैहै ता-
काविषयप्रध्वंसाभावहै इसरीतिसें प्रागभावऔप्रध्वंसाभावबीनशब्दजन्यप्रतीतिकेविषयहैं यहप्राचीनकामतहै औन
वीनमतमेंप्रतियोगिकेउपादानकारणमेंबीअत्यंताभावरहैहै काहेतें अत्यंताभावकाप्रतियोगिसेंविरोधहै अन्यतें नहीं जहांप्रति
योगीनहींहोवे तहांसारेअत्यंताभावहोवैहै यातेंघटकीउत्पत्तिसें पूर्वऔप्रतियोगिकेनासकालमेंबीप्रतियोगीकाअत्यंताभाव
होनेतें कपालेघटोनास्तिइसप्रतीतिकाविषयअत्यंताभावहै ऐसीप्रतीतिसेंप्रागभावप्रध्वंसाभावकीसिद्धिहोवेनहीं किंतु
कपालेघटोभविष्यतिऐसीप्रतीतिघटकीउत्पत्तिसेंपूर्वहोवैहै ताकाविषयप्रागभावहै औघटोध्वस्तः ऐसीप्रतीतिकाविषयध्वं
सहै इसरीतिसें घटकीउत्पत्तिसेंप्रथमकपालमेंघटकाअत्यंताभावऔप्रागभावदोनूंहै तिनमेंकपालेघटोनास्तिइसप्रती
तिकाविषयकपालमेंघटकाअत्यंताभावहै औकपालेघटोभविष्यतिइसप्रतीतिकाविषयकपालमेंघटकाप्रागभावहै तैसेंमु-
द्गरादिकनतेंकपालमेंघटकाअदर्शनहोवैतिसकालमेंबीकपालेघटोनास्तिकपालेघटोध्वस्तः इसरीतिसेंद्विविधप्रतीतिहोवैहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1606

तिनेमेंआद्यप्रतीतिकाविषयघटकाअत्यंताभावहै औद्वितीयप्रतीतिकाविषयकपालमेंघटकाप्रध्वंसाभावहै इसरीतिसेंनवीन
मतमेंप्रागभावप्रध्वंसाभावनशब्दजन्यप्रतीतिकेविषयनहीं यातेंप्रथमलक्षणप्राचीनमतकेअनुसारीहै उभयमतानुसारी
द्वितीयलक्षणहै यातेंद्वितीयलक्षणहीसमीचीनहै संबंधऔसादृश्यतेंभिन्नजोअन्यसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोवैसोअभावक
हियेहै यहद्वितीयलक्षणहै भूतलेघटोनास्तिइसप्रतीतिकेविषयप्रागभावऔध्वंसनहीं काहेतेंप्रतियोगिकेउपादानमेंदोनूंअभा
वरहैहैं घटाभावकेप्रतियोगीघटकाउपादानभूतलनहीं यातेंउक्तप्रतीतिकेविषयदोनूंअभावनहीं अत्यंताभावअन्योन्याभाव
तौनित्यहैं औभूतलमेंघटाभावअनित्यहै यातें घटकासामयिकाभावहीउक्तप्रतीतिकाविषयहै वायोरूपंनास्तिइसप्रतीति
काविषयकेवलअत्यंताभावहै अनंतहोनेतेंप्रागभावनहीं अनादितासें ध्वंसनहीं सर्वदाहोनेतेंसामयिकाभावनहीं यातें
उक्तप्रतीतिकाविषयअत्यंताभावहै तैसेंवायुर्नरूपवान्इसप्रतीतिकाविषयअन्योन्याभावहै उक्तप्रतीतिसेंवायुमेंरूपव
त्ताभेदभासैहै तैसेंघटःपटोनयाप्रतीतिकाविषयअन्योन्याभावहै अन्योन्याभावकूंहीभेदकहैहै अभेदकानिषेधकजोअ
भावसोअन्योन्याभावकहियेहै घटःपटोन ऐसाकहनेतें घटमेंपटकेअभेदकानिषेधहोवैहै यातें घटमेंपटकेअभेदकानिषेध
घटमेंपटकाअन्योन्याभावहै काहेतेंनशब्दबिनाजामेंजोप्रतीतहोवैनशब्दसेंताकानिषेधहोवैहै जैसेंनशब्दबिनाघटःपटःया
वाक्यतेंनीलोघटः इत्यादिकनकीनांई पटमेंघटकाअभेदवा घटमेंपटकाअभेदप्रतीतहोवैहै तिसअभेदकानिषेधनशब्द
सेंहोवैहै परंतुइतनाभेदहैजापदसेंनशब्दकासंबंधहोवैतापदकेअर्थकेअभेदकानिषेधहोवैहै जैसेंघटःपटोनयावाक्य २
मेंपटपदसेंनशब्दकासंबंधहै तहांघटमेंपटपदकेअर्थकेअभेदकानिषेधहोवैहै औपटोघटोनयावाक्यमेंनशब्दकासबं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धघटपटसैंहै तहांघटःपटकेअर्थकेअभेदकानिषेधपटमैंहोवैहै इसीवासतैं घटःपटोनयावाक्यतैंजोअन्योन्याभावप्रतीतहोवैताका घटअनुयोगिहै औपटप्रतियोगिहै तैसैंपटो घटोनयावाक्यतैंप्रतीतहुयेअन्योन्याभावकापट अनुयोगिहै घटप्रतियोगिहै जामैंअभाव होवे सोअभावकाअनुयोगिकहियेहै जाकाअभावहोवे सो प्रतियोगिकहियेहै शंकाजाकानिषेधकरियेताकाअभावकहियेहै सोईअभावकाप्रतियोगिकहिये औपूर्वयहकह्याघटःपटोनयावाक्यतैंघटमैंपटकेअभेदकानिषेधकरियेहै औपटोघटोनयावाक्यतैंपटमैंघटकेअभेदकानिषेधकरियेहै यातैंघटःपटोनयावाक्यतैंप्रतीतहुये अभावकाप्रतियोगीपटकाअभेदहै पटनहीं तैसैंपटोघटोनयावाक्यतैंप्रतीतहुयेअभावकाप्रतियोगी घटकाअभेदहै घटनहीं यातैंदोनूंवाक्यनमैंअभेदकानिषेधकहैंपटमैंऔघटमैंक्रमतैंप्रतियोगिताकथनसैंविरोधहोवेगा ताकासमाधान अभेदनामअसाधारणधर्मकाहै जोअपनेआत्माविनाकिसीपदार्थमैंनहींरहैकेवलअपनेमैंहीरहै सोअपनाअसाधारणधर्मकहियेहै घटकाअभेद घटमैंहीरहैहै अन्यमैंनहीं यातैंघटकाअभेद घटकाअसाधारणधर्महै सोअसाधारणधर्मरूपअभेदहैसकलपदार्थनकाअपनेमैंसंबंधहै इसरीतिसैंसारेपदार्थनकाअसाधारणधर्मरूपअभेदसंबंधअपनेस्वरूपमैंरहैहै जापदार्थकाजोसंबंधजामैंरहैहै सोपदार्थतासंबंधसैंतिसमैंरहैहै जैसैंघटकासंयोगसंबंधभूतलमैंहोवे तहांसंयोगसंबंधसैंभूतलमैंघटरहैहै यहव्यवहारहोवैहै यातैंघटकाभूतलमैंसंयोगसंबंधहै औसंयोगसंबंधतैंभूतलमैंघटहै याकहनेमैंअर्थकाभेदनहीं तैसैंसंयोगसंबंधतैंभूतलमैंघटाभावहै औभूतलमैंघटसंयोगकाअभावहै याकहनेमैंएकहीअर्थहै इसप्रकारतैंपटमैंअभेदसंबंधतैंघटाभावऔघटकेअभेदसंबंधकापटमैंअभावदोनूंसमनियतहोनेतैंएकहीपदार्थहै समनियतनअभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नका भेद होवै नहीं जैसें घटत्वात्यंताभाव औ घटान्योन्याभाव दोनूं घटसें भिन्न सकल पदार्थनमें रहे हैं यातें समनियत होनेतें
परस्पर भिन्न नहीं किंतु एकही अभावमें घटत्वात्यंताभावत्व औ घटान्योन्याभावत्व दो धर्म हैं औ एकही अभावके घटत्व औ घट
दोनूं प्रतियोगी हैं घटत्वात्यंताभावत्वरूपतें जिस अभावका घटत्व प्रतियोगी है तिसी अभावका घटान्योन्याभावत्वरूपतें घट
बी प्रतियोगी है औ जिसरीतिसें एकही अभावके रूपभेदसें दो प्रतियोगी हैं तैसें रूपभेदसें एकही अभावके प्रतियोगितावच्छे
दक दो संबंध हैं घटत्वात्यंताभावत्वरूपतें प्रतियोगितावच्छेदक समवाय संबंध है औ घटान्योन्याभावत्वरूपतें तिसी अभाव
का प्रतियोगितावच्छेदक समवाय संबंध है इसरीतिसें पटादिक सकल पदार्थनमें घटाभेदका अत्यंताभाव औ घटान्योन्या
भाव बी एक है तिस एक अभावमें घटाभेदात्यंताभावत्व औ घटान्योन्याभावत्व दो धर्म हैं औ घटाभेदात्यंताभावत्वरूपतें तिस
अभावका घटाभेद प्रतियोगी है प्रतियोगितावच्छेदक स्वरूप संबंध है औ घटान्योन्याभावत्वरूपतें तिसी अभावका घट प्रतियो
गी है प्रतियोगितावच्छेदक अभेद संबंध है तिस अभेद संबंधकूंही तादात्म्य कहे हैं तद्व्यक्तित्व कहे हैं इसरीतिसें घटके अभेदके निषेध
का घट प्रतियोगी है यह कथन बी संभवै है विरुद्ध नहीं यास्थानमें यह निष्कर्ष है जिस वाक्यतें नशब्द बिना जा पदार्थमें जा संबंधसें
जो पदार्थ प्रतीत होवै नशब्द सहित तिस वाक्यतें ता पदार्थमें ता संबंधसें तिस पदार्थका निषेध प्रतीत होवै है जैसें नीलो घटः या वा
क्यतें घट पदार्थमें अभेद संबंधसें नील पदार्थ प्रतीत होवै है काहेतें अभेद संबंधसें नीलविशिष्ट घट है यह वाक्यका अर्थ है नस
हित घटो न नीलः या वाक्यतें अभेद संबंधतें नीलका निषेध घटमें प्रतीत होवै है तैसें घटः पटः या वाक्यतें बी नशब्द बिना पट पदा ३
र्थमें अभेद संबंधतें घट पदार्थ प्रतीत होवै है काहेतें जहां दोनूं पदनमें समान विभक्ति होवै तहां एक पदार्थमें अभेद संबंधसें अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घटपदार्थप्रतीतहोवैहै यहनियमहै नीलोघटः यावाक्यकीनांई घटः पटः यावाक्यमैंदोनूंपदसमानविभक्तिवालेहैं यातैंनशब्द
विनाघटःपटः यावाक्यतैंवीपटपदार्थमैंअभेदसंबंधसैंघटपदार्थप्रतीतहोवैहै यद्यपिअभेदसंबंधसैंपटपदार्थमैंघटपदार्थ
संभवैनहीं तथापिएकपदार्थमैंअभेदसंबंधसैंअपरपदार्थकीप्रतीतिकीसामग्रीसमानविभक्तिहै सोघटः पटः यावाक्यमैंवी
है यातैंनशब्दविनाघटःपटः यावाक्यतैंपटपदार्थमैंअभेदसंबंधसैंघटप्रतीतहोवैहै परंतुपटपदार्थमैंअभेदसंबंधसैंघटपदा
र्थकीप्रतीतिभ्रमरूपहोवैगीप्रमानहीं यातैंनशब्दविनाएकपदार्थमैंजासंबंधसैंअपरपदार्थकीप्रतीतिभ्रमरूपवाप्रमारूप
होवै तहांनशब्दमिलैंएकपदार्थमैंतासंबंधसैंअपरपदार्थकानिषेधहोवैहै इसरीतिसैंएकपदार्थमैंअभेदसंबंधसैंअप
रपदार्थकानिषेधकअभावकूंअन्योन्याभावकहियेहै तासैंभिन्नजोअभाव ताकूंसंसर्गाभावकहैहैं संसर्गाभावप्राचीनम
तमैंच्यारिप्रकारकाहै अनादिसांतजोअभावसोप्रागभावकहियेहै अपनेंप्रतियोगिकेउपादानकारणमैंप्रागभावरहैहै जै
सैंघटकेप्रागभावकाप्रतियोगिघटहै ताकेउपादानकारणकपालमैंघटकाप्रागभावरहैहै कपालकीउत्पत्तिसैंवीप्रथमक
पालकेउपादानकारणमैंघटकाप्रागभावरहैहै इसरीतिसैंसृष्टितैंप्रथमघटारंभकपरमाणुसमुदायमैंघटकाप्रागभाव
रहैहै औपरमाणुघटकेमध्यजोद्व्यणुकादिकपालांतअवयवीहैं तिनसर्वकेप्रागभावसृष्टितैंप्रथमपरमाणुमैंरहैहैं इ
सरीतिसैं प्रागभावअनादिकहियेउत्पत्तिरहितहै औसांतकहियेअंतवालाहै अंतनामध्वंसकाहै जाकूंनासकहैहैं जोघटकी
उत्पत्तिकीसामग्री तासैंघटकेप्रागभावकाअंतहोवैहै यातैंघटकेप्रागभावकाअंतघटरूपहीहै घटकेप्रागभावकाध्वंसघट
सैंपृथक्नहीं यद्यपिप्रध्वंसाभावअनंतहै औघटसांतहै घटकेप्रागभावकाध्वंसघटरूपहोवैतोप्रध्वंसाभाववीसांतहोवै

1609

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA.

वृ.प्र. गा प्रध्वंसाभाव अनंत है यातें नियमका भंग होवेगा तथापि ध्वंस नाश अंत ये पर्यायशब्द हैं सो ध्वंस दो प्रकार होवे है एक तो म.
५ भावपदार्थका नाशरूप ध्वंस होवे है औ दूजा अभावका नाशरूप ध्वंस होवे है भावपदार्थका नाशरूप ध्वंस तो अभावरूप हो ६
वे है ताहीकूं प्रध्वंसाभाव कहे हैं जैसें घटादिक भावपदार्थनका नाश अभावरूप है ताकूं प्रध्वंसाभाव कहे हैं औ अभावपदा
र्थका नाशरूप ध्वंस भावरूप होवे है ताकूं ध्वंस प्रध्वंस तो कहे हैं औ ध्वंसाभाव प्रध्वंसाभाव कहे नहीं जैसें घटका प्रागभा
व अभावपदार्थ है ताका नाशरूप ध्वंस घट है सो भावरूप है ताकूं प्रध्वंसाभाव नहीं कहे हैं किंतु घटके प्रागभावका नाशरूप
घटकूं स्वप्रागभावका ध्वंस औ प्रध्वंस ही कहे हैं इसरीतिसें दो प्रकारका ध्वंस होवे है तिनमें भावरूप ध्वंस तो सांत है परंतु
अभावरूप ध्वंस अनंत है यातें घटके प्रागभावका ध्वंस घटरूप तो सांत है तथापि प्रध्वंसाभाव अनंत है यातें नियमकी हानि
नहीं इसरीतिसें अनादि सांत जो अभाव सो प्रागभाव कहिये है अनादि अभाव तो अत्यंताभाव वी है सो सांत नहीं औ सांत
अभाव सामयिकाभाव वी है सो अनादि नहीं औ वेदांत सिद्धांतमें अनादि औ सांत माया है सो अभाव नहीं किंतु जगतका
उपादान कारण माया है जो अभावरूप माया होवे तो उपादान कारणता संभवे नहीं काहेतें घटादिकनके उपादान कारण क
पालादिक भावरूप ही प्रसिद्ध हैं अभाव किसीका उपादान कारण नहीं यातें माया अभावरूप नहीं किंतु भावरूप है यद्यपि-
माया भाव अभावसें विलक्षण अनिर्वचनीय है यातें भावरूपता बी माया विषे संभवे नहीं तथापि अभावरूप माया नहीं
यातें प्रागभावके लक्षणमें अभावपदके प्रवेशतें मायामें प्रागभावका लक्षण जावे नहीं औ माया भावरूप नहीं या कथन
का यह अभिप्राय है कालत्रयमें जाका बाध नहीं होवे सो परमार्थ सत् कहिये है औ भाव कहिये है ऐसा ब्रह्म है माया नहीं काहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैंज्ञानतैं उत्तरकालमैंमायाकाबाधहोवैहै यातैंपरमार्थसत्स्वरूपभावतो यद्यपिमायानहीं तथापिविधिमुखप्रतीतिकाजोवि
षयहोवैसोवीसत्कहियेहै औभाववीकहियेहै निषेधमुखप्रतीतिकाविषयहोवैसोअभावकहियेहै निषेधमुखप्रतीतिकी
विषयताभीमायामेंनहीं यातैंमायावीभावरूपहै यद्यपिमायाप्रकृतिअविद्याअज्ञानयेशब्दपर्यायहैं औअविद्याअज्ञानश
ब्दनमैंअकारनिषेधकावाचकहै यातैंमायावीनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयहोनेतैंअभावरूपकहीचाहिये तथापिअका
रकाकेवलनिषेधअर्थनहींहै किंतुविरोधिभेदवान्अल्पवीअकारकेअर्थहैं जैसैंअधर्मशब्दमैंअकारकाविरोधीअर्थहै
धर्मविरोधीकूंअधर्मकहेहैं औअब्राह्मणोनाचार्ययास्थानमैंअकारकाभेदवान्अर्थहै ब्राह्मणसैंभिन्नआचार्यताके
योग्यनहीं यहवाक्यकाअर्थहै औअनुदरादेवदत्तकन्यायास्थानमैंअकारकाअल्पअर्थहै अल्पउदरवालीदेवदत्तकीकन्या
है यहवाक्यकाअर्थहै जैसैंइतनेंस्थानोंमैंअकारकानिषेधअर्थनहीं तैसैंअविद्याशब्दऔअज्ञानशब्दमैंवीअकारकानि
षेधअर्थनहीं किंतुविरोधीअर्थहै मायाकाज्ञानसैंबध्यघातकभावविरोधहै यातैंअज्ञानकहेहैं मायाबध्यहै औज्ञानघातक
है वेदांतवाक्यजन्यब्रह्माकारवृत्तिकूंविद्याकहेहैं सोमायाकीविरोधिनीहै यातैंअविद्याकहैहै अज्ञानशब्दऔअविद्याशब्दका
वाच्यवीमायाहै तौवीअकारकाविरोधिअर्थहोनेतैं मायाभावरूपहै भावरूपवीब्रह्मकीनांई परमार्थसत्रूपनहीं किंतुविधि
मुखप्रतीतिकाविषयहोनेतैंव्यावहारिकसत्रूपहै प्रागभावकेलक्षणमैंअभावपदनहींहोतातोमायामैंलक्षणकीअति
व्याप्तिहोती काहेतैंमायाअनादिहै औसांतहै यातैंअनादिसांतजोअभावसोप्रागभावकहियेहै सादिअनंतजोअभावसोप्र
ध्वंसाभावकहियेहै घटादिकनका ध्वंसमुद्गरादिकनतेंहोवैहै यातैंसादिहै औअनंततामैंयुक्तिपूर्वकहीहै अनंतअभावकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृनिः ५ प्रध्वंसाभाव कहैं तौ अत्यंताभावमैं अतिव्याप्ति होवैगी यातैं प्रध्वंसाभावके लक्षणमैं सादि कह्या चाहिये अत्यंताभाव सादि नहीं किंतु अनादि है औ सादि अभावकूं प्रध्वंसाभाव कहै तौ सादि अभाव सामयिकाभाव बी है तहां अतिव्याप्ति होवैगी सामयिकाभाव अनंत नहीं किंतु सांत है सादि अनंतकूं प्रध्वंसाभाव कहैं तौ मोक्षमैं अतिव्याप्ति होवैगी काहेतैं ज्ञानतैं मोक्ष होवै है यातैं सादि है औ मुक्तकूं फेरि संसार होवै नहीं यातैं अनंत है परंतु मोक्ष भावरूप है अभावरूप नहीं यातैं प्रध्वंसाभावके लक्षणमैं अभाव कह्या चाहिये यद्यपि अज्ञान औ तिसके कार्यकी निवृत्तिकूं मोक्ष कहै हैं औ निवृत्ति नाम ध्वंसका है यातैं मोक्ष बी अभावरूप है यातैं प्रध्वंसाभावके लक्षणमैं अभावपद नहीं गेरै तौ बी मोक्षमैं अतिव्याप्तिरूप दोष नहीं काहेतैं अलक्ष्यमैं लक्षण जावै ताकूं अतिव्याप्ति कहै हैं अज्ञान औ ताके कार्यके ध्वंस मोक्षकूं लक्ष्यता स्पष्ट ही है सकल नाश ध्वंसाभावके लक्षणके लक्ष्य हैं सकल नाशनके अंतर्भूत ही कार्यसहित अज्ञानका नाशरूप मोक्ष है तथापि कल्पितकी निवृत्ति अधिष्ठानरूप होवै है अज्ञान औ ताका कार्य कल्पित है यातैं तिन्हकी निवृत्ति अधिष्ठान ब्रह्मरूप है यातैं अभावरूप मोक्ष नहीं किंतु ब्रह्मरूप होनेतैं भावरूप है तामैं ध्वंसका लक्षण जावै तौ अतिव्याप्ति होवैगी यातैं सादि अनंत जो अभाव सो प्रध्वंसाभाव कहिये है उत्पत्ति औ नाशवाला जो अभाव सो सामयिकाभाव कहिये है जहां किसी कालमैं पदार्थ होवै औ किसी कालमैं न होवै तहां पदार्थशून्य कालमैं तिस पदार्थका सामयिकाभाव होवै है जैसे भूतलादिकनमैं घटादिक किसी कालमैं होवै है किसी कालमैं नहीं होवै है तहां घटशून्यकालसंबंधी भूतलादिकनमैं घटादिकनका सामयिकाभाव है समयविशेषमैं उपजै औ समयविशेषमैं नष्ट होवै सो सामयिकाभाव कहिये है भूतलसैं घटकूं अन्यदेशमैं ले जावैं तब घटका अभाव भूतलमैं उपजै है औ तिसी भूतलमैं घटकूं ले आवैं तब घटका अभाव भूतलमैं नष्ट होवै है इस रीतिसैं सामयिका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावउत्पत्तिनाशवालाहै उत्पत्तिवालाअभाव प्रध्वंसाभावबीहै तहांअतिव्याप्तिपरिहारवास्ते सामयिकाभावकेलक्षणमेंनाशप (613
दकह्याहै प्रध्वंसाभावयद्यपिउत्पत्तिवालाअभावहै तथापिनाशवालानहीं यातेंनाशपदकहै अतिव्याप्तिदोषनहीं नाशवाले
अभावकूं सामयिकाभावकहैं तौप्रागभावमेंअतिव्याप्तिहोवेगी यातेंसामयिकाभावकीलक्षणमेंउत्पत्तिपदकह्याहै लक्षणमें
उत्पत्तिपदकेप्रवेशतेंप्रागभावमेंअतिव्याप्तिनहीं काहेतें प्रागभावकानाशतोहोवैहै परंतुअनादिहोनेतेंउत्पत्तिहोवेनहींऔ
सामयिकाभावकेलक्षणमेंअभावपदनहींगेरें किंतुउत्पत्तिनाशवालेकूंसामयिकाभावकहैंतौघटादिकनमेंअतिव्याप्तिहोवेगी काहे
तें घटादिकबीभूतभौतिकअनंतपदार्थउत्पत्तिऔनासवालेहैं औअभावपदकेप्रवेशतेंघटादिकनकूंभावरूपताहोनेंतेंतिनमें
सामयिकाभावकेलक्षणकीअतिव्याप्तिनहीं इसरीतिसें भूतलादिकनमें घटादिकनकाउत्पत्तिऔनाशवालाअभावसामयिका
भावहै अन्योन्याभावसैंभिन्नजोउत्पत्तिशून्यऔनाशशून्यअभावसोअत्यंताभावकहियेहै जहांकिसीकालमें जोपदार्थनहो
वें तहांतिसपदार्थकाअत्यंताभावकहियेहै जैसेंवायुमेंरूपकिसीकालमेंनहीं होवैहै तहांरूपकाअत्यंताभावहै तैसेंगंधबीवा
युमेंसर्वदानहीं होवैहैयातेंगंधकावायुमेंअत्यंताभावहै स्नेहगुणकेवलजलमैंहीरहैहै अन्यमेंकदीरहैनहीं यातेंजलबिन
अन्यपदार्थनमेंस्नेहकाअत्यंताभावहै आत्मामेंरूपरसगंधस्पर्शशब्दकदीबीरहैंनहीं यातेंरूपादिकनकेअत्यंताभावआत्मा
मेंरहैहैं पृथिवीऔजलमेंरसरहैहै अन्यमेंकदीरहैनहीं यातेंपृथिवीजलभिन्नपदार्थनमेंरसकाअत्यंताभावहै पृथिवीत्वजा
तिकेवलपृथिवीमेंरहैहै जलादिकनमेंकदीरहैनहीं यातेंजलादिकनमेंपृथिवीत्वकाअत्यंताभावहै ब्राह्मणभिन्नक्षत्रिया
दिकनमेंब्राह्मणत्वकदीरहैनहीं यातेंक्षत्रियादिकनमेंब्राह्मणत्वकाअत्यंताभावहै आकाशकालदिशाआत्माव्यापकहैंति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमेंकदीबीक्रियाहोवेनहीं यातें आकाशादिकनमें क्रियाकाअत्यंताभावहै पृथिवीजलतेजपवनमनमेंक्रियाहोवेहै औकदाचि
त्क्रियाकाअभावहोवेहै यातें पृथिवीआदिकनिष्क्रियहोवें तब पृथिवीजलतेजपवनमेंमनमेंक्रियाकाअत्यंताभावनहीं तैसेंसामयिका
भाववीनहीं काहेतें सामयिकाभावकेवलद्रव्यकाहोवेहै क्रियाकासामयिकाभावसंभवैनहीं यहवार्त्ताआगेंकहेंगे यातेंसामयि
काभाववीनहीं किंतुपृथिवीआदिकपांचमेंक्रियाकाप्रागभाव औप्रध्वंसाभावहै इसरीतिसेंभूतलादिकनमें जहांकदाचि… यातें
टादिकहोवे कदाचित्नहींहोवे तहांसारेसामयिकाभावहै अत्यंताभावनहीं काहेतें अभावकाप्रतियोगिसेंविरोधहै जहांप्रति
योगिहोवे तहांअभावहोवेनहीं किंतुअभावकाअभावहोवेहै औजहांभूतलादिकनमेंकदाचित्घटादिकहोवें औकदाचितन
हींहोवे तहांअत्यंताभावमानेंतोअत्यंताभावनित्यहै यातें घटकालमेंबीघटकाअत्यंताभावहोनेंतें अत्यंताभावकाअपनें
प्रतियोगिसेंविरोधनहींहोवेगा यातें भूतलादिकनमेंघटादिकनकाअत्यंताभावसंभवैनहीं जैसें घटकीउत्पत्तिसेंप्रथम
कपालमेंघटकाप्रागभावहोवेहै घटरूपप्रतियोगिकेउपजेंकपालमेंघटकाप्रागभावरहैनहीं ताकानाशहोयजावैहै यातेंप्रा
गभावकाप्रतियोगिसेंविरोधहै तैसेंकपालमेंघटकाप्रध्वंसाभावहोवेतबघटरहैनहीं औघटरहैजितनेंकालकपालमेंघ
टकाप्रध्वंसाभावहोवेनहीं यातेंप्रध्वंसाभावकाबीप्रतियोगिसेंविरोधस्पष्टहै तैसेंभूतलादिकनमें संयोगसंबंधसें घटादि
करहैंजितनेंभूतलादिकनमें घटादिकनकेसामयिकाभावरहैनहीं किंतुजितनेंकालघटादिकप्रतियोगिभूतलादिकनमेंनहो
वैंउतनेंकालसामयिकाभावरहैहै औघटादिकप्रतियोगि आयजावेतबसामयिकाभावकानाशहोवेहै आयेघटकूंउठायलेवेंत ६
बघटकासामयिकाभावऔरउपजेहै इसीवास्तेंसामयिकाभावकेउत्पत्ति औनाशमानेंहैं इसरीतिसेंसामयिकाभावकाबी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभावनिश्चयमें इंद्रियजन्यता प्रतीतहोवैहै नैयायिककीशंकाका यहसमाधानसर्वत्रव्यापकहै औ अधिकरणज्ञानकी इंद्रियजन्यता अभा
वज्ञानमें भासैहै यहभेदधिक्कार वेदांतपरिभाषादिकनका समाधानसर्वत्रव्यापकनहीं किंतुजहांप्रत्यक्षयोग्यभूतलादिक अभावके अ
धिकरणहैं तहांतो यहसमाधानसंभवैहै औजहांप्रत्यक्षअयोग्यवायुआदिक अभावके अधिकरणहैं तहांउक्तसमाधानसंभवैनहीं औ
अनुपलब्ध्यारसनेंद्रियेणाम्लरसाभावमाम्रेजानामियास्थानमेंबी अधिकरणकाज्ञानरसनेंद्रियजन्यसंभवैनहीं काहेतें अम्लरसके
अभावका अधिकरणआम्रफलहै ताके ज्ञानकेसामर्थ्य रसनेंद्रियमेंनहीं रसनेंद्रियमें केवलरसज्ञानकीसामर्थ्यहै द्रव्यज्ञानकीसामर्थ्य
नहीं यातें रसनेंद्रियजन्याम्लरसोपलब्धिके अभावतें आम्रफलमें रसके अभावकानिश्चयवालोमेंहूं यहतात्पर्यसैंउक्तव्यवहारहोवैहै यद्य
पिउक्तवाक्यके अक्षरमर्यादासैंउक्तअर्थक्लिष्टहै तथापि अन्यगतिके असंभवतेंउक्तअर्थहीमान्याचाहिये यातें नैयायिककीशंकाका अ
स्मदुक्तहीसमाधानहै इसरीतिसैं अनुपलब्धिप्रमाणतें अभावकानिश्चयहोवैहै यहपक्षनिर्दोषहै औजोनैयायिकसंकाकरे अभाव
प्रमाकापृथक्प्रमाणमाननेंमेंगोरवहै औ घटादिकनकी प्रत्यक्षप्रमामें इंद्रियकीप्रमाणतानिर्णीतहै तानिर्णीतप्रमाणसैं अभावप्र
माकीउत्पतिमानेंलाघवहै ताशंकाका यहसमाधानहै इंद्रियकूं प्रमाणताकहनेवालानैयायिकबी अनुपलब्धिकूं कारणतातोमानेंहै
अनुपलब्धिकूं करणतानहीं कहेहैं अद्वैतवादी इंद्रियकूं अभावकीकरणतानहींमानेंहै यातें इंद्रियका अभावतें स्वसंबद्धविशेषणता
औसंबद्धविशेषणतासंबंधनहीं माननाहोवैहै नैयायिककूं अप्रसिद्धसंबंधकीकल्पनागोरवहै औ अनुपलब्धिमेंसहकारीकारणतातोनैयायिकबी
मानेंहै तिसकूं अद्वैतवादी कारणतानामधरिकै प्रमाणताकहेहैं यातें नैयायिकमतमेंहीगोरवहै अद्वैतमतमेंनहीं औरवेदांतपरिभाषा
काटीकाकारमूलकारकापुत्रहुयाहै तिसकूं अद्वैतशास्त्रकेसंस्कारन्यूनहुयेहै औन्यायशास्त्रकेसंस्कार अधिकरहेहैं यातेंमूलकाव्या

1615

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1616

ख्यान करिकेंनैयायिकमतकातिसनें इसरीतिसैंउज्जीवनलिष्याहै अनुपलब्धिपृथक्प्रमाणनहीं अभावकाज्ञानइंद्रियतैंहीहोवैहै
औजोकहेंअभावकेसाथिइंद्रियकासंबंधनहींहैं विषयतें संबंधविनाइंद्रियजन्यज्ञानहोवैनहीं विशेषणताऔस्वसंबद्धविशेषणताजो
नैयायिकसंबंधमानैंहैं सोअप्रसिद्धहै यातैंअप्रसिद्धकीकल्पनागौरवहै सोअसंगतहै काहेतें घटाभाववत्भूतलंयहप्रतीतिसर्वकूंसं
मतहै याप्रतीतिसें घटाभावमेंआधेयताभासैहै औभूतलमेंअधिकरणताभासैहै परस्परसंबंधविनाआधाराधेयभावहोवैनहीं
यातैंभूतलादिकअधिकरणमेंअभावकासंबंधसर्वकूंइष्टहै जोअभावकूंप्रत्यक्षनहींमानैंतिनकूंबीअभावकातोअंगीकारहै औभू
तलादिकनमेंअभावकीअधिकरणताकाअंगीकारहै यातैंअधिकरणसेंअभावकासंबंधसर्वकूंइष्टहै तासंबंधकाव्यवहारघासतैंको
ईनामकह्याचाहिये यातैंअधिकरणमेंअभावकेसंबंधकूंविशेषणताकहैहैं इसरीतिसैंविशेषणतासंबंधअप्रसिद्धनहीं यातैंअप्रसिद्धक
ल्पनारूपगौरवनैयायिकमतमेंनहीं अभावकाअधिकरणसेंसंबंधसर्वमतसिद्धहै औइंद्रियअधिकरणकासंयोगादिसंबंधवीसर्वम
तसिद्धहोनेंतेंस्वसंबद्धविशेषणतादोनूंसंबंधअप्रसिद्धनहीं औनिर्घटंभूतलंपश्यामिऐसाअनुव्यवसायहोवैहै यातैंभूतलादिकन
मेंअभावकाज्ञाननेत्रादिजन्यहै जहांनेत्रजन्यज्ञानहोवै तहांहिपश्यामिऐसाअनुव्यवसायहोवैहै औअद्दृतमतमेंभूतलकाज्ञानने
त्रजन्यहै घटाभावकाज्ञानअनुपलब्धिजन्यहै नेत्रजन्यनहीं यातैंअनुव्यवसायज्ञानमें अपनेंविषयव्यवसायकीविलक्षणताभा
सीचाहिये जैसैंपर्वतोवन्हिमान् यहज्ञानपर्वतअंसमेंप्रत्यक्षहै वन्हिअंसमेंअनुमितिहै ताकापर्वतंपश्यामिवन्हिमनुमिनोमि
ऐसाअनुव्यवसायहोवैहै तामेंव्यवसायकीविलक्षणताभासैहै सोविलक्षणताइहांनेत्रजन्यत्वऔअनुमानजन्यत्वहै तैसैंअ ३७
भावज्ञानमेंनेत्रजन्यत्वऔअनुपलब्धिजन्यत्वरूपविलक्षणताहोवैतोअनुव्यवसायमेंभासीचाहियेऔकेवलनेत्रजन्यत्वहीअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुव्यवसायमेंभासैहै यातेंअभावकाज्ञान वीइंद्रियजन्यहै पृथक्प्रमाणजन्यनहीं औअभावज्ञान कूंइंद्रियजन्यनहींमानेंतोपी अद्वैतवादीअनुपल
ब्धिजन्यमानिकेप्रत्यक्षरूपकहैहैं सोवीअसंगतहै काहेतेंजोप्रत्यक्षज्ञानहोवेसोइंद्रियजन्यहोवेहै यानियमकाबाधहोवेगा यातेंअभाव
काज्ञानइंद्रियजन्यहै इसरीतिसें वेदांतपरिभाषाकीटीकामेंनें यायिकमतकाउज्जीवनसकलअद्वैतग्रंथनसेंविरुद्धलिख्याहै सोयुक्ति
सेंविरुद्धहै काहेतेंप्रथमजोकह्याअभावकाअधिकरणसेंसंबंधसर्वकूंइष्टहै यातेंअप्रसिद्धकल्पनानहींसोअसंगतहै काहेतें अभा
वऔअधिकरणकासंबंधतोइष्टहै परंतुविशेषणतासंबंधमेंप्रत्यक्षज्ञानकीकारणताअप्रसिद्धहै काहेतेंजोअभावज्ञानकूंइंद्रियज
न्यतामानेतिसीकेमतमेंविशेषणतासंबंधइंद्रियजन्यज्ञानकाकारणमाननाहोवेहै अन्यमतमेंविशेषणतासंबंधमेंइंद्रियजन्य 1617
ज्ञानकीकारणतामाननीहोवेनहीं यातेंअप्रसिद्धकल्पनाकापरिहारनेंयायिकमतमेंहोवेनहीं औजोअभावज्ञानकूंपृथक्प्रमाणज
न्यतामाननेमेंदोषकह्यानिर्घटंभूतलंपश्यामिऐसाअनुव्यवसायनहींहुयाचाहियेसोवीसंभवेनहीं काहेतेंघटाभावविशिष्टभूतलके
चाक्षुषज्ञानवालोंमेंहुं ऐसाअनुव्यवसायहोवे उक्तवाक्यकावीयेहीअर्थहै याअनुव्यवसायमेंघटाभावविशेषणहैभूतलविशेष्यहै ताविं
शेष्यभूतलमेंचाक्षुषज्ञानकीविषयताहै घटाभावविशेषणमेंनहींहैतोवीघटाभावविशिष्टभूतलमेंप्रतीतहोवेहै कहुंविशेषणमा
त्रकाधर्मकहुंविशेष्यमात्रकाधर्मकहुंविशेषणविशेष्यदोनूंकाधर्मविशिष्टमेंप्रतीतहोवेहै जैसेंदंडीपुरुषयाज्ञानमेंदंडविशेषणहै
औपुरुषविशेष्यहै जहांदंडनहींहैपुरुषहै तहांदंडीपुरुषोनास्तीऐसीप्रतीतिहोवेहै यातेंदंडरूपविशेषणकाअभावहै पुरुषरूपवि
शेष्यकाअभावनहीं तथापिविशेषणमात्रवृत्तिअभावदंडविशिष्टपुरुषमेंप्रतीतहोवेहै जहांदंडहैपुरुषनहींहै तहांविशेष्यमात्रकाअ
भावहै औदंडीपुरुषोनास्ती इसरीतिसेंदंडविशिष्टपुरुषमेंप्रतीतहोवेहै जहांदंडनहीं औपुरुषवीनहींहै तहांविशेषणविशेष्यदोनूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति ३८ काअभावविशिष्टमेंप्रतीतहोवैहै तैसैंविशेष्यभूतलमेंचाक्षुषज्ञानकीविषयताहै औविशेषणजोघटाभावतामेंनहींहै तौबीघटाभाववि प्र.
शिष्टभूतलमैंप्रतीतहोवैहै जैसेंवन्हिमतंपर्वतंपश्यामि इसरीतिसेंपर्वतकेप्रत्यक्षकाअनुव्यवसायहोवैहै तहांचाक्षुषज्ञानकीविषय
ताविशेष्यपर्वतमेंहै औविशेषणजोवन्हितामेंनहींहै तथापिवन्हिविशिष्टपर्वतमेंचाक्षुषज्ञानकीविषयताप्रतीतहोवैहै औजोदोषकह्या 1618
घटाभावऔभूतलविजातीयज्ञानकेविषयहोवैतौ पर्वतंपश्यामिवन्हिमनुमिनोमि इसरीतिसेंविलक्षणव्यवसायज्ञानकूंविषयकरनेवा
लाअनुव्यवसायहुयाचाहिये यहकथनबीअद्वैतग्रंथनकेसिथिलसंस्कारवालेकाहै काहेतेंअभावकाज्ञानअनुपलब्धिप्रमाणजन्य
है इसअर्थकूंजोमानेताकूंघटानुपलब्ध्याघटाभावंनिश्चिनोमिनेत्रेणभूतलंपश्यामि ऐसाअनुव्यवसायअबाधितहोवैहै तासेंव्य
वसायज्ञानकीविषयताघटाभावमें औभूतलमेंविलक्षणमानैहै औजोदोषकह्या है अनुपलब्धिजन्यतामानिकेअद्वैतवादीअभाव
ज्ञानकूंप्रत्यक्षमानैहै औजोप्रत्यक्षज्ञानहोवैसोइंद्रियजन्यहोवैहै यातेंउक्तनियमकाअनुपलब्धिवादिकेमतमेंबाधहोवैगा सोबीसिद्धां
तकेअज्ञानतेंहै यातेंअसंगतहै काहेतेंअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानसारेप्रत्यक्षनहींहै किंतुकोईज्ञानप्रत्यक्षहै औवायुमेंरू
पाभावकाज्ञानपरमाणुमेंमहत्त्वाभावकाज्ञानइत्यादिकअनुपलब्धिजन्यहैं तथापिपरोक्षहैं अथवाअनुपलब्धिप्रमाणजन्यबीअभा
वकाज्ञानसारेपरोक्षहै यहपूर्वप्रतिपादनकरिआयेहैं यातेंअनुपलब्धिवादीअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षमानैयहधर्मराजकेपुत्रकाकथनसिद्धां
तकेअज्ञानसेंहै औवेदांतपरिभाषादिकग्रंथनमेंजोकहूंअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षताकहीहै सोप्रौढिवादसेंकहीहै जोअनुपलब्धिप्रमाणज
न्यअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षतामानिलेवैतौबीवक्ष्यमाणरीतिसेंअभावज्ञानमेंइंद्रियजन्यतासिद्धहोवैनहीं यहग्रंथकारनकाप्रौढिवादहै प्रति ३८
वादीकीउक्तिमानिकेबीस्वमतमेंदोषकापरिहारकरैताकूंप्रौढिवादकहैहैं औअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षतामानिकेइंद्रियजन्यतानहींमानेतौप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यक्षज्ञानइंद्रियजन्यहोवैहै यानियमकाबाधहोवैगायह कथनबीअसंगतहै काहेतें ताकूंयहपूछेहैं जोप्रत्यक्षज्ञानहोवैसोइंद्रियजन्यहोवै
है इंद्रियजन्यसैंभिन्नप्रत्यक्षहोवैनहीं ऐसानियमहै अथवाजोइंद्रियजन्यज्ञानहोवैसोप्रत्यक्षहोवैहै प्रत्यक्षसैंभिन्नइंद्रियजन्यहोवैनहीं
यहनियमहै तिनमैंप्रथमपक्षकहैं तौअसंगतहै ईश्वरकाज्ञानप्रत्यक्षहैइंद्रियजन्यनहींहै न्यायमतमैंनित्यहै औसिद्धांतमतमैंमायाजन्यहैईश्व
रकेइंद्रियनकाअभावहै यातेंताकाज्ञानइंद्रियजन्यनहीं औदशमस्त्वमसियावाक्यतें उत्पन्नहुयाज्ञानप्रत्यक्षहै इंद्रियजन्यनहीं जोऐ
सैंकहैदशमपुरुषकूं अपनैंशरीरसैंदशमताकाज्ञानहोवैहै सोशरीरनेत्रकेयोग्यहै यातेंदशमकाज्ञानबीनेत्रइंद्रियजन्यहै सोसंभवैन
हीं काहेतेंनिमीलितनयनकूंबीवाक्यस्फ़ुनिकेदशमकाज्ञानहोवैहै जोनेत्रजन्यहोवैतोनेत्रव्यापारविनानहींहुयाचाहिये यातेंदशम
काज्ञाननेत्रजन्यनहीं औजोऐसैंकहैदशमकाज्ञानमनोजन्यहै यातेंइंद्रियजन्यहैसोबीसंभवैनहीं काहेतेंदेवदत्तयज्ञदत्तादिकनाम आत्माकेनहीं किंतु
न्यायमतमैंशरीरविशिष्टआत्माकेवेदांतमतमैंस्सूक्ष्मविशिष्टस्थूलशरीरकेहैं तैसैंत्वंअहं यह व्यवहारबीसूक्ष्मविशिष्टस्थूलशरीरमैंहो
वैहै तास्थूलशरीरकाज्ञानमनसैंसंभवैनहींबाह्यपदार्थकेज्ञानकामनमैंसामर्थ्यनहीं जोऐसैंकहैंमनकाअवधानहोवैतोवाक्यसैंदश
मकाज्ञानहोवैविक्षिप्तमनवालेकूंहोवैनहीं यातेंअन्वयव्यतिरेकतेंदशमज्ञानकाहेतुमनहोनेतेंदशमकाज्ञानमानसहै यातेंइंद्रियज-
न्यहै सोबीसंभवैनहीं इसरीतिकेअन्वयव्यतिरेकतेंसकलज्ञानोंकाहेतुमनहै विक्षिप्तमनवालेकूंकिसीप्रमाणतेंज्ञानहोवैनहीं सा
वधानमनवालेकूंसकलज्ञानहोवैहैं यातेंसारेज्ञानमानसकहेचाहिये यातेंसर्वज्ञानकासाधारणकारणमनहै इंद्रियअनुमानादिक
सकलप्रमाणकासहकारीहै मनसहितनेत्रतेंजोज्ञानहोवैसोचाक्षुषज्ञानकहियेहै मनसहितअनुमानप्रमाणतेंहोवैसोअनुमिति
ज्ञानकहियेहै मनसहितशब्दप्रमाणतेंहोवैसोशाब्दज्ञानकहियेहैं अन्यप्रमाणविनाकेवलमनतेंजोज्ञानहोवैसोमानसज्ञानकहि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येहै सोकेवलमनतें आंतरपदार्थसुखादिकनकाज्ञानहोवे यातें आंतरपदार्थकाज्ञानहीमानसहोवेहै बाह्यपदार्थकाइंद्रियानुमानादिक-
विनाकेवलमनतेंज्ञानहोवेनहीं यातें दशमकाज्ञानमानसहै यह कहनासंभवेनहीं आंतरपदार्थकाज्ञानमानसहोवेहै यहवीनेयायि
करीतिसेंकह्याहै सिद्धांतमेंतोकोईज्ञानमानसनहीं काहेतें शुद्धआत्मातोस्वयंप्रकाशहै ताकेप्रकाशमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं
यातें आत्माकाज्ञानमानसनहीं औसुखादिकसाक्षीभास्यहैं जिसकालमेंइष्टपदार्थकेसंबंधतेंसुखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवे
औअनिष्टपदार्थकेसंबंधतेंदुःखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवेतिसीसमेंसुखदुःखकूंविषयकरनेंवालाअंतःकरणकेसत्वगुणका
परिणामवृत्तिहोवेहै तावृत्तिमेंआरूढसाक्षीसुखदुःखकूंप्रकासेहै सुखदुःखकीउत्पत्तीमेंइष्टसंबंधऔअनिष्टसंबंधनिमित्तहै तिसीनि
मित्तसेंसुखऔदुःखकूंविषयकरनेंवालीअंतःकरणकीवृत्तिहोवेहै ताकीउत्पत्तिमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं यातें सुखदुःखसा
क्षीभास्यहैं यद्यपिघटादिकनकाप्रकाशभीकेवलवृत्तिसेंहोवेनहीं किंतुवृत्तिमेंआरूढचे[illegible]सेंहीसर्वकाप्रकाशहोवेहै यातें सारेपदार्थ
साक्षीभास्यकहेचाहियें तथापिघटादिकनकाज्ञानरूपअंतःकरणकीवृत्तिउपजेतामेंइंद्रियअनुमानादिकप्रमाणकीअपेक्षाहै औसु
खादिकनकेज्ञानरूपवृत्तिकीउत्पत्तिमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं इतनाभेदहै जावृत्तिमेंआरूढसाक्षीविषयकूंप्रकाशेसोवृत्तिज
हांइंद्रियअनुमानादिकप्रमाणसेंहोवे तहांविषयकूंसाक्षीभाष्यनहींकहेहैं किंतुप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयकहेहैं जहांप्रमाणके
व्यापारविनावृत्तिकीउत्पत्तिहोवेतावृत्तिमेंआरूढसाक्षीजिसकूंप्रकासेसोसाक्षीभास्यकहियेहै घटादिगोचरअंतःकरणकीवृत्तिइं
द्रियअनुमानादिकप्रमाणतेंहोवेहै तावृत्तिमेंआरूढसाक्षीप्रकासेहै तथापिघटादिकप्रमाणगोचरकहियेहैं साक्षीभास्यनहीं
औसुखादिगोचरवृत्तिप्रमाणजन्यनहीं किंतुसुखादिजनकधर्मादिजन्यहैं यातें सुखादिकसाक्षीभास्यहैं इसरीतिसेंसुखादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1620.

1621

औतिनकेज्ञानसमानसामग्रीसेंहोवेहें यातें अज्ञातसुखादिकहोवेंनहीं किंतुज्ञातहीहोवेहें औ सु
पूर्वकालमें सुखादिकहोवें तोस्वज्ञानकेहेतुहोवें सुखादिकऔतिनकाज्ञानसमानकालमेंसमानसाम
तोनहीं औघटादिकनकेप्रत्यक्षज्ञानमेंघटादिकहेतुहें काहेतेंप्रत्यक्षज्ञानतेंप्रथमघटादिकउपजें
घटादिकनकेजहांअनुमितिआदिज्ञानहोवेंतिनकेहेतुघटादिकनहीं अनुमितिज्ञानमेंतेसेंशाब्दज्ञा
गतपदार्थकेअनुमितिआदिकज्ञाननहींहुयेचाहिये यातेंअनुमितिज्ञानशाब्दज्ञानादिकनमें
न्तरज्ञानकेकारणनहींपूर्वप्रसं ग यहहै सुखादिकनकाज्ञानमानसनहीं किंतुसुखादिकसाक्षी
नहीं इसकारणतेंसर्वज्ञानोंकाउपादानरूपअंतःकरणतोहै औज्ञानकास्वतंत्रकरणरूपइंद्रि
तेंदशमकाज्ञानमानसनहीं किंतुवाक्यजन्यहै औप्रत्यक्षहै इसरीतिसेंजोप्रत्यक्षज्ञानहो
जोऐसेंकहै जोइंद्रियजन्यज्ञानहोवैसोप्रत्यक्षहोवै इंद्रियजन्यज्ञानकोईअप्रत्यक्षनहींहोवेहै
ज्ञानकूंअप्रत्यक्षताहमवीनहींकहेहें इंद्रियजन्यज्ञानतोसारेप्रत्यक्षहें कहूंशब्दादिकन
काविरोधनहीं इसरीतिसेंनैयायिकानुसारीधर्मराजकेपुत्रकीउक्तिअसंगतहैयातेंअभाव
पृथक्प्रमाणजन्यहै जहांप्रतियोगीहोतातोताकाउपलंभहोता इसरीतिसेंप्रतियोगीके
ज्ञानयोग्यानुपलब्धिप्रमाणजन्यहै औअंधकारमेंघटाभावकाज्ञानअनुमानादिजन्य
सरीतिसेंघटरूपप्रतियोगीकेआरोपतेंघटकेउपलंभकाआरोपसंभवैनहीं इसरीतिसें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized

ननेंहीज्ञानवेदांतमतमेंकेवलअनुपलब्धिजन्यहैं नैयायिकमतमैंइंद्रियकरणहैं अनुप
लब्धिमेंप्रमाणतानहीं हैं वेदांतमतमैंअनुपलब्धिमेंप्रमाणताअधिकमाननीहोवे
न्यायमतमेंविशेषणतासंबंधकूं ज्ञानकीकरणताअधिकमाननीहोवैहै औविशेषणतास
है इसरीतिसैंवेदांतीकूंअनुपलब्धिमेंप्रमाणताअधिकमाननीऔनैयायिककूंविशेषण
धवगौरवकिसीकूंनहीं दोनूंकासमानकल्पनाहै तथापिअभावज्ञानकीकरणताइंद्रियमें
है औवायुमेंरूपाभावकाज्ञाननेत्रव्यापारसैंविनाहोवैहै औताकूंनैयायिकचाक्षुषज्ञानक
व्यापारसैंविनाहोवैहै ताकूंवीनैयायिकचाक्षुषज्ञानकहैहैं इसरीतिसैंअनेकस्थानमें
ताकूंतिस इंद्रियजन्य कहैहैं सोअनुभवविरुद्धहै जिसइंद्रियव्यापारतेंजोज्ञानहोवे तिस
रविनाजोज्ञानहोवे तिसइंद्रियजन्यताज्ञानकूंमानेंतोसकलज्ञानसकलइंद्रियजन्यहुयेचा
यायिकमतसमीचीननहीं इसरीतिसैंअभावकाज्ञानअनुपलब्धिप्रमाणजन्यहै परंतुआभ
कारणअनुपलब्धिहै यातेंअभावज्ञानकीअसाधारणकारणताअनुपलब्धिप्रमाणकालक्षण
उपयोगहै नेहनानास्तिकिंचनइत्यादिकश्रुतिप्रपंचकात्रैकालिकअभावकहैहैं अनुभवसिद्धप्र
चकास्वरूपसैंनिषेधनहींकरैहै किंतुप्रपंचपारमार्थिकनहीं यातेंपारमार्थिकत्वविशिष्टप्रपंच
तिसैंपारमार्थिकत्वविशिष्टप्रपंचकाअभावश्रुतिसिद्धहै औअनुपलब्धिप्रमाणसैंवीसिद्धहै

नहीमानसहोवैहै बाह्यपदार्थकाइंद्रियानुमानादिक-
ऐं आंतरपदार्थकाज्ञानमानसहोवैहै यहवीनैयायि
काशहै ताकेप्रकाशमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं
र्थकेसंबंधतेंसुखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवे
दुःखकूंविषयकरनैंवालाअंतःकरणकेसत्वगुणका
नीमेंइष्टसंबंधऔअनिष्टसंबंधनिमित्तहै तिसीनि
किसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं यातेंसुखदुःखसा
चे... ऐसेंहीसर्वकाप्रकाशहोवैहै यातेंसारेपदार्थ
इंद्रिय अनुमानादिकप्रमाणकीअपेक्षाहै औसु
मेंआरूढसाक्षीविषयकूंप्रकाशैसोवृत्तिज
ाजन्यज्ञानकाविषयकहैहैं जहांप्रमाणके
हियेहै घटादिगोचरअंतःकरणकीवृत्तिइं
प्रमाणगोचरकहियेहैं साक्षीभास्यनहीं ३९
कसाक्षीभास्यहैं इसरीतिसैंसुखादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसें प्रपंचकी स्वरूपसें उपलब्धि होवे है तैसें पारमार्थिक प्रपंचकी वी उपलब्धि होती औ स्वरूपसें
रूपतें प्रपंचकी उपलब्धि होवे नहीं यातें पारमार्थिकत्वविशिष्ट प्रपंचका अभाव है इसरीतिसें
है और वी अनेक अभावनका ज्ञान जिज्ञासूकूं इष्ट है ताका हेतु अनुपलब्धि प्रमाण है
विरचिते वृत्तिप्रभाकरे अनुपलब्धिनिरूपणं नाम षष्टः प्रकाशः समाप्तः॥ श्रीकृष्णार्प

CC ... var Collection. Digitized